इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

" यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति "।।

दावा

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

वर्ष- 43 | अंक -327 | राजनांदगांव, शुक्रवार 18 अक्टूबर 2024 | पृष्ठ - 8 | मूल्य - 4.00 रुपए

शुक्ला मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल
▪ डायलिसिस सुविधा उपलब्ध
▪ प्रोस्टेट एवं पथरी का इलाज दूरबिन पद्धति द्वारा
▪ आयुष्मान कार्ड द्वारा निः शुल्क ईलाज
बसंतपुर, राजनांदगांव (छ.ग.) मो.नं.- 9301033013

दूसरी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने नायब सिंह सैनी, अनिल विज समेत 13 विधायकों ने ली मंत्री पद की शपथ

पंचकूला। हरियाणा में लगातार तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बन गई है। नायब सिंह सैनी ने गुरुवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में दूसरी बार शपथ ली। उन्हें राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

उन्होंने कुरुक्षेत्र की लाडवा सीट से कांग्रेस के मेवा सिंह को मात देकर चुनाव जीता था। नायब सिंह सैनी के अलावा अनिल विज ने मंत्री पद की शपथ ली है। अनिल विज अंबाला कैंट से विधायक हैं। इसके अलावा भाजपा विधायक कृष्ण लाल पंवार, राव नरबीर सिंह, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल ने भी मंत्री पद की शपथ ली। सोनीपत सीट की गोहाना सीट से विधायक अरविंद कुमार शर्मा को भी नायब सिंह सैनी मंत्रिमंडल में जगह दी गई है। भाजपा विधायक श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा, कृष्ण कुमार बेदी, श्रुति चौधरी और आरती सिंह राव ने मंत्री पद की शपथ ली। नायब सिंह सैनी ने शपथ लेने से पहले पंचकूला स्थित माता मनसा देवी मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना कर मां का आशीर्वाद लिया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, आज शपथ ग्रहण समारोह से पूर्व पंचकूला स्थित माता मनसा देवी मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना कर मां का आशीर्वाद प्राप्त किया और प्रदेश के अपने समस्त परिवार जनों की खुशहाली के लिए कामना की। मां का आशीर्वाद मुझे निरंतर सेवा और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

पंचकूला के सेक्टर 5 स्थित दशहरा मैदान में हुए नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल और अन्य सीएम, डिप्टी सीएम, केंद्रीय मंत्री और एनडीए के तमाम नेता मौजूद हैं। हरियाणा में 5 अक्टूबर को एक चरण में विधानसभा चुनाव हुए थे, जिसमें भाजपा ने 90 में से 48 सीटों पर जीत हासिल की थी, वहीं कांग्रेस ने 37 सीट पर जीत दर्ज की थी।

आज होगी पहली कैबिनेट बैठक, विभागों का होगा वितरण

चंडीगढ़। चंडीगढ़ से बड़ी खबर आ रही है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में शुक्रवार को पहली कैबिनेट बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक को सरकार के कामकाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इसमें कई अहम फैसलों पर विचार किया जाएगा। माना जा रहा है कि सरकार की प्राथमिकताएँ तय करने के साथ ही हरियाणा विधानसभा के आगामी सत्र की तारीख का भी ऐलान इसी बैठक में किया जा सकता है। बैठक से पहले कैबिनेट मंत्रियों को उनके विभागों का वितरण किया जाएगा, जिससे हर मंत्री को उनकी जिम्मेदारी और कार्यक्षेत्र स्पष्ट हो सके।

'याह्या सिनवार मर चुका है...', इस्राइल के पीएम नेतन्याहू ने हमास प्रमुख की मौत की पुष्टि की

तेल अवीव। गाजा में इस्राइल रक्षा बल (आईडीएफ) ने एक अभियान के दौरान हमास के तीन लड़ाके मार गिराने का दावा किया है। आईडीएफ और इस्राइल सिक्योरिटी एजेंसी (आईएसए) शुरुआत में यह जांच कर रहे थे कि क्या इनमें से याह्या सिनवार भी है या नहीं। बाद में आडीएफ ने पुष्टि की कि सिनवार मारा गया है। आईडीएफ के मुताबिक, जहां इन लड़ाकों को मारा गया है, उस इमारत में किसी भी बंधक की मौजूदगी के संकेत नहीं मिले। क्षेत्र में अभियान चला रही सेना सतर्कता के साथ काम कर रही है। वहीं, इस्राइली विदेश मंत्रालय और प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी सिनवार के मारे जाने की पुष्टि की है।

यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है, जब कुछ हफ्ते पहले इस्राइल ने लेबनान में हवाई हमलों के जरिए हिजबुल्ला प्रमुख हसन नसरल्लाह को मार गिराया है। इससे पहले हमास की राजनीतिक शाखा के प्रमुख इस्माइल हानिया की ईरान में एक हमले में हत्या कर दी थी। तेहरान और हमास ने इस हमले के लिए इस्राइल को दोषी ठहराया था। हालांकि, इस्राइल ने इस आरोप को न तो स्वीकार किया और न ही इनकार किया। हानिया की हत्या के बाद सिनवार को हमास की राजनीतिक शाखा का प्रमुख बनाया गया। सिनवार को इस्राइल पर सात अक्तूबर के हमलों का मास्टरमाइंड माना जाना जाता है। हाल ही में आईडीएफ ने हमास के कई शीर्ष अधिकारियों को मार गिराया है, जिसमें गाजा में हमास सरकार के प्रमुख रावी मुश्ताहा और हमास के राजनीतिक कार्यालय में सुरक्षा विभाग के प्रमुख समह अल-सिराज शामिल हैं। मंगलवार को आईडीएफ ने बताया कि पिछले तीन दिन में जबालिया में हवाई हमलों में हमास के करीब 20 ऑपरेटर मारे गए। आईडीएफ ने जंग के बीच एक हथियारों के डिपो और अन्य हथियारों को भी नष्ट किया।

आईडीएफ का कहना है कि यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब क्षेत्र में आतंकवादी समूहों के बुनियादी ढांचे को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया जाता। सोमवार को आईडीएफ ने उत्तरी गाजा के हनून, जबालिया और बीतलहिया में फलस्तीनियों को (शेष पृष्ठ 6 पर...)

लॉरेंस बिश्नोई गिरोह पर हमारे कहने के बाद भी कनाडा ने नहीं की कार्रवाई... भारत की दो-टूक

नई दिल्ली। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कनाड़ा सरकार को एक बार फिर से घेरा है। विदेश मंत्रालय ने गुरुवार (17 अक्टूबर) को कहा कि भारत ने कनाडा से उसकी जमीन में रहने वाले लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के सदस्यों को गिरफ्तार करने का अनुरोध किया था, लेकिन कनाडा की सरकार ने दिल्ली के आग्रह को नहीं माना। साथ ही विदेश मंत्रालय ने कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो द्वारा लगाए आरोपों को खारिज कर दिया है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, हमने लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के लोगों की गिरफ्तारी के लिए कनाडाई सरकार से अनुरोध किया था। लेकिन उन्होंने हमारी मूल चिंताओं पर कोई कार्रवाई नहीं की। इसके पीछे एक राजनीतिक मकसद भी है।

जस्टिन ट्रूड़ो ने ठोस सुबूत न होने की कुबूली

जस्टिन ट्रूड़ो ने खालिस्तानी और अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंटों की संलिप्तता का आरोप लगाया था। इस पर ट्रूड़ो ने साफ किया कि उनके पास मामले से जुड़ा कोई ठोस सुबूत नहीं है। उन्होंने केवल खुफिया जानकारी के आधार पर यह आरोप लगाया था। विदेश मंत्रालय ने कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर भारत पर गंभीर आरोप लगाए थे, लेकिन वो कोई ठोस सुबूत पेश नहीं कर पाए। हालांकि बाद में उन्होंने यह बात भी मान ली कि उनके पास मामले से जुड़े कोई ठोस सुबूत नही हैं। कनाडा ने पिछले सप्ताह नई दिल्ली से कहा था कि उसके वरिष्ठ राजनयिक निज्जर हत्या मामले में रुचि रखने वाले व्यक्ति भारत से जुड़े थे। इसके जवाब में नई दिल्ली ने कनाडा से अपने राजनयिकों को वापस बुला लिया था और कनाडाई अधिकारियों को भारत से निष्कासित कर दिया था। इसके बाद 16 अक्टूबर को कनाडाई पीएम ने स्वीकार किया (शेष पृष्ठ 6 पर...)

राईस मिलर्स पर एक्शन : कलेक्टर ने 31 मिलों की बैंक गांरटी जब्त करने के दिए निर्देश, एक हप्ते का दिया समय

कवर्धा (दावा)। कलेक्टर गोपाल वर्मा ने नान और एफसीआई में लक्ष्य के अनुरूप कम चावल जमा करने पर कड़ी नराजगी जताई है। कस्टम मिलिंग का चांवल जमा करने में देरी को लेकर 31 राइस मिलर्स की बैंक गांरटी जब्त और ब्लैक लिस्टेड करने के करने के निर्देश दिए है। इसके अलावा उन्होंने बचे हुए चावल को 1 हप्ते के भीतर जमा करने के सख्त निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर ने ली अधिकारियों की बैठक

कलेक्टर गोपाल वर्मा ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में खाद्य विभाग के अधिकारियों की बैठक लेकर खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 के अंतर्गत कस्टम मिलिंग के लिए धान का उठाव और नान तथा एफसीआई में चावल जमा करने के संबंध में गहन समीक्षा की। कलेक्टर ने अब तक जिले में धान के उठाव के अनुपात में लक्ष्य के अनुरूप नान और एफसीआई में जमा किए चावल की विस्तृत जानकारी ली। कलेक्टर ने लक्ष्य के अनुरूप कम चावल जमा करने पर कड़ी नराजगी जाहिर की और 31 राईस मिलर्स को कारण बताओ नोटिस जारी करने तथा चावल जमा नहीं करने पर बैंक गारंटी राजसात करने के साथ राईस मिल को ब्लैक लिस्टेड करने के निर्देश दिए।

हप्ते में जमा करने के दिए निर्देश

कलेक्टर श्री वर्मा ने जिले में नागरिक आपूर्ति निगम में शेष चावल को 1 सप्ताह के भीतर जमा करने के लिए समस्त राइस मिलर्स को निर्देशित किया। बैठक में बताया गया कि 31 राइस मिलर्स द्वारा 52 हजार 148 मी. टन चावल जमा करने का लक्ष्य है। इनके द्वारा 36 हजार 97 मी. टन चांवल जमा किया गया है। 16 हजार 50 मी. टन चावल जमा करना शेष है।

अधिकारियों को दिए गए सख्त निर्देश

कलेक्टर गोपाल वर्मा ने कहा कि, जिले में धान का उठाव हो चुका है, लेकिन चावल जमा करने की प्रक्रिया में तेजी लाने की आवश्यकता है। उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि, समय सीमा के भीतर सभी राइस मिलर्स से चावल जमा कराएं और इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कलेक्टर ने यह भी कहा कि, यदि तय समय सीमा में चावल जमा नहीं होता है, नियामानुसार सख्ती बरती जाएगी और जिले की खाद्य आपूर्ति व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे।

प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दिए निर्देश

उन्होंने आगे कहा कि जिले में चावल जमा करने की प्रक्रिया में देरी से सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव (शेष पृष्ठ 6 पर...)

निलंबित आईएएस रानू साहू 5 दिन के लिए ईडी की रिमांड पर, कोर्ट में छलक पड़े आंसू

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ में ईडी ने निलंबित आईएएस रानू साहू को छत्तीसगढ़ डीएमएफ घोटाला केस में गिरफ्तार किया है। ईडी को कोर्ट ने 5 दिन का समय दिया है। एजेंसी अब हर दिन 7 घंटे पूछताछ कर सकेगी। कोर्ट में सुनवाई के दौरान रानू साहू के आँसू छलक पडे। इस दौरान आंसू पोछते हुए उसने कहा कि, मैं स्ट्रॉंग हूं और मुझे प्रताड़ित करने के लिए ऐसा किया जा रहा है।

सुनवाई के दौरान रो पड़ी रानू साहू

रानू साहू को रायपुर की पीएमएलए स्पेशल कोर्ट में पेश किया गया। जहां सुनवाई के दौरान उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। उन्होंने कोर्ट में कहा कि, प्रताड़ित करने के लिए ऐसा किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि, कोल मामले में मुझे सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल चुकी है। उसके बाद भी एक के बाद एक केस लगाए जा रहे हैं। एक साथ सारा केस लगा दीजिए। रानू साहू ने आगे कहा कि, जेल में रहते 16 महीने हो चुके हैं। एक-दो साल और रह सकती हूं। उसने आरोप लगाया कि, मेरा हेल्थ चेकअप नहीं किया जाता है। मुझे स्वास्थ्य सुविधाएं मिलनी चाहिए, लेकिन नहीं दी जा रही हैं। इसके अलावा मुझे सोनोग्राफी और अन्य चैकअप करवाना है, लेकिन कई महीनों से यह नहीं हो पा रहा है।

वकील ने साजिश के तहत प्रताड़ित करने का लगाया आरोप

वहीं रानू साहू के वकील फैसल रिजवी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से केस की पैरवी करते हुए कोर्ट को बताया कि, ईडी की ओर से डीएमएफ मामले 2023 में ईसीआईआर दर्ज कर ली गई थी, (शेष पृष्ठ 6 पर...)

डीएमएफ घोटाले में पहली गिरफ्तारी, सहायक आयुक्त माया वारियर सात दिन की ईडी रिमांड पर

रायपुर। डीएमएफ (जिला खनिज फाउंडेशन) घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पहली गिरफ्तारी माया वारियर की है। माया को ईडी की विशेष कोर्ट में पेश किया गया, जहां से कोर्ट ने सात दिन यानी 23 अक्टूबर तक उन्हें ईडी की कस्टोडियल रिमांड पर भेज दिया है। माया कोरबा में आदिवासी विकास विभाग की सहायक (शेष पृष्ठ 6 पर...)

चीफ़ मिनिस्टर्स कॉन्क्लेव : एनडीए शासित राज्यों में आपसी समन्वय पर हुई चर्चा, सीएम साय भी हुए शामिल

रायपुर। एनडीए शासित राज्यों के सीएम और उपमुख्यमंत्रियों की विशेष बैठक, 'चीफ़ मिनिस्टर कॉन्क्लेव', आज चंडीगढ़ में आयोजित की गई। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय भी शामिल हुए। लंबे अंतराल के बाद आयोजित इस कॉन्क्लेव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरे समय उपस्थित रहे और बैठक का नेतृत्व किया।

एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ प्रधानमंत्री मोदी

इस बैठक में भाजपा के 13 मुख्यमंत्री और 16 उपमुख्यमंत्री तथा महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार, सिक्किम, नागालैंड और मेघालय के एनडीए सहयोगी दलों के मुख्यमंत्री भी मौजूद रहे। एनडीए के इस प्रमुख सम्मेलन का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास, राज्यों के बीच समन्वय और सामूहिक समस्याओं के समाधान के लिए साझा प्रयासों पर चर्चा करना था।

पीएम मोदी सहित कई बड़े नेता रहे मौजूद

सम्मेलन की शुरुआत हरियाणा के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण के तुरंत बाद हुई। बैठक में प्रधानमंत्री के साथ भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और नागालैंड के मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो भी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सीएम साय ने अपने विचार किये व्यक्त

सीएम की इस विशेष बैठक में राष्ट्रीय विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। 'संविधान का अमृत महोत्सव' और लोकतंत्र की हत्या के प्रयास की 50वीं (शेष पृष्ठ 6 पर...)

समीक्षा बैठक : जनसंपर्क सचिव पी. दयानंद बोले- योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में विभाग की बड़ी भूमिका

रायपुर। जनसंपर्क विभाग के सचिव पी. दयानंद ने कहा है कि, राज्य सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने में जनसंपर्क अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने जनसंपर्क अधिकारियों को राज्य सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा लोगों की भलाई के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही है।

पिछले 10 माह में राज्य सरकार ने किसानों, युवाओं, महिलाओं और गरीबों के लिए अनेक फ्लैगशिप योजनाएं शुरू की हैं, जिससे लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। उन्होंने शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल व सोशल मीडिया के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। वे आज नवा रायपुर स्थित छत्तीसगढ़ संवाद भवन में विभागीय काम-काज की समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ाएं

सचिव पी. दयानंद ने कहा कि, लोगों तक योजनाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर सूचना क्रांति का है ऐसे में सोशल मीडिया का महत्व बढ़ते जा रहा है। जनसंपर्क अधिकरियों को सोशल मीडिया प्लेटफार्म का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी समाचार माध्यमों को त्वरित रूप से समाचार उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

समाचारों की शैली सरल और आकर्षक हो

सचिव पी दयानंद ने कहा कि, समाचार की भाषा शैली सरल, आकर्षक और पठनीय होनी चाहिए। सफलता की कहानी में किसी व्यक्ति के जीवन आए बदलाव के बारे में तथ्यपरक जानकारी और सुसंगत फोटोग्राफ का उपयोग किया जाए। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

दुनिया को युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में मिलेगा समाधान- मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि पूरे विश्व को महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं ग्रहण कर शांति की राह पर चलना चाहिए, क्योंकि दुनिया को युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में समाधान मिल सकता है। श्री मोदी ने दिल्ली के विज्ञान भवन में अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देने के लिए आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसे समय में जब दुनिया अस्थिरता से ग्रस्त है, बुद्ध न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि एक जरूरत भी हैं।

उन्होंने कहा, मैं आज अभिधम्म पर्व पर पूरे विश्व का आवाहन करता हूं- बुद्ध से सीखिए...युद्ध को दूर करिए...शांति का पथ प्रशस्त करिए...क्योंकि, बुद्ध कहते हैं- नत्थि-संति-परम-सुखं अर्थात, शांति से बडा कोई सुख नहीं है। उन्होंने कहा, नही वेरेन वैरानि सम्मन्तीध कुदाचनम, अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्ततो अर्थात वैर से वैर, दुश्मनी से दुश्मनी शांत नहीं होती। वैर अवैर से, मानवीय उदारता से खत्म होता है। बुद्ध कहते हैं- 'भवतु-सब्ब-मंगलम'।। यानी, सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो- यही बुद्ध का संदेश है, यही मानवता का पथ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर देश अपनी विरासत को अपनी पहचान से जोड़ता है, लेकिन भारत इस मामले में बहुत पीछे रह गया है। उन्होंने कहा कि आजादी से पहले आक्रमणकारियों ने भारत की पहचान को मिटाने की कोशिश की। बाद में गुलाम मानसिकता से ग्रसित लोगों ने ऐसा किया। आजादी के बाद एक ऐसे समूह ने देश पर कब्जा कर लिया, जो इसे अपनी विरासत की विपरीत दिशा में ले गया।

उन्होंने कहा कि पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देना भगवान बुद्ध की महान विरासत का सम्मान है। भाषा सभ्यता और संस्कृति की आत्मा है। पाली भाषा को जिंदा रखना, भगवान बुद्ध के शब्दों को जिंदा रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा, अभिधम्म दिवस हमें याद दिलाता है कि करुणा और सद्भावना से ही हम दुनिया को और बेहतर बना सकते हैं। इससे पहले 2021 में कुशीनगर में ऐसा ही आयोजन हुआ था। वहां उस आयोजन में भी मुझे शामिल होने का सौभाग्य मिला था और ये मेरा सौभाग्य है कि भगवान बुद्ध के साथ जुडाव की जो यात्रा मेरे जन्म के साथ ही शुरू हुई है, वो अनवरत जारी है। मेरा जन्म गुजरात के उस वडनगर में हुआ, जो एक समय बौद्ध धर्म का महान केंद्र हुआ करता था। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

संतों के सानिध्य में महापौर ने किया आचार्य विद्यासागर चौक का लोकार्पण

प्रवेश द्वार के ऊपर राष्ट्रसंत जैनाचार्य विघासागर की मूर्ति लगाने की महापौर हेमा देशमुख ने मौके पर घोषणा

0 समारोह स्थल पर 21000 हजार लड्डूओं का जनमानस में वितरित कर मनाई गई खुशियां
0 आज से पुराने गंज चौक हुआ नाम जैनाचार्य श्री विद्यासागर चौक

राजनांदगांव (दावा)। आज दिनांक 17 अक्टूबर, दिन गुरुवार को गंज चौक का नामकरण पश्चात चौक में पट्टिका लगाकर चौक में जैन आचार्य विद्यासागर चौक का लोकार्पण समारोह पूरे हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए जैन समाज के सूर्यकांत जैन ने बताया कि, आज का यह दिन पूरे जैन समाज के लिए गौरव का दिन है, क्योंकि आज शरद पूर्णिमा के दिन ही समाधि सम्राट आचार्य विद्यासागर महाराज का एवं नव आचार्य 108 श्री समय सागर महाराज का अवतरण दिवस है और आज ही के दिन उनके नाम से चौक का नामकरण कर लोकार्पण कार्य संपन्न हुआ।

उक्त गरिमामय कार्यक्रम आचार्य श्री के श्रेष्ठ शिष्य मुनि आगम सागर महाराज, मुनि पुनीत सागर महाराज, ऐलक धैर्य सागर महाराज के सानिध्य में शहर की प्रथम नागरिक महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख के मुख्य आतिथ्य एवं समाज के वरिष्ठ पूर्व कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त खूबचंद पारख, नेता प्रतिपक्ष नगर निगम किशुन यदु, नगर निगम चेयरमैन अमीन हुड्डा, शिव वर्मा, वार्ड पार्षद राजेश जैन रानू, पार्षद मधु बेद, जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष पीसी जैन, सकल जैन समाज के अध्यक्ष मनोज वेद, वरिष्ठ डीसी जैन, चंद्रकांत जैन, मामराज अग्रवाल के आतिथ्य में संपन्न हुआ।

सूर्यकांत जैन ने बताया कि उक्त अवसर पर मुनि आगम सागर महाराज ने कहा कि आचार्य विद्यासागर महाराज का व्यक्तित्व करुणा इतनी विशाल थी कि वह सिर्फ जैन समुदाय के संत नहीं पूरे मानव समाज के संत हुए, उनकी करुणा प्रेम इतना विशाल था कि किसी भी संप्रदाय का व्यक्ति चाहे सिख, मुस्लिम या हिंदू सभी लोग उनके दर्शन के लिए आते थे और आचार्य श्री सभी को आशीर्वाद देते थे, उनका प्रभाव इतना था कि जो भी उनके दर्शन करता उनके कष्ट दूर होते थे, ऐसे अतिशयकारी आचार्य भगवन ने अपने जीवन में इंडिया नहीं भारत बोलो कि अलख जगाई एवं स्वदेशी अपनाने के लिए हथकरघा जैसे रोजगार के अवसर के मार्ग को प्रशस्त किया। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाते हुए प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ की स्थापना की, वहीं उनके आशीर्वाद से पूरे भारतवर्ष में लगभग 100 गौशालाएं संचालित की जा रही है, जिसमें लगभग 100000 से अधिक गोवंश का संवर्धन एवं रक्षा की जाती है। मुनि श्री ने कहा कि जो अहिंसा द्वारा बनने वाला है उसमें आचार्य श्री की प्रतिमा लगाई जानी चाहिए, जिससे कि इस द्वार से निकलने वाले सभी को उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। उक्त अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महापौर हेमा देशमुख ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि उक्त पुनीत कार्य मुझे अपने कार्यकाल में करने का अवसर मिला और मैं अपनी महापौर निधि का सदुपयोग इस पुण्य कार्य में लगा सकी। उन्होंने उपस्थित जैन समुदाय सहित शहरवासियों को आचार्य विद्यासागर चौक की बधाई दी। तत्पश्चात सभी अतिथियों को सचिव रविकांत जैन, अनिल बडकुल, अखिलेश जैन, सुभाष जैन एवं समाज के पदाधिकारी द्वारा लोकार्पण स्थल ले जाकर विधिवत रूप से लोकार्पण पट्टीका का अनावरण कराया गया। सूर्यकांत जैन ने बताया कि इसके पश्चात जैन आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की अवतरण दिवस पर जैन समाज द्वारा 21000 लड्डुओं का वितरण शहर के विभिन्न स्थानों में जाकर एवं विद्यासागर चौक में किया गया एवं पोहा वितरण किया गया। इस तरह जैन समाज ने अपने आचार्य भगवान के जन्मदिन की खुशियां मनाई। इसके पश्चात दिगंबर जैन धर्मशाला में आचार्य श्री के जन्मोत्सव के अवसर पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें फानेंद्र जैन, नमन कमलेश जैन, यश जैन, बृजेश जैन, शिरीष जैन, अभिषेक जैन, अमित जैन विशेष रूप से सक्रिय रहे।

उक्त अवसर पर मुख्य रूप से समाज के अनिल जैन, नरेश जैन, पूनम जैन, ललित जैन, अखिलेश जैन, अनीश जैन, संजय जैन, अतुल जैन, शरद खंडेलवाल, महेश अग्रवाल, बंटी गुप्ता, संजू गएघने, प्रफुल्ल जैन, राजेश खन्ना, मनोज जैन, शरद जैन, नरेंद्र जैन, मीनू जैन, विजय जैन, ज्ञानु, बलराज रचित जैन, मनीष जैन, ओम कांकरिया, प्रकाश बाफना, अशोक सुराना, शरद खंडेलवाल, सौरभ खंडेलवाल, राहुल जैन, पंकज जैन, निक्की जैन सहित बडी संख्या में जैन समाज के महिला पुरुष एवं गंज लाइन के व्यापारी साथी, बजरंग हमाल संघ के सभी साथी, बजरंग व्यायाम शाला के सभी साथी, उक्त गरिमामय कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी की गरिमामय उपस्थित के लिए आभार प्रदर्शन समाज के पूर्व अध्यक्ष पीसी जैन ने किया।

पहला कॉलम...

कैलाश धाम शांति नगर चिखली में जगराता किया गया

राजनांदगांव (दावा)। कैलाश धाम शांति नगर चिखली में शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में एकदिवसीय छत्तीसगढ़ी अंचल के सुप्रसिद्ध गायिका मिथिलेश्वरी सेन का जगराता प्रोग्राम का कार्यक्रम रखा गया था जिसमें वार्ड वासी एवं शहर एवं ग्रामीण अंचल से महिला एवं पुरुष जगराता देखने हजारों की संख्या में भीड़ रही जिसमें कैलाश धाम समिति के सदस्य भीड़ को काबू करने के लिए विशेष भूमिका निभाई और जिसमें पुलिस प्रशासन का भी बड़ा योगदान रहा आयोजित समिति के अध्यक्ष ललित नायडू एवं उपाध्यक्ष सुरेश डेकाटे और समिति के सभी सदस्य का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है यह जानकारी तुलाराम नंदनवार द्वारा दी गई है

12 नवम्बर को स्थानीय अवकाश

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल ने सामान्य पुस्तक परिपत्र में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए स्थानीय अवकाश 1 नवम्बर दीपावली का दूसरा दिन गोवर्धन पूजा के स्थान पर 12 नवम्बर दिन मंगलवार को तुलसी विवाह देवउठनी एकादशी व्रत के अवसर पर स्थानीय अवकाश घोषित किया है। यह अवकाश बैंक व कोषालय पर लागू नहीं होगा।

राजस्व अधिकारियों की बैठक 22 अक्टूबर को

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की बैठक 22 अक्टूबर को आयोजित की गई है। बैठक कलेक्टोरेट सभाकक्ष में दोपहर 2 बजे से शुरू होगी। बैठक में सभी संबंधितों को अनिवार्य रूप से उपस्थित होने कहा गया है।

जिले के 662 ग्राम पेयजल सुविधा युक्त हुए

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जिले के नागरिकों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता के लिए शासन द्वारा विशेष तौर पर कार्य किया जा रहा है।

जिले में 662 ग्राम जल प्रदाय सुविधा युक्त है। जिनमें से 380 ग्राम हैण्डपंप सुविधा युक्त, 282 ग्राम नलटेप वाटर सुविधा युक्त है। राजनांदगांव तहसील में 162, डोंगरगढ़ तहसील में 176, छुरिया तहसील में 216, डोंगरगांव तहसील में 108 ग्राम पेयजल सुविधा से युक्त है।

शहर के एसएलआरएम सेन्टरों के आर.आर.आर. सेन्टर में इस दीवाली अपने घरों का अनुपयोगी सामान दान करने महापौर एवं आयुक्त ने की अपील

राजनांदगांव (दावा)। शहरों में रिड्यूज, रियूज एवं रिसायकल (आर.आर.आर.) सेन्टर (उपयोगी सामग्री आदान-प्रदान केन्द्र) स्थापित करने भारत सरकार आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय नई दिल्ली तथा राज्य शहरी विकास अभिकरण छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार निगम आयुक्त अभिषेक गुप्ता के निर्देश पर निगम के मिशन क्लीन सिटी द्वारा शहर के एसएलआरएम सेन्टरों में आर.आर.आर. सेन्टर स्थापित किया गया हैं, जहॉ घर के अनुपयोगी सामग्री जैसे पुराने कपडे, किताबे, टेबल, कुर्सी जैसे अन्य सामग्री एकत्रित किया जाता है, जहॉ से लेकर जरूरतमद लोगों के द्वारा उपयोग किया जाता है। इस दीवाली अपने घरों के अनुपयोगी समान सेन्टर में दान करने आयुक्त श्री गुप्ता ने नागरिकों से अपील की है।

आर.आर.आर. सेन्टर के संबंध में महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख एवं आयुक्त श्री गुप्ता ने बताया कि शासन मंशानुरूप उपयोगी सामग्री आदान-प्रदान केन्द्र (आर.आर.आर. सेन्टर) शहर के एसएलआरएम सेन्टरों में प्रांरभ किया गया है, जहॉ पुराने कपडे, उपयोगी किताबे, टेबल, कुर्सी, साईकिल, झोला, काच के समान व क्राकरी, कम्बल, गद्दा, बैग, सूटकेस, खिलौना, कार्डबोर्ड पेपर, कूलर, फैन, होम एपलायसेस एवं बर्तन दान किये जाते है। इसका उद्देश्य मेरी लाईफ मेरा स्वच्छ शहर के नाम से शहर में आमजनों के बीच जागरूकता लाना है तथा उनसे उपरोक्त पुरानी सामग्रियों के अलावा अन्य चीजे दान कराना है। उन्होंने बताया कि एसएलआरएम सेन्टरों में इन सामग्रियों को पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण के लिये नवीनीकरण किया जाता है, ताकि इसका पुनः उपयोग किया जा सके और जरूरतमद लोगों दिया जा सके।

महापौर श्रीमती देशमुख एवं आयुक्त श्री गुप्ता ने नागरिकों से अपील की है कि इस दीवाली अपने घरों के उपरोक्त प्रकार की वस्तुए जो उनके लिये अनुपयोगी है अपने नजदीकि एसएलआरएम सेन्टरों में दान करे, ताकि उन वस्तुओं का स्वच्छता दीदीयों के द्वारा पुनः नवीनीकरण कर उपयोगी बनाया जा सके और उन वस्तुओं का जरूरतमद लोगों द्वारा उपयोग किया जा सके।

कस्टम मिलिंग चावल जमा में विलंब करने पर 3 मिलर्स पर की गई कार्रवाई

6800 क्विंटल धान एवं 2750 क्विंटल चावल जप्त कर प्रकरण दर्ज किया गया

राजनांदगांव (दावा)। शासन के निर्देशानुसार खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में कस्टम मिलिंग अंतर्गत चावल जमा करने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर निर्धारित की गई है। जिले में अब तक एफसीआई में 99842 मिट्रिक टन चावल तथा नागरिक आपूर्ति निगम में कुल 16067 मिट्रिक टन अरवा चावल जमा किया जाना शेष है। जिले में अब तक लगभग 76 प्रतिशत कस्टम मिलिंग कार्य पूर्ण हो चुका है।

कलेक्टर संजय अग्रवाल ने जिले के सभी राईस मिलर्स को कस्टम मिलिंग अंतर्गत भारतीय खाद्य निगम एवं नागरिक आपूर्ति निगम में चावल जमा के कार्य में प्रगति लाने तथा शेष 24 प्रतिशत चावल जमा कराने के लिए खाद्य विभाग के अधिकारी को सभी राईस मिल का निरीक्षण करने के निर्देश दिए हैं।

खाद्य अधिकारी रविन्द्र सोनी ने बताया कि जिले के राईस मिलों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण में तीन राईस मिलों की जांच एवं भौतिक सत्यापन में धान व चावल की कमी पाई गई। कार्रवाई में माँ परमेश्वरी राईस मिल चारभाठा डोंगरगढ़ से 800 क्विंटल धान एवं 1000 क्विंटल चावल, श्री श्याम इंडस्ट्रीज महराजपुर छुरिया से 500 क्विंटल धान एवं 1450 क्विंटल चावल तथा मेसर्स एमजे फूड प्रोडक्ट डोंगरगढ़ से 4000 क्विंटल धान एवं 1800 क्विंटल चावल कुल 6800 क्विंटल धान एवं 2750 क्विंटल चावल जप्त कर प्रकरण दर्ज किया गया और संबंधित राईस मिलर्स को नोटिस जारी कर प्रकरण न्यायालय कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

शासन के एक स्टेशन एक उत्पाद योजना से स्व-सहायता समूह के महिलाओं की बदली जिंदगी

स्थानीय स्तर पर महिलाओं के हुनर को बढ़ावा देने की इस पहल से महिलाएं हो रही आर्थिक रूप से सशक्त हैण्डलूम कपड़ों से बैग का एक नया पैटर्न बिलासा किया ईजाद

राजनांदगांव (दावा)। जिले के रेल्वे स्टेशन में स्थापित शासन के एक स्टेशन एक उत्पाद योजना से स्वसहायता समूह की महिलाओं की जिंदगी बदल रही है। स्थानीय स्तर पर महिलाओं के हुनर को बढ़ावा देने की इस पहल से महिलाएं आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त हो रही हैं।

स्थानीय स्तर पर रूचि महिला मंडल की महिलाएं कॉटन क्लाथ से स्थानीय स्तर पर अच्छी गुणवत्ता के हैण्ड बैग बना रही हैं। स्टेशन में ऐसे बैग की बहुत डिमांड है। यहां लगभग 45 से अधिक वेरायटी है। यहां बाटल कव्हर, टिफिन बैग, मोबाईल कव्हर, पोटली, मार्केट बैग, फैंसी पर्स, पिठ्ठू बैग, स्लाईन बैग, पाऊच बैग, साड़ी कव्हर बनाए गए हैं तथा हैण्डलूम कपड़ों से बैग का एक नया पैटर्न बिलासा ईजाद किया गया है। सभी बैग इको फ्रेंडली है। फोल्डिंग बैग, स्ट्रिंग बैग की बहुत सी श्रृंखला है। एक स्टेशन एक उत्पाद की संचालक श्रीमती तीजन बाई साहू ने बताया कि यहां के उत्पादों की लगातार बिक्री हो रही है और स्टेशन में आने वाले यात्री इसकी खरीदारी कर रही है। रूचि महिला मंडल की मैनेजिंग डायरेक्टर सुश्री रचना शर्मा ने बताया कि रूचि महिला मंडल में 50 महिला सदस्य हैं। प्रतिदिन लगभग एक हजार रूपए के उत्पादों की बिक्री हो जाती है।

बैग को उनकी वेरायटी के अनुसार नंबर एवं नाम भी दिए गए हैं। खुबसूरत कढ़ाई एवं रंग-बिरंगे डिजाइन के कारण ये बैग लोकप्रिय हो रहे हैं। स्टेशन में आने-जाने वाले यात्री प्रतिदिन बैग की खरीदारी करते हैं। चेन्नई के श्री धर्मेन्द्र ने दो पर्स खरीदा। वही जामनगर की महिलाओं ने तथा रेणु साहू ने भी बैग खरीदा। महिला शक्तिकरण की दिशा में महिलाओं द्वारा निर्मित स्वदेशी उत्पाद अच्छी गुणवत्ता के हैं। कॉटन क्लॉथ का उपयोग से बने यह प्रोडक्ट वॉशेबल है और नागरिकों के वाजिब दाम में मिल रहे हैं।

गुजराती स्कूल के छात्र-छात्राओं ने वेस्ट पेपर से सजावट सिखा

राजनांदगांव (दावा)। राजस्थान से आए पेपर क्राफ्ट एक्सपर्ट ने गुजराती राष्ट्रीय उ.मा. स्कूल के बच्चों को असेंबली के दौरान कैसे क्राफ्ट पेपर और वेस्ट न्यूज पेपर से तीस अलग-अलग प्रकार के सजावटी सामान और फूलों को बनाने का सरल तरीका भी सिखाया। साथ ही बच्चों ने स्टेज पर उसे खुद बनाकर भी देखा व सभी बच्चों को दिखाया कि ये बनाना कितना आसान है। उक्त क्राफ्ट प्रदर्शन के वक्त वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती अपर्णा श्रीवास्तव के नेतृत्व में सभी शिक्षकगण उपस्थित थे। उक्त जानकारी शाला के एडमिनिस्ट्रेटर तारिक लालानी ने दी।

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, डोंगरगढ़ संभाग

-:: विद्युत बंद की सूचना ::-

समस्त सम्मानीय उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि आगामी दीपावली पर्व 2024 को ध्यान में रखते हुए डोंगरगढ़ संभागीय कार्यालय के अंतर्गत आने वाले 33 एवं 11 के.व्ही. फीडरों का ट्री कटिंग एवं मेंटनेंस कार्य किया जाना प्रस्तावित है। लाईन मेंटनेंस का समय सुबह 10.00 बजे से शाम 04.00 बजे तक है। विद्युत सप्लाई उल्लेखित समय तक बाधित रहेगी। आवश्यकतानुसार समयावधि घटाई-बढ़ाई जा सकती है। असुविधा के लिए खेद है।

क्रं.	दिनांक	दिन	फीडर का नाम	सबस्टेशन का नाम	प्रभावित क्षेत्र का नाम
1	19.10.2024	शनिवार	11 के.व्ही. टाउन फीडर	33/11 के.व्ही. एल.बी. नगर उपकेन्द्र	ग्राम-11 के.व्ही. टाउन फीडर से संबंधित समस्त वार्ड
2	19.10.2024	शनिवार	11 के.व्ही. चिरचारी फीडर	33/11 के.व्ही. सड़क चिरचारी उपकेन्द्र	एक ग्राम-11 के.व्ही. चिरचारी फीडर से संबंधित समस्त ग्राम
3	19.10.2024	शनिवार	33 के.व्ही. ढारा ठेलकाडीह	33/11 के.व्ही. ढारा	ढारा एवं इस फीडर से संबंधित समस्त ग्राम
4	21.10.2024	सोमवार	11 के.व्ही. मोहारा	33/11 के.व्ही. ढारा	गातापारकला, सिरसाही, चारभाटा कोटरीछापर एवं इस फीडर से संबंधित समस्त ग्राम
5	21.10.2024	सोमवार	11 के.व्ही. बम्हनी फीडर	33/11 के.व्ही. छुरिया उपकेन्द्र	11 के.व्ही. बम्हनी फीडर से संबंधित समस्त ग्राम
6	21.10.2024	सोमवार	11 के.व्ही.मड़ियान फीडर	33/11 के.व्ही. एल.बी. नगर उपकेन्द्र	ग्राम-11 के.व्ही. मड़ियान फीडर से संबंधित समस्त ग्राम
7	21.10.2024	सोमवार	11 के.व्ही. चिरचारी फीडर	33/11 के.व्ही. सड़क चिरचारी उपकेन्द	एल.बी. नगर सबस्टेशन से सड़क चिरचारी सबस्टेशन तक।

बिजली की बचत ही,
बिजली का उत्पादन है

कार्यपालन अभियंता (संचा./ संधा.) संभाग
छ.ग. स्टेट पॉ. डिस्ट्री.कं.लिमि. डोंगरगढ़

dts श्री कृष्णा (एयरकूल) में
तारिख 18 से रोजाना 4 खेलों में
बाल्कनी की एडवांस बुकिंग प्रारंभ है।
समय : 12,3, 6 व 9 बजे रात्रि
छत्तीसगढ़ी भाषा में
दस्तावेज
कलाकार - अनील सिन्हा, सुमन पटनायक आदि।

ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

paytm book my show
SILVER SCREEN MULTIPLEX
18th OCT to 24th OCT 2024
silver SCREEN

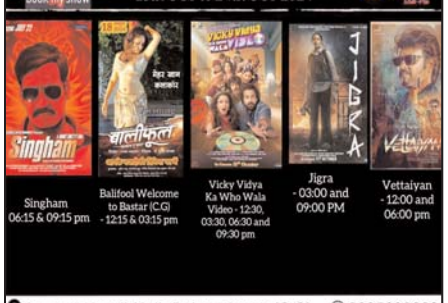

Singham 06:15 & 09:15 pm
Balifool Welcome to Bastar (C.G) - 12:15 & 03:15 pm
Vicky Vidya Ka Who Wala Video - 12:30, 03:30, 06:30 and 09:30 pm
Jigra - 03:00 and 09:00 PM
Vettaiyan - 12:00 and 06:00 pm
Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G) 8085600200

किराये से देना है
कंचनबाग में सर्वसुविधायुक्त दो मंजिला भवन आफिस के लिये किराये से देना है। 3 बेडरुम, किचन, 3 हाल अटैच लेटबाथ गार्डन सहित पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। किराये से देना है।
-: संपर्क करें :-
मो. 8319936007

शुभांक

अनुमानित

बी. के
2-8-0
159-5 139-3
राजधानी
3-6-9
460-0 489-1

चेतावनी:-इस पत्र में प्रकाशित सर्वत्र शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरुपयोग न करें। दुरुपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। -सम्पादक

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी, राजनांदगांव (छ.ग.)
राजस्व मामला क्रमांक
202410093700022 अ-6 वर्ष 2024-25

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक निर्मल कुमार शर्मा आ. स्व. विश्वनाथ शर्मा निवासी लक्ष्मी मंदिर के पास, हमाल पारा, वार्ड नं. 24 तहसील व जिला राजनांदगांव के द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत कर शहर राजनांदगांव के मोहल्ला दीवानपारा स्थित शीट क्रमांक 36 शी, भूखण्ड क्रमांक 174,175/2 क्षेत्रफल 53.00 वर्गमीटर, 87.00 व.मी. जो धारक सुशीला देवी पति वासुदेव शर्मा, निवासी- रामाधीन मार्ग, राजनांदगांव के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है, पर वसीयतनामा के आधार पर नामांतरण किये जाने हेतु इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है।

अतः उक्त भूमि/मकान/ संपत्ति के नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था जो इस भूखण्ड पर हित रखते है, पेशी तारीख 25.10.2024 को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकते है। बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 10/10/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से जारी किया गया।

नजूल अधिकारी
नजूल जांच, राजनांदगांव

कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग जिला- कबीरधाम

निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक 1496/मबावि/सा.वि./2023 कबीरधाम दिनांक 15/10/2024

महिला एवं बाल विकास विभाग जिला कबीरधाम छ.ग. के अंतर्गत मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत विवाहित जोड़ों को उपहार सामग्री आदि प्रदान करने हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निविदाएं आमंत्रित है। इस संबंध में 1000/- (एक हजार रूपये) का चालान द्वारा "शीर्ष- 0235 सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याण 02 विविध व्यय मद" में जमा कर उसे जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग कबीरधाम के कार्यालय में कार्यालयीन दिवसों/ समय पर प्रस्तुत कर निम्नानुसार निविदा शर्तें एवं निविदा प्रपत्र प्राप्त/ जमा किए जा सकते हैं-

निविदा प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि/ समय - 13.11.2024 सायं 05.00 बजे तक
निविदा प्रपत्र जमा करने अंतिम तिथि/ समय - 14.11.2024 दोपहर 02.00 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि/ समय - 14.11.2024 अपरान्ह 03.00 बजे तक

स्थान- कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग जिला कबीरधाम
(जिला स्तरीय क्रय समिति द्वारा अनुमोदित)

जिला कार्यक्रम अधिकारी
महिला एवं बाल विकास विभाग,
जिला- कबीरधाम

जी-242503264/3

न्यायालय नायब तहसीलदार एवं कार्यपालिक दण्डाधिकारी घुमका जिला राजनांदगांव
रा.मा.क्र. बी-121 वर्ष 2024-2025

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक तेजराम वर्मा आ. दीनाराम निवासी ग्राम बरबसपुर प.ह.नं. .... तहसील घुमका जिला राजनांदगांव अपने भाई मनोज कुमार जंघेल आ. दीनाराम के मृत्यु प्रमाण पत्र की मांग कि गई है उपरोक्त आवेदन पत्र इस न्यायालय में मृत्यु दिनांक 23/7/2018 को स्थान बरबसपुर पर होना बताया जाकर मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किये जाने हेतु प्रकरण विचाराधीन है। इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई दावा/ आपत्ति हो तो वे सुनवाई तिथि 30.10.2024 तक लिखित में स्वयं/ अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से पेश कर सकते है बाद में प्राप्त दावा/ आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार दिनांक 16.10.2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

जारी दिनांक 16.10.2024
सुनवाई दिनांक 30.10.2024

कार्यपालिक दण्डाधिकारी
घुमका
जिला राजनांदगांव

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी, राजनांदगांव (छ.ग.)

ईश्तहार

राजस्व मामला क्रमांक
202410093700021 अ-6 वर्ष 2024-25

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक समीर अहमद आ. शफी अहमद, निवासी-गुडाखू लाईन, राजनांदगाँव के द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत कर शहर राजनांदगाँव मोहल्ला गुड़ाखू लाईन स्थित शीट क्रमांक 47 बी. भूखण्ड क्रमाक 232/2, क्षेत्रफल 53.00 वर्गमीटर जो धारकगण मो. शफी, गुलाम मोहम्मद, शकील अहमद आ. स्व. नूरमोहम्मद, सुगराबाई, नजमा पुत्री स्व. नूर मोहम्मद, मो. अकील पिता स्व. फैज मोहम्मद, जरीना, रेहाना पुत्री स्व. फैज मोहम्मद, नसीम बानो ध.प स्व. मो. जमील निवासी हमालपारा, राजनांदगांव के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। भूखण्ड के सहधारकगण मो. शफी, गुलाम मोहम्मद दोनों आ. स्व. नूरमोहम्मद की मृत्यु होने से उनका नाम विलोपित कर उनके वारिसों का नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किये जाने एवं शेष सहधारकगण का नाम यथावत् रखे जाने हेतु इस न्यायालय में आवेदन पेश किया गया है।

अतः उक्त भूमि/मकान / संपत्ति के नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था जो इस भूखण्ड पर हित रखते है, पेशी तारीख **30.10.2024** को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति पेश कर सकते है। बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं होगी।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 15.10.2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से जारी किया गया।

नजूल अधिकारी
नजूल जांच, राजनांदगांव

रितेश सिंगाडे द्वारा निर्देशित नाटक 'सरबजीत' का 20 अक्टु. को मंचन

राजनांदगांव (दावा)। पंजाब की सौंधी मिटटी की खुशबु को छत्तीसगढ की धरा पर बिखेरने के लिये स्थानीय राजनांदगांव थियेटर ग्रुप के कलाकार नाटक सरबजीत का मंचन 20 अक्टूबर, दिन-रविवार को शाम 6:30 बजे पदमश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडीटोरियम गौरव पथ में करने जा रहे है।

यह नाटक सत्य घटना पर आधारित है जिसकी लेखिका उत्कर्षनी विशिष्ठा है तथा नाटय रूपांतरण व निर्देशन शहर के प्रसिद्ध रंगकर्मी रितेश सिंगाडे ने किया है। नाटक की अवधि 1 घंटा की है साथ ही इस नाटक में कुछ 15 पात्र है जो विभिन्न किरदारों में आपको नजर आयेंगे।

राजनांदगांव शहर के इतिहास में यह पहली बार होगा की पंजाबी और हिंदी के संवादों का मिश्रण नाटक सरबजीत में देखने मिलेगा। नाटक सरबजीत आगामी दिनों में केरल, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और असम जैसे प्रदेशों में राजनांदगांव कला संस्कृति की छवि छोडेगा।

नाटक सरबजीत के निर्देशक रितेश सिंगाडे ने बताया कि इसके पूर्व भी राजनांदगांव थियेटर ग्रुप के कलाकारों द्वारा 'जब मै सिर्फ औरत होती हूँ' नाटक का मंचन किया गया जिसे दुसरे राज्यों में भी प्रस्तुत कर कई पुरस्कार अर्जित किये है और दर्शकों की वाहवाही लुटी है।

नाटक सरबजीत एक मध्यमवर्गीय किसान की कहानी है जो दुर्भाग्य वश पाकिस्तान सीमा पार चला जाता है और वहा से शुरू होती प्रताडना और अमानवीय व्यवहारों का सिलसिला और राजनीतिक निरंकुशता । यह नाटक इंसानियत की मिशाल भी पेश करता है।

नाटक सरबजीत बेबस बहन के संघर्षों की कहानी है एक परिवार संघर्ष और अपमानों को सहता हुआ किस तरह से अपने आपको आज के राजनीतिक हालातों में कहा पाता है इस नाटक में दिखाया गया है।

नाटक सरबजीत में जहां दो देशों के सियासी खेल को दिखाया गया है वही यह नाटक इंसानियत पंसद लोगों को प्रदर्शित करता है।

एक कैदी के रूप बंद बेकसूर सरबजीत के 20 साल तक अपने परिवार से बिछडकर अकेले एक छोटे से कमरे में मानसिक और शारीरिक यातनाओं और भावनाओं के द्वंद को दिखाया गया है।

आप नाटक में देखेंगे की एक अकेले सरबजीत की जेल में मनोदशा व भावनाओं में किस तरह से वह अपने जीवन को जी रहा होता है। नाटक में संगीत भुषण चौधरी व सतीस सिन्हा ने दिया है और मंच सज्जा नागेश पठारी एवं रूप सज्जा तौसिफ कुरैशी किया गया है।

नाटक सरबजीत स्व. दीपक विराट प्रसिद्ध रंगकर्मी व स्व. सैयद शोएब अली रंगकर्मी व लेखक के स्मृति में किया जा रहा है । नाटक में प्रवेश पूर्णतः निःशुल्क है व यह नाटक आम जनता के लिये है।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मधुसूदन यादव पूर्व सासंद, कलेक्टर संजय अग्रवाल तथा पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग एवं आयुष जैन डी.एफ.ओ. एवं अभिषेक गुप्ता एस.डी.एम. राजनांदगांव एवं डॉ थॉमस अब्राहम एम.डी. क्रिश्चियन फेलोशिप हॉस्पिटल उपस्थित रहेंगे।

प्रीमियम भुगतान नहीं करने व अनुबंध नहीं कराने पर हाट बाजार की 2 दुकानें निगम ने की सील

राजनांदगांव (दावा)। नगर निगम द्वारा हाट बाजार में भूतल एवं प्रथम तल में व्यवसायिक परिसर का निर्माण किया गया है। निर्मित दुकानों को नियमानुसार नीलामी के माध्यम से आबंटित किया गया है। आबंटितों को प्रीमियम राशि का भुगतान करने नोटिस जारी किया गया, नोटिस उपरांत भूतल के 18 दुकानदारों ने प्रीमियम का भुगतान किया, तथा शेष 2 दुकानों में एक दुकानदार द्वारा प्रीमियम जमा नही करने व 1 दुकानदार द्वारा अनुबंध नही कराने पर निगम आयुक्त अभिषेक गुप्ता के निर्देश पर भूतल के क्रमशः दुकान क्रं. 14 व 20 को निगम द्वारा तालाबंदी कर सील करने की कार्यवाही की गयी।

प्रीमियम की राशि का भुगतान नही करने व अनुबंध नही कराने पर आयुक्त श्री गुप्ता के निर्देश पर राजस्व उप निरीक्षक रविन्द्र ठाकुर व राजकुमार बंजारे, राजस्व लिपिक प्रकाश साहू एवं निगम की टीम हाट बाजार के पास भूतल की दुकान क्रं. 14 जो बलराम सोनकर को आबंटित है इनके द्वारा बकाया प्रीमियम राशि 3.74 लाख रूपये जमा नही किया गया, इसी प्रकार दुकान क्रं. 20 जो हीरालाल साहू को आबंटित है जिन्होंने अनुबंध नही करा किराया जमा नही किया जिस पर कार्यवाही करते हुये उपरोक्त दोनों दुकान में तालाबंदी कर सील की गयी।

आयुक्त श्री गुप्ता ने बताया कि नगर निगम द्वारा हाट बाजार में भूतल एवं प्रथम तल में 20-20 दुकानों का निर्माण किया गया है, जिसकी नियमानुसार नीलामी की गयी। नीलामी उपरांत प्रीमियम राशि जमा कर अनुबंध कराने नोटिस दिया गया, नोटिस उपरांत भूतल के 18 दुकानदारों ने प्रीमियम की राशि जमा कर अनुबंध करा किराया दिया जा रहा है, किन्तु दुकान क्रं. 14 के दुकानदार बलराम सोनकर ने प्रीमियम की शेष राशि जमा नही किये, उसी प्रकार दुकान क्रं. 20 के दुकानदार हीरालाल साहू ने अनुबंध नहीं कराया, इस संबंध में उन्हें नोटिस जारी किया गया। नोटिस उपरांत इनके द्वारा निगम में सम्पर्क नहीं किया गया, जिस पर कार्यवाही करते हुये उपरोक्त दोनो दुकाने सील की गयी। आयुक्त श्री गुप्ता ने बताया कि दुकानों का प्रीमियम व किराया का भुगतान नहीं करने पर आगे भी दुकानों में सील करने की कार्यवाही की जावेंगी। उन्होंने दुकानदारों से कहा है कि आबंटित दुकानों का प्रीमियम जमा कर अनुबंध करावे, जिससे नियमानुसार किराया ली जा सके। अन्यथा की स्थिति में दुकाने सील की जावेगी।

हिंदी साहित्य परिषद ने डॉ.चंद्रकुमार जैन को दी श्रद्धांजलि

राजनांदगांव (दावा)। दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी साहित्य परिषद द्वारा डॉ चंद्रकुमार जैन को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर उनकी कविताओं का पाठकर उन्हें काव्यात्मक पुष्पांजलि अर्पित की गई और उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का उल्लेख किया गया।

इस आयोजन में हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापकों और स्नातकोत्तर हिंदी के विद्यार्थियों सहित आत्माराम कोशा ने डॉ जैन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। डॉ.शंकर मुनि राय ने उनकी कविता 'गीत खुशी के गा लेना' सहित अन्य कविताओं को पढ़कर उन्हें काव्यात्मक श्रद्धांजलि दी तो डॉ गायत्री साहू ने बताया कि वे दोनों एक ही साथ पीएचडी के लिए पंजीकृत हुए थे। उनकी सहयोगी स्वभाव और विद्वत्ता के लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे।

डॉ प्रवीण कुमार साहू ने उनकी अध्यापन और मंचीय कला का बखान करते हुए याद किया तो डॉ नीलम तिवारी ने उनके प्रभावी वक्तृत्व कला और ओजस्वी वाणी को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। डॉ.बीएन जागृत ने डॉ.चंद्रकुमार जैन के विनोदी स्वभाव और मेहनती स्वभाव को याद करते हुए कहा कि उन्होंने नौ विषयों में एम ए की डिग्री हासिल किया था और जैन मुनि विद्यासागर के मूक माटी ग्रंथ पर पीएचडी डिग्री प्राप्त की थी। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.शंकर मुनि राय ने कहा कि जैन साहब के निधन से हमारे हिन्दी विभाग सहित राजनांदगांव नगर और हिंदी साहित्य-परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। ईश्वर ने उन्हें बोलने की अद्भुत कला प्रदान की थी। हम सभी उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर सकते हैं। डॉ वीरेंद्र कुमार साहू, कौशिक बिशी और हिंदी साहित्य परिषद के सचिव मनीष टांडेकर ने जैन साहब के प्रभावशाली व्यक्तित्व को अनुकरणीय बताया।

जीपीएफ ऋणात्मक शेष प्रकरणों के निराकरण हेतु 21 से 23 अक्टूबर तक शिविर

राजनांदगांव (दावा)। महालेखाकार रायपुर द्वारा शासकीय सेवकों के सामान्य भविष्य निधि ऋणात्मक शेष प्रकरणों के निराकरण के लिए 21 से 23 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से शाम 5.30 बजे तक कार्यालय जिला कोषालय राजनांदगांव में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। कलेक्टर संजय अग्रवाल ने जीपीएफ ऋणात्मक शेष प्रकरणों के निराकरण हेतु आहरण-संवितरण अधिकारी अथवा लेखापाल व लिपिक को आवश्यक अभिलेखों के साथ शिविर में अनिवार्य रूप से उपस्थित होने के निर्देश दिए हैं।

संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में मनाया गया प्रवेश उत्सव

राजनांदगांव (दावा)। संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ठाकुरटोला, राजनांदगांव में दिनांक 17 अक्टूबर, दिन-गुरूवार को नव प्रवेशित छात्राध्यापकों के साथ महाविद्यालय में प्रवेश उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. गुरप्रीत कौर छाबड़ा द्वारा मां सरस्वती के करकमलो पर पुष्प अर्पित कर किया गया। नव प्रवेशित छात्राध्यापकों ने अपना व्यक्तिगत परिचय दिया। परिचय के उपरांत महाविद्यालय की प्राचार्य द्वारा उन्हें आगामी दो वर्षों में एक उच्च कोटि के शिक्षक के रूप में अपना भविष्य निखारने की मंगलकामना के साथ सभी प्रशिक्षणार्थियों का मुंह मीठा करा कर उपहार स्वरूप (शिक्षक की ताकत) कलम (पेन) प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त सहायक प्राध्यापक एवं नव प्रवेशित छात्राध्यापकों ने अपनी-अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

अभिलाषा के दिव्यांग बच्चों की महाआरती व आभार के साथ संपन्न हुई

राजनांदगांव (दावा)। मां बमलेश्वरी देवी संयुक्त पदयात्री सेवा पंडाल जो की अनवरत रूप से 9 दिनों तक मां बमलेश्वरी जाने वाले पदयात्रियों की सेवा व धार्मिक आध्यात्मिक कार्यों के साथ संचालित था, जिसमें प्रतिदिन पदयात्रियों की सेवा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण संदेश, धार्मिक पत्रिकाओं का वितरण अध्ययन सुविधा, सनातन धर्म की जानकारी, महिलाओं बच्चों के लिए धार्मिक प्रतियोगिताएं के साथ-साथ समाजसेवियों धर्मसेवियों पत्रकारगणों जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारीगण, सेवाकर्मियों व सेवकों के आतिथ्य में प्रतिदिन संध्या महाआरती का आनंद लिया।

उक्त जानकारी देते हुए आयोजन समिति के संयोजक पंकज गुप्ता, सौरभ खंडेलवाल, भावेश अग्रवाल, हेमंत तिवारी, राकेश ठाकुर, योगेश साहू, अध्यक्षद्वय संदेश जैन, श्रीमती मधु खंडेलवाल, सचिव सूरज गुप्ता, कोषाध्यक्ष महेश शर्मा, मनीष यादव ने बताया कि 9 दिनों तक श्री बागेश्वर धाम मंदिर परिसर भवन में पदयात्रियों की सेवा तथा प्रतिदिन संध्या प्रातः आरती के पश्चात प्रसादी वितरित की। संध्या महाआरती के अंतिम नवमी दिवस को अभिलाषा सेवा संस्था के दिव्यांग, निःशक्त नौनीहाल बच्चों के आतिथ्य में भगवान श्री बागेश्वर महादेव माता बम्लेश्वरी दुर्गा मां की महाआरती की गई। दिव्य बच्चों का तिलक लगाकर आयोजन समिति की स्वागत अध्यक्ष श्रीमती प्रज्ञा गुप्ता द्वारा किया गया। तत्पश्चात उन्हें प्रसादी वितरण कर उपहार देकर सम्मानित किया गया। बच्चे अत्यंत प्रसन्नता के साथ महाआरती में शामिल हुए। इसी के साथ नवरात्र के आयोजन को विराम दिया गया। आयोजन समिति ने संस्कारधानी के जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, निगम प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग सहित नगर की सभी सामाजिक सेवा संस्थाओं, समाजसेवियों, महिलाओं व बच्चों के साथ समस्त प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा आयोजन में अपना प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करने वाले सभी का आभार व्यक्त किया है।

श्रीचित्रगुप्त मंदिर में कन्याभोज तथा भजन-कीर्तन कार्यक्रम संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। कायस्थ समाज राजनांदगांव पंजीयन क्रमांक-5410 के तत्वाधान में सभी पदाधिकारी एवं संरक्षकगणों की उपस्थिति में कायस्थ महिला मंडल द्वारा नवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर श्री चित्रगुप्त मंदिर में कन्या भोज का आयोजन किया गया। श्री मंदिर के पुजारी द्वारा समस्त पूजन कार्य संपन्न कराए गए। तत्पश्चात सभी कन्याओं एवं बच्चों को प्रेम पूर्वक भोजन प्रसादी कराया गया एवं उपहार प्रदान किया गया। अगले दिवस महिला भजन मंडली (नवागांव) के द्वारा कीर्तन व भजन का कार्यक्रम रखा गया था।

इस अवसर पर महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सावित्री श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष श्रीमती विम्मी श्रीवास्तव, सचिव श्रीमती सीमा श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष श्रीमती मालती श्रीवास्तव एवं कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती सरला श्रीवास्तव, श्रीमती निरूपमा श्रीवास्तव, श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव, श्रीमती चंद्रिका श्रीवास्तव, श्रीमती स्वाति वर्मा एवं अन्य महिला सदस्य श्रीमती संध्या श्रीवास्तव, श्रीमती आरती श्रीवास्तव, श्रीमती शिखा श्रीवास्तव, श्रीमती पूजा श्रीवास्तव, श्रीमती साधना खरे, श्रीमती विजयलक्ष्मी श्रीवास्तव, चंद्रकली श्रीवास्तव, श्रीमती रितु श्रीवास्तव, श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव, श्रीमती इंदू श्रीवास्तव संरक्षक, श्रीमती रामबाई श्रीवास्तव आदि महिलाएं उपस्थित थी।

साथ ही संरक्षक कृष्णा श्रीवास्तव, सुरेंद्र श्रीवास्तव, रोहिणीकांत श्रीवास्तव, आनंदकुमार श्रीवास्तव, ओमप्रकाश श्रीवास्तव अध्यक्ष, राकेश श्रीवास्तव सचिव, संजय श्रीवास्तव उपाध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य राजेश श्रीवास्तव राजा स्पोर्ट्स, आदेश श्रीवास्तव राजेश प्रिंटर्स, अखिलेश श्रीवास्तव चित्रांश फोटो स्टूडियो, गणेश श्रीवास्तव बिल्डिंग ठेकेदार, अतुल श्रीवास्तव दवा एजेंसी, संदीप श्रीवास्तव, अभिषेक श्रीवास्तव, नीरज श्रीवास्तव, अभिनय श्रीवास्तव ठेकेदार, आशीष वर्मा, नीरज श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे। उपरोक्त जानकारी महिला मंडल की सचिव श्रीमती सीमा श्रीवास्तव ने दी।

पांचवीं मंजिल से कूदकर बुजुर्ग ने की आत्महत्या

राजनांदगांव (दावा)। शहर के लखोली नाका रोड स्थित बर्फ फैक्ट्री के पास निर्मित महावीर कल्पवृक्ष कालोनी निवासी 72 वर्षीय बुजुर्ग ने कालोनी के पांचवीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या कर ली। घटना बुधवार की सुबह पांच साढ़े पांच बजे की बताई जाती है। बता दें कि उक्त कल्पवृक्ष कालोनी बनने के बाद यह पहली घटना है। कोतवाली थाना क्षेत्र में हुई उक्त घटना के संबंध में थाना प्रभारी एमन साहू ने बताया कि उक्त बुजुर्ग को मानसिक परेशानी बनी हुई थी जिसका घर वालों द्वारा इलाज कराया जा रहा था। बताया जाता है कि प्रकाशचंद झाबक नामक 72 वर्षीय बुजुर्ग आत्महत्या के पहले पांचवीं मंजिल के नीचे कई बार झांका लेकिन अपनी शारीरिक व्याधियां अथवा अस्वस्थता से इतना परेशान था कि उन्होंने कूदकर आत्महत्या करने में ही इससे छुटकारा समझा और अपनी इहलीला समाप्त कर ली। पुलिस ने मामले को जांच में ले लिया है। मृतक प्रकाश चंद झाबक स्व. आनंदी लाल, मंगल चंद एवं रतनचंद झाबक के छोटे भाई थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी व दो पुत्र व एक पुत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अंतिम संस्कार लखोली नाका मठपारा रोड स्थित मुक्तिधाम में कर दिया गया है।

शिवनाथ महाविद्यालय में नशा उन्मूलन पर प्रेरणादायक व्याख्यान का आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। दिनांक 17 अक्टूबर को शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय में नशा उन्मूलन पर प्रेरणादायक व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह बघेल ने नशा उन्मूलन पर उद्बोधन देते हुए कहा कि समाज में नशा एक विकराल समस्या बन चुकी है और विशेषकर युवा वर्ग इससे अत्यधिक प्रभावित होता है। विद्यार्थी जीवन में नशा एक ऐसी आदत है जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को अवरुद्ध करती है। अतः विद्यार्थियों को अपने भविष्य और समाज के हित में नशे से दूर रहना चाहिए, ताकि वे एक स्वस्थ और सफल जीवन की दिशा में आगे बढ़ सकें। महाविद्यालय के जनभागीदारी अध्यक्ष रवि सिन्हा ने अपने वक्तव्य में कहा कि नशे से जुड़ी समस्याएँ स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव, आत्म-नियंत्रण की कमी, और पढ़ाई में ध्यान केंद्रित न कर पाना विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करते हैं। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करना, अपने भविष्य की दिशा तय करना और समाज में एक सकारात्मक योगदान देना होता है।

समाज सेवक पवन कुमार राजौरिया ने विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन, समय प्रबंधन और विशुद्ध प्रेम जैसे महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। अनुशासन के बिना कोई भी विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता। अनुशासन जीवन में सफलता प्राप्त करने का पहला कदम होता है। अनुशासन विद्यार्थियों को न केवल पढ़ाई में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सहायक होता है। युवावस्था में व्यक्ति जिस दिशा में बढ़ता है, वह उसका भविष्य निर्धारित करती है। इस समय विद्यार्थियों को सही दिशा में चलने की आवश्यकता है, ताकि वे एक सफल और समर्पित जीवन जीते हुए देशहित में काम कर सकें।

इसके लिए समय प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रेम को परिभाषित करते हुए बताया कि विशुद्ध प्रेम का संदर्भ आत्म-प्रेम और दूसरों के प्रति सच्ची भावना से है। यह विद्यार्थियों को मानवीय मूल्यों को समझने और उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इस संदर्भ में नशा उन्मूलन का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि नशा विद्यार्थियों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित करता है और उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है। नशा उन्मूलन का अभियान तभी सफल हो सकता है जब विद्यार्थी खुद से यह निर्णय लें कि वे अपने जीवन को स्वस्थ और सकारात्मक बनाए रखने के लिए नशे से दूर रहेंगे। हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक गुणवंता दास खरे ने कार्यक्रम का संचालन, धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। इस जागरूकता कार्यक्रम में महाविद्यालय के 130 से अधिक छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए।

जिला सहकारी समिति कर्मचारी संघ ने सेवा नियुक्ति में रोक लगाने अध्यक्ष को सौंपा ज्ञापन

राजनांदगांव (दावा)। जिला सहकारी समिति कर्मचारी संघ ने राज्य शासन/ अपेक्स बैंक द्वारा किए जा रहे समिति प्रबंधक संवर्ग को स्थानीय जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक में सेवा नियमानुसार नियुक्ति देने में रोक लगाने की मांग की है।

इस संबंध में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल को ज्ञापन सौंपा गया है ज्ञापन में कहा गया है कि राज्य शासन/ अपेक्स बैंक द्वारा किए जा रहे समिति प्रबंधक संवर्ग के पदों पर भर्ती हेतु सत्यापन उपरांत वरीयता सूची जारी कर दी गई है।

कुछ दिनों में उन्हें जिला बैंकों में पदस्थ भी कर दिया जाएगा। चूंकि सहकारी समिति सेवा नियम 2018 के कंडिका क्र. 5, 7 में स्पष्ट किया गया है कि 50 प्रतिशत स्थान वित्तदायी बैंक द्वारा समिति के ऐसे सेवायुक्तों में से लेना अनिवार्य होगा अतः वर्तमान में किए जा रहे भर्ती हमारे समिति कर्मचारियों के हक को छीनकर किया जा रहा है।

ज्ञापन में कहा गया है कि अब समिति कर्मचारियों की भर्ती किया जाएगा या नहीं, अभी तक स्पष्ट नहीं है, और यदि नहीं होता है, तो समिति कर्मचारियों के साथ न्याय संगत नहीं होगा।

वहीं नवीन भर्ती प्रार्थी को नियुक्ति दिए जाने पर समिति कर्मचारी उन से कनिष्ठ हो जाएंगे, अतः चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति देने की स्थिति में हम आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। इस पर संघ ने जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अध्यक्ष श्री बघेल को ज्ञापन सौंप कर मांग की है कि जब तक सीमित कर्मचारियों में से 50 प्रतिशत भर्ती बैंक संवर्ग पद पर न हो जाए तब तक राज्य शासन/अपेक्स बैंक द्वारा किए जा रहे समिति प्रबंधक संवर्ग को नियुक्ति न दी जाए।

> समिति कर्मचारियों की न्यायोचित लड़ाई में हम साथ हैं। उनके हितों का अवश्य ध्यान रखा जाएगा।
>
> **सचिन बघेल**
> **अध्यक्ष**
> **जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक**
> **राजनांदगांव (छ.ग.)**

कमल गांधी का निधन

राजनांदगांव (दावा)। जिले के प्रतिष्ठित नागरिक कमल गांधी के आकस्मिक निधन से शोक व्याप्त हो गया है. उल्लेखनीय है कि स्व. श्री गांधी पूर्व सांसद प्रदीप गांधी, समाजसेवी भीखम गांधी, हरीश गांधी सहित और भी भाईयों में बड़े थे। कमल गांधी भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं आदर्श कृषि उपज मंडी समिति बसंतपुर के अध्यक्ष तथा वहीं की दुर्गा उत्सव समिति के भी अध्यक्ष थे। उनकी धर्म के प्रति निष्ठा की चर्चा जिले भर में होती रहती थी। उनकी अंतिम यात्रा पुराना गंज चौक स्थित निवास शांति विजय अपार्टमेंट फेस नंबर एक से सायं 4.30 बजे लखोली स्थित मुक्तिधाम के लिए निकली। जिसमें बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक शामिल हुए। मुक्तिधाम में कमल गांधी को श्रद्धांजलि दी गई।

दो बाइक में भिड़ंत, एक की मौत, दूसरा गंभीर रूप से घायल

राजनांदगांव जिले में वनांचल में चिल्हाटी थाना क्षेत्र के हज्जूटोला एवं रेंगाकठेरा के बीच मेन रोड में दो बाइक में आमने-सामने जोरदार भिड़ंत होने का मामला सामने आया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार चिल्हाटी थाना के कहाड़कसा निवासी चेतन सहारे पिता आत्माराम सहारे उम्र 43 साल मंगलवार को बाइक में सवार होकर ग्राम रेंगाकठेरा बाजार जाने के लिए निकले था। इस दौरान हज्जूटोला एवं रेंगाकठेरा के बीच सामने से आ रहे बाइक क्रमांक सीजी-08-एएम-4265 के चालक ने तेजी व लापरवाही पूर्व वाहन चलाते चेतन सहारे के बाइक को जोरदार ठोकर मार दिया। घटना में चेतन सहारे को गंभीर चोटें आई थी। इलाज के दौरान चेतन सहारे की मौत हो गई। वहीं ठोकर मालने वाले आरोपी को हल्की चोटें आई है।

जल जीवन मिशन के तहत ग्राम चाबुकनाला में घर-घर पंहुचा नल जल कनेक्शन

राजनांदगांव (दावा)। शासन की जल जीवन मिशन योजना से जिले के ग्रामीण क्षेत्रों तक नल के माध्यम से घर-घर तक शुद्ध जल पहुंचाया जा रहा है।

कलेक्टर संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर नल के माध्यम से शुद्ध पेयजल पहुंचाने का कार्य बेहतर रूप में क्रियान्वन करते हुए छुरिया विकासखंड के ग्राम चाबुकनाला के ग्रामीणों के 14 परिवारों में सोलर के माध्यम से 24 घंटे शुद्ध पेयजल पहुंचाया जा रहा है। सरपंच श्रीमती कल्पना मंडावी ने बताया कि पहले उनके ग्राम में पानी की काफी समस्या थी। कई बार अन्य ग्रामों से टैंकर के माध्यम से पानी मंगाया जाता था। जल जीवन मिशन के तहत उनके ग्राम में पाईप लाइन बिछाकर हर घर में नल कनेक्शन दिया गया है। घर-घर में नल कनेक्शन से शुद्ध पेयजल प्रदाय किया जा रहा है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा ग्राम में घर पर ही नल से जल मिलने से एवं जल के बेहतर उपयोग और बहने वाले पानी के सदुपयोग, सोख्ता गड्ढा निर्माण सहित जल संरक्षण के लिए समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया जा रहा है। जिससे गांव में जल संरक्षण और जल के बेहतर उपयोग करने के प्रति जागरूकता आयी है। गांव के वार्ड नंबर 12 की निवासी श्रीमती शारदा बाई एवं श्रीमती गोंडा बाई चंद्रवंशी ने बताया कि पहले वह हैंडपंप के माध्यम से अपने घरों के लिए पानी लाती थी।

हैंडपंप के समक्ष लम्बी लाइन लगानी पड़ती थी। काफी मशक्कत के बाद थोड़ा बहुत पानी ही मिल पता था, लेकिन अब घर में नल लगने के बाद पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पेयजल मिल रहा है, जिसका उपयोग वे और उनका परिवार पेयजल सहित निस्तारी के लिए करते हैं। जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर नल के लिए ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अनमोल दावा

> शांतिपूर्ण मन ही हमें सच्ची खुशी देता है। इसलिए शांतिपूर्ण मन रखे।

सुप्रीम कोर्ट एवं निचली अदालतें

लगभग नीति परिवर्तन के मूड में सुप्रीम कोर्ट ने अब पिछले कुछ महीनों से जमानत के लिए आने वाले मामलों में जेल नहीं बेल, कैद नहीं जमानत का राग अलापना शुरू किया है. जो भी मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचता है कि जमानत दी जाए, वह पहले महीनों नहीं सालों तक निचली अदालतों, जिन में हाईकोर्ट भी शामिल हैं, में लटका रहता है, जो जमानत देने से इनकार कर चुकी होती हैं.

दिल्ली के आम आदमी पार्टी के तथाकथित शराब घोटाले में भारतीय राष्ट्रीय समिति पार्टी की के कविता को जमानत देते हुए एनफोर्समैंट डायरेक्टोरेट को फटकार लगाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वे मनमाने ढंग से किसी को भी बिना सही व पक्के सुबूत के महीनों जेल में नहीं रख सकते. यह जमानत उस ने तब के कविता को दी जब सत्येंद्र जैन को अभी भी इसी घोटाले में कैद कर रखा हुआ है.

एनफोर्समेंट डायरेक्टोरेट ने जुलाई 2022 में दिल्ली मुख्य सचिव की शिकायत पर उपराज्यपाल के आदेश पर एकएक कर के कई लोगों को 580 करोड़ के राजस्व की जांच के नाम पर गिरफ्तार किया था पर अभी तक किसी के खिलाफ कोई गवाही शुरू नहीं हुई और ईडी अभी तक जांच ही कर रही है, तथ्य ढूंढ़े जा रहे है. ईडी के पास कोई कागजी सुबूत या बैंक अकाउंट का खुलासा नहीं हुआ है.

आम आदमी पार्टी को कौर्नर करने में तो ये गिरफ्तारियां बड़े काम की रही हैं पर गुनाहगारों को भारत में जेलों में सजा देने के काम में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ी हैं. अभी तक यह अपराध का नहीं, राजनीति का मामला है. भारतीय जनता पार्टी को यह बिलकुल गवारा नहीं कि उस दिल्ली से जहां से वह 3 बार से लोकसभा की सभी सातों सीटें जीत रही है, अरविंद केजरीवाल विधानसभा में इतने बहुमत से जीत रहे हैं कि लेदे कर दलबदल करवाना भी संभव नहीं हो पाता. वह ईडी के जरिए पूंछ पकड़ कर सूई की नोंक से हाथी को निकालने के चक्कर में है.

जहां तक सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि जेल नहीं बेल अपराध कानूनों की नीति होना चाहिए, यह कहीं भी माना जा रहा हो, ऐसा नहीं लगता. हर पुलिस अफसर और हर पहला मजिस्ट्रेट इस सिद्धांत को मानता है कि जेल हां हां, बेल न न. छोटेछोटे मामलों में भी और ऐसे मामलों तक में जहां आरोपी का अपराध से सीधा संबंध न हो, किसी पर भी आरोप लगा कर जेल में ठूंस देने को वे कानून मानते हैं. दिसंबर 2022 के आंकड़ों के अनुसार, 6 लाख के करीब जेलों में बंद कैदियों में साढ़े 4 लाख कैदी अभी तक सजा नहीं पाए हैं और कुछ तो 8-10 सालों से बंद हैं, बिना अपराध साबित हुए, केवल वे ही जमानत पा पाते हैं जिन के पास वकीलों पर खर्च करने का बड़ा पैसा होता है.सुप्रीम कोर्ट ने कई मामलों में जेल नहीं बेल कहा है पर न तो पुलिस अफसर और न ही मजिस्ट्रेट और हाईकोर्ट इस को तवज्जुह दे रहे हैं. केवल उन्हें जमानत मिल रही है जहां पुलिस की मामलों में रुचि न हो रही हो क्योंकि हर आरोपी से कुछ न कुछ मिल ही जाता है.

सुप्रीम कोर्ट को अपनी बात मनवानी है तो उसे हर जिले में एक मौनिटरिंग कमेटी बनानी चाहिए जो हर जमानत इनकार किए मामले की तुरंत जांच करे ताकि मजिस्ट्रेट व सरकारी वकील और पुलिस को कठघरे में खड़ा किया जा सके. असल में हमारे यहां न्याय पौराणिक अन्याय की सोच पर निर्भर है जिस में सजा को पापों का अनिवार्य फल माना जाता है जब तक कि दानदक्षिणा दे कर या ईश्वर या देवता के पैर छू कर वरदान न मिल जाए, जो गिरफ्तार होता है वह कितना 'दान' देता है, क्या बताना पड़ेगा?

–सरिता से साभार.

अभिधम्म का सम्मान : पाली साहित्य का एक शास्त्रीय रत्न

प्रोफेसर रविन्द्र पंथ

एक वास्तविक अर्थ में, अभिधम्म में चार उल्लिखित श्रेणियाँ होती हैं: १.चेतना, 2. मानसिक अवस्थाएँ, 3. भौतिक गुण, और 4. निब्बाना या अंतिम मुक्ति। अभिधम्मत्थसंगहो, वयोवृद्ध अनुरुद्ध द्वारा।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से, 17 अक्टूबर 2024 को अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली की मान्यता का आयोजन कर रहा है। अभिधम्म पिटक, पाली कैनन का तीसरा भाग, बुद्ध की नैतिक मनोविज्ञान और दर्शन में गहराई से उतरता है, जो मन, उसके मानसिक कारकों और वास्तविकता को समझने के लिए एक जटिल ढांचा प्रस्तुत करता है।

थेरवाद परंपरा के अनुसार, ये शिक्षाएं तावतींसा आकाश में दी गई थींए जहाँ बुद्ध ने वर्षा ऋतु के दौरान तीन महीने बिताए, देवताओं और अपनी माता को अभिधम्म का उपदेश दिया। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से, ''अभिधम्म'' दो शब्दों ''अभि'' (की ओर) और ''धम्म'' (धारण करने के लिए) से मिलकर बना हैए जिसे बुद्ध के उन्नत शिक्षाओं की ओर ले जाने के रूप में समझा जाता है। प्रसिद्ध पाली टिप्पणीकार वेंण् बुद्धघोष ने अभिधम्म को सबसे उन्नत या विशिष्ट सिद्धांत के रूप में वर्णित किया है, जो सुत्त पिटक की अधिक पारंपरिक शिक्षाओं से इसे अलग करता है।

अभिधम्म चार प्रकार के परमार्थ धम्म (अंतिम वास्तविकताएँ) का कठोर विश्लेषण प्रस्तुत करता हैरू चित्त (चेतना), चेतसिका (मानसिक कारक), रूप (पदार्थ), और निब्बाना (अंतिम मुक्ति)। यह ढांचा साधकों को मानव अस्तित्व की जटिलताओं का अध्ययन करने की अनुमति देता है कृमन और पदार्थ के अंत (क्रियाए दुःख की प्रकृति) और निब्बाना की प्राप्ति के लिए मार्गए या दुःख के अवसान को समझने में।

अभिधम्म पिटक सात ग्रंथों से मिलकर बना है, प्रत्येक बुद्ध की शिक्षाओं के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करता है। ''धम्मसंगणि'' पहला ग्रंथ है, जो अनुभव की दुनिया को बनाने वाली अंतिम वास्तविकताओं की गणना और परिभाषा करता है। ''विभंग'' इन वास्तविकताओं का और विश्लेषण करता हैए जबकि ''धातुकथा'' और ''पुग्गलपञ्ञत्ति'' क्रमशः घटनाओं और व्यक्तियों के प्रकारों का वर्गीकरण प्रदान करते हैं। ''कथावत्थु'' विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों और विवादों को संबोधित करता हैए जबकि ''यामक'' और ''पट्ठान'' उन जटिल शर्तीय संबंधों की गहराई में जाते हैं जो सभी घटनाओं के उत्पत्ति और निष्कर्ष को नियंत्रित करते हैं। ''पट्ठान''् को अभिधम्म का शिखर माना जाता है, यह एक विशाल ग्रंथ है जो मन और पदार्थ की पूरी दुनिया को नियंत्रित करने वाले चौबीस प्रकार के शर्तीय संबंधों का विस्तृत अध्ययन करता है।

अभिधम्म में एक केंद्रीय अवधारणा शर्तीयता का सिद्धांत है, जो यह स्पष्ट करता है कि सभी घटनाएँ कैसे एक जटिल कारणों और परिस्थितियों के अंतःक्रिया के कारण उत्पन्न होती हैं और समाप्त होती हैं।

हालांकि अभिधम्म अत्यधिक तकनीकी और सैद्धांतिक लग सकता हैए इसका अंतिम उद्देश्य साधकों को वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझने में सहायता करना है, जो पारंपरिक धारणाओं और अवधारणाओं के विकृतियों से मुक्त हो। सभी घटनाओं की अस्थायीए असंतोषजनक और निरात्मा स्वभाव को समझकर, व्यक्ति धीर-धीरे आसक्तियों और लिप्तता को छोड़ सकता हैए जिससे वह दुःख से मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

हाल ही में, पाली को मराठीए प्राकृत, असमिया और बांग्ला के साथ क्लासिकल भाषा का दर्जा दिया गया है। यह प्राचीन मध्य इंडो-आर्यन भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की है, जो बुद्ध धर्म की समृद्ध दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं के द्वार खोलती है। यह बौद्ध ग्रंथों और दर्शन की नींव है।

अभिधम्म पिटक, पाली कैनन (त्रिपिटक) का एक प्रमुख खंड है, जो मनए चेतना और वास्तविकता की प्रकृति की जटिलताओं का अन्वेषण करता है। यह ग्रंथ बुद्ध धर्म के मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधारों को समझने के लिए आवश्यक है।

पाली का प्रभाव भारत से परे फैला हुआ है, खासकर दक्षिण-पूर्व एशिया मेंए जहां श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस और कंबोडिया जैसे देशों ने थेरवाद बौद्ध धर्म को अपनाया है। इन देशों में, पाली केवल एक धार्मिक भाषा नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संपत्ति भी है।

अभिधम्म दिवस पाली की समृद्ध विरासत और भारत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य में इसकी रणनीतिक महत्वता को याद दिलाने का एक अवसर है। जब आईबीसी पाली भाषा का जश्न मनाता है, तो यह भारत के लिए आर्थिक और कूटनीतिक अवसर भी प्रस्तुत करता है। आईबीसी को अपने एशियाई भागीदारों से मिले उत्साहजनक प्रतिक्रियाए जो भारत सरकार द्वारा पाली को क्लासिकल भाषा के रूप में मान्यता मिलने के बारे में उत्साहित हैं, इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि इस भाषा का भविष्य उज्ज्वल है।

पाली को अपनाने और बढ़ावा देने के माध्यम से, भारत इस गहन भाषा के जन्मस्थान के रूप में अपनी भूमिका को फिर से हासिल कर सकता हैए जबकि दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार भी कर सकता है। आईबीसी का यह प्रयास न केवल बुद्ध की शिक्षाओं का सम्मान करता हैए बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि पाली में संचित ज्ञान फलता-फूलता रहे और आने वाली पीढ़ीयों को प्रेरित करता रहे। इसके अलावा, जैसे-जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देश अपने बौद्धिक जड़ों के साथ फिर से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं, भारत पाली अध्ययन में संसाधन, विशेषज्ञता और नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल भारत की भाषा पर अधिपत्य को मजबूत करता है, बल्कि पड़ोसी देशों के साथ कूटनीतिक संबंधों को भी मजबूत करता है।

लेखक, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ
पूर्व कुलपति, नव नालंदा महाविहार

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम - 290 : सीता जी ने कहा, प्रजा निश्चिंत रहे, अयोध्या सुयोग्य हाथों में है सुरक्षित

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

प्रजा से एक व्यक्ति ने फिर कहा, ''हे राजकुमार! हमें महाराज दशरथ पर पूरा विश्वास है, सारी प्रजा उनकी आज्ञाओं का पालन करती है और उनके प्रति पूर्णरूपेण निष्ठा रखती है, लेकिन हमारी आशंका अन्य लोगों के हस्तक्षेप को लेकर है। हमें ऐसा लग रहा है कि महाराज दशरथ रानी कैकेई या अन्य लोगों के भारी दबाव में हैं और यह स्वयं उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। ऐसे में आपका यहां से प्रस्थान करना और भी अनुचित हो जाएगा।''

श्री राम, सीता जी और लक्ष्मण जी ने राजभवन के मुख्य द्वार की सीढ़ी से नीचे उतरना प्रारंभ किया।

लक्ष्मण जी ने उस नागरिक की चिंता का निवारण करते हुए कहा, ''पिताश्री पीड़ा में अवश्य हैं और श्री राम भैया के वनवास की परिस्थिति बन जाना हम सबके लिए अत्यंत दुखद और अस्वीकार्य है, लेकिन विधि का यही विधान है और इसके आगे हम सब नतमस्तक हैं। महाराज दशरथ किसी दबाव में नहीं आ सकते हैं। परिस्थितियों के आगे विवश हो जाना अलग बात है और किसी व्यक्ति के अनुचित दबाव के आगे समर्पण कर देना दूसरी बात है। यह दशरथ पुत्र लक्ष्मण अपने पिता को ऐसे किसी भी दबाव का सामना करते हुए देख ही नहीं सकता था।''

एक और नागरिक ने कहा, ''तो यही निर्णय पहले लिया जा सकता था। रातों-रात स्थिति बदल गई तो यह संदेह का कारण होता ही है। युवराज बनने जा रहे हैं श्रीराम को वन का निवास, यह कहां का न्याय है?''

राजकुमारी सीता ने उस नागरिक को समझाते हुए कहा, ''हे सुयोग्य जन! संदेह के बादल तो तब होते, जब अयोध्या का शासन अयोग्य हाथों में चलाया जाता। वर्तमान में तो महाराज दशरथ राजपद को सुशोभित कर रहे हैं और कुमार भरत शीघ्र ही अयोध्या लौटकर राज कार्यों में उनकी सहायता करेंगे। ज्येष्ठ राजकुमार का भी आप सबसे यही आग्रह है कि आप लोग अयोध्या प्रशासन की पूर्ववत सहायता करते रहें और जन कल्याण के कार्यों में अपना योगदान प्रदान करें।आप निश्चिंत रहें। हम सब वनवास की अवधि पूरी होते ही अयोध्या लौट आएंगे।''

(भगवान श्री राम की प्रेरक गाथा संस्कृत साहित्य में आदि कवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं की शताधिक रामायणों में लिखी गई है। लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री राम के जीवन के विविध प्रसंगों में अनेक स्थानों पर एक साधारण भक्त की अपनी नवीन रचनात्मक कल्पनादृष्टि का भी सहारा लिया है और रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

(ताटंक छंद 16-14)

मंत्र सिद्ध अब होने दो

कभी मुफ्त की रोटी खाकर, देश सँवर क्या पाया है?
मेहनती को कामचोर का, मुकुट सदा पहनाया है।
ताकत नहीं प्रजा को मिलती, कभी मुफ्त की रोटी से।
शून्य हुए हैं अंग हमारे, राजनीति की गोटी से।।
मुफ्त रोटियों की लालच ने, भेद कराया भाई में।
चाह गगन को छूने की थी, गिरे मगर हम खाई में।
जान गए है सच्चाई को, कर्मठ ही नभ छूता है।
देश कर्मठों के ही बल पर, पाता सदा गुरूता है।।
प्रजा जहाँ की मेहनती हो, खुशियाँ वहाँ समातीं हैं।
जीवन की सारी सुविधाएं, प्रजा वहाँ की पातीं हैं।
मान्य नहीं है हमको जीना, कंगाली की छाया में।
भुगत रहा है श्रीलंका, फँस मुफ्त जाल की माया में।।
देश सुरक्षित होने पर ही, प्रजा सुरक्षित होती है।
मुफ्त रोटियाँ खाने वाली, सदा ही रोती है।
नींद खुली है आज हमारी, बीज कर्म का बोने दो।
देश हमारा सबसे प्यारा, मन्त्र सिद्ध अब होने दो।।

राम कुमार चन्द्रवंशी
बेलरगोंदी (छुरिया)
जिला-राजनांदगाँव(छ.ग.)
9179798316

शब्द सामर्थ्य - 210

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, बक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे
1. विचित्र, अद्भूत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

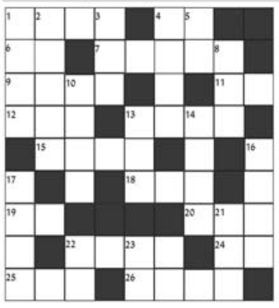

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 209 का हल

दि	क्र	त		आ	सा	न		आ
ल		मी		खि		सी	ख	ना
	म	ज	बू	र		ह		जा
स	र्द			का		त	रा	ना
र				र	वि		ह	
प	ह	ना	ना		ना	रा	ज	
ट			क	शि	श		नी	ला
	र			का		रा		य
खा	ति	र	दा	री		त	क्ष	क

सू- दोकू क्र. 210

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.209का हल

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

राशिफल

मेष – आज आपका दिन माता-पिता की सेवा में व्यतीत होगा। आज आप नयी जमीन से संबंधित कोई लेन-देन करने जा रहे हैं तो पहले उसकी अच्छे से जांच-पड़ताल जरूर कर लें। आज दिन सुखद बीतेगा। कोई पारिवारिक धार्मिक कथा मनोरंजन संबंधी यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। आपके द्वारा लिए गए निर्णय सकारात्मक और फायदेमंद रहेंगे।

वृषभ – आज आपका दिन शानदार रहेगा। आज युवाओं को अपने अध्ययन और करियर में एकाग्रता रखने से उचित परिणाम मिलेंगे। आज बच्चों की समस्याओं का समाधान निकालने के लिए कुछ समय उनके साथ जरूर बिताये। आज कोई भी पेपर वर्क करते समय पहले अच्छी तरह जांच- पड़ताल कर लें।

मिथुन – आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज आपको अपने व्यवहार में कुछ सुधार लाने की भी जरूरत है। क्योंकि कभी-कभी आपका जल्दबाजी तथा आवेश पूर्ण स्वभाव लोगों के लिए परेशानियां उत्पन्न कर देता है। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह अवश्य लें।

कर्क – आज आपका दिन कार्यक्षेत्र में तरक्की दिलाने वाला रहेगा। आज किसी भी परिस्थिति में घबराने की वजह अपनी बुद्धि बल और कार्य क्षमता का उपयोग करेंगे तो समय रहते उचित हल भी निकल आएंगे। कुछ समय प्रभावशाली लोगों के साथ ही व्यतीत करने से आपके स्वभाव में परिवर्तन आएगा।

सिंह – आज आपका दिन उत्तम रहेगा। काम के प्रति डेडिकेशन होने से आप जल्दी ही सफलता की ओर अग्रसर होंगे। आज किसी अनुभवी व्यक्ति का सानिध्य मिलेगा, जिससे अच्छा महसूस करेंगे। आज आपका कोई खास कार्य पूरा हो जायेगा। अपनी मेहनत और क्षमता पर विश्वास रखेंगे तो काम सुचारू रूप से बनते जाएंगे।

कन्या – आज आपका मन उत्साहित रहेगा। जॉब कर रहे लोगों के लिए अच्छे ऑफर्स आने के योग बन रहे है, उनकी सैलरी में इजाफा होगा। आज कुछ समय एकांत अथवा आध्यात्मिक स्थल पर जरूर व्यतीत करें। भाइयों के साथ चल रही अनबन किसी की सहायता से दूर हो जाएगी।आज टूर एंड ट्रेवल्स संबंधी व्यवसाय में सुधार आएगा।

तुला – आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। आज सहज तरीके से अपने कामों को करते चलेंगे तो काम का ज्यादा बोझ नहीं रहेगा। कभी-कभी ज्यादा प्राप्ति की इच्छा और जल्दबाजी करना नुकसान दे सकता है। बच्चों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखें। समय रहते उचित कदम उठाने से परिस्थितियां संभल जायेगी।

वृश्चिक – आज आपको नया अनुभव मिलने वाला है। आज थोड़ी-सी मेहनत से आपको बड़ा मुनाफा होगा। बुजुर्गों की सेवा करें जिससे उनका आशीर्वाद आपको मिलेगा। रुके हुये कार्यों को पूरा करने में आप जल्द ही सफल होंगे। संतान पक्ष से आपको सुख की प्राप्ति होगी। लवमेट को चॉकलेट गिफ्ट करने से उन्हें खुशी मिलेगी।

धनु – आज आपका दिन लाभदायक रहेगा 7 समाज सेवा कर रहे लोगों को आज स्थानीय लोगों के द्वारा सम्मानित लिया जायेगा, जिससे उनका हौसला बढ़ेगा। आज ऑफिस में चल रही परेशानियों में कुछ कमी आएगी। आज दोस्तों से पूरी मदद मिलेगी। खास काम के सिलसिले में बातचीत भी होगा।

मकर – आज आपका दिन बेहतर रहेगा। कामकाज से जुड़ी चुनौती आज आपके सामने आएगी, साथ ही आप इनसे निपटने में सफल भी हों। आज कार्यक्षेत्र की गतिविधियों में सुधार आएगा। आज मीडिया से जुड़े व्यवसाय में लाभदायक स्थिति बनेगी। अपना आत्मबल जगाने की कोशिश करना जारी रखना होगा।

कुंभ – आज आपका दिन काफी बेहतरीन रहने वाला है।आज व्यस्तता के बावजूद घर परिवार में उचित सामंजस्य बनाकर रखेंगे। आज आप खुद को मजबूत रखेंगे। कोई महत्वपूर्ण फैसला लेने में भी सक्षम रहेंगे। आज आपके खर्चों की भी अधिकता बनी रहेगी। जिसकी वजह से आप थोड़े उलझन में रहेंगे।

मीन – आज आपका मन प्रसन्न रहेगा। ऑफिस के काम में आप बिजी रहेंगे, जिससे आपके बॉस आपसे खुश रहेंगे। आज किसी खास प्रयोजन को लेकर यात्रा संबंधी प्रोग्राम बन सकता है। घर पर रिश्तेदारों का आगमन होगा और घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहेगी। आज घर के बड़े बुजुर्गों का स्नेह व आशीर्वाद अवश्य लें।

लघुकथा

// समझाईश //

''इतने दिनों से मैं तुम्हें समझा रही थी; बात समझ नहीं आ रही थी? मेरे तन को खोखला तो कर डाला। मैंने तुम्हारे लिए कितना कष्ट सहा! दुःख सहा! कितनी पीड़ा हुई है मुझे! मैं ही जानता हूँ।''

''लेकिन आपने मुझे कभी क्यों नहीं दुत्कारा? क्यों नहीं भगाया मुझे? मेरे प्रति स्नेह व अपनतत्व क्यों जताया? आज बहुत रोना आ रहा है मुझे अपनी हालत पर।''

''मैंने कई बार तुम्हें अवगत कराया कि किसी को कष्ट पहुँचाकर मिला सुख लम्बी अवधि तक नहीं टिकता। शायद तुम यही सोचते रहे कि मेरे करीब रहकर तुम्हारा जीवन ठसके के साथ बीत जाएगा। जीवन भर तुम्हें कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। तुम्हारी यह बहुत बड़ी भूल थी। हरेक को स्वयं के लिए जीवन में कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। अब रही बात अपनतत्व की; तो भला मैं कब किसके प्रति अपनतत्व नहीं रखता?''

''अब मैं क्या करूं.. क्या न करूं..? मुझे कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। मैं भाग भी तो नहीं सकता। मेरा अंत अब तो निश्चित है। सम्भव हो तो मुझे क्षमा कर देना।''

चुल्हे में जलती हुई लकड़ी की बातें सुन दूसरे छोर में लगे घुन (वुड वॉर्म) अपना सिर धुन रहा था।

- टीकेश्वर सिन्हा ''गब्दीवाला''

सांसद की अनुशंसा पर नगर विकास के लिए मिले 3 करोड़ रुपए

खैरागढ़ (दावा)। लोकसभा सांसद संतोष पांडे की अनुशंसा पर नगरपालिका परिषद खैरागढ़ में 2 करोड़ 98 लाख 42 हजार की प्रशासकीय स्वीकृति नगरीय प्रशासन मंत्रालय ने प्रदान की है। उपमुख्यमंत्री व नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव ने 21 अगस्त को प्रत्येक नगरपालिका को वित्तीय वर्ष 2024-25 में अधोसंरचना मद अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों हेतु राशि रू. 3-3 करोड की अनुदान राशि स्वीकृति प्रदान किये जाने की घोषणा की गई है। इसी कड़ी में वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु निम्नानुसार 55 कार्यों हेतु अधोसंरचना मद अंतर्गत राशि रूपये 298.42 लाख (रूपयें दो करोड़ अन्ठानवे लाख ब्यालीस हजार मात्र) की अनुदान स्वीकृति प्रदान की गई है। विकास कार्यों की स्वीकृति मिलने पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह, जिला भाजपा अध्यक्ष घम्मन साहू, पालिका अध्यक्ष गिरिजा नंद चंद्राकर, पालिका सांसद प्रतिनिधि राकेश गुप्ता, मंडल भाजपा अध्यक्ष व पार्षद विनय देवांगन, उपाध्यक्ष रज्जाक खान, पार्षद टिकेश्वरी पटेल, शैलेन्द्र वर्मा, दिलीप राजपूत, सुमीत टांडिया, सुमन दयाराम पटेल, मोनिका रजक, अजय जैन, रेखा विकेश गुप्ता, दीपक देवांगन, त्रिवेणी राजेश देवांगन, रूपेंद्र रजक, पुरुषोत्तम वर्मा, देवांतीन कमलेश कोठले, शत्रुघ्न धृतलहरे, पुष्पा सिंदूर, चंद्रशेखर यादव, दिलीप लहरे सहित समस्त जनप्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव व सांसद संतोष पांडे के प्रति आभार व्यक्त किया है।

सांसद प्रतिनिधि भागवत शरण सिंह ने बताया कि वार्ड क्रमांक 03 गायत्री नगर विष्णु यादव के घर से लच्छू यादव के घर तक सी.सी. रोड कार्य के लिए 2.75 लाख, वार्ड क. 03 मोंगरा सड़क पुलिया से लेकर सुरेश भट्ट के मकान तक आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य के लिए 5 लाख, वार्ड क. 03 गायत्री नगर में पुल से लेकर राजकुमारी ठाकुर के मकान तक सी.सी. रोड कार्य 7.30 लाख, वार्ड क्र. 04 सुर्यदमन सिंह के घर से दुलेश्वर सिंह के घर तक सी.सी. रोड कार्य 3.25 लाख, वार्ड क. 04 राधा कृष्ण मंदिर के सामने सी.सी. रोड कार्य 3.25 लाख, वार्ड क्र. 04 राजेन्द्र सिंह गहरवार घर के बाजू में सी.सी. रोड कार्य 1 लाख, वार्ड क्र. 05 जमातपारा गणेश रजक के घर से नदी तक सी.सी. रोड कार्य 4.35 लाख, वार्ड क्र. 09 बजरंग होटल के पीछे से नदी तक सी.सी. रोड कार्य 2.60 लाख, वार्ड क्र. 11 किल्लापारा लोकेश यादव के घर के सामने से ताम्रकार के घर तक सी.सी. रोड कार्य 0.85 लाख, वार्ड क्र. 12 अमलीपारा सुखउ वर्मा के घर से आलोक वर्मा के घर तक सी.सी. रोड कार्य 11.75 लाख, वार्ड क्र. 12 अमलीपारा कीर्तन साहू के घर से ठाकुर राम के घर तक सी.सी. रोड कार्य 19.11 लाख, वार्ड क्र. 13 रेखावर्मा के घर से देवारी भाट रोड तक सी.सी. रोड कार्य 3.25 लाख, वार्ड क्र. 16 सुखेन्द्र निषाद के घर से हेमन बाई के घर तक सी.सी. रोड कार्य 5.90 लाख, वार्ड क्र. 16 दीनदयाल के घर से सुखमा के घर तक सी.सी. रोड कार्य 7.87 लाख, वार्ड क्र. 16 मोहन के घर से नदी तक सी.सी. रोड कार्य 11.75 लाख, वार्ड क्र. 17 फूलसिंग देवांगन के घर से दुर्गामंच तक सी.सी. रोड कार्य 5.55 लाख, वार्ड क्रं 18 भागा बाई के होटल से संदीप देवार के घर तक सी.सी. रोड कार्य 4.27 लाख, वार्ड क्र 18 शिवमंदिर रोड से अर्जुन वर्मा के घर तक सी.सी.रोड कार्य 4.88 लाख, वार्ड क्र.18 समीर कुरैशी के घर से अरिहंत आटो तक आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य 1.62 लाख, वार्ड क्र. 10 किशोर सिंह के खेत से देव सिंह वर्मा के खेत तक नाली निर्माण कार्य 4.50 लाख, वार्ड क्र. 10 जोशी के घर से कैलाश के घर तक सी.सी. रोड 3.94 लाख, वार्ड क्र.10 संजय रजक के घर से पावर हाऊस नदी तक सी.सी. रोड 6.56 लाख, वार्ड क्र. 10 संजीत के घर से मेन रोड तक नाली निर्माण कार्य 2.10 लाख, वार्ड क्र.10 भागचंद जोषी के घर से विनोद यादव के घर तक पेवर ब्लाक कार्य 1.72 लाख, वार्ड क्र. 06 नरेश पाण्डेय के घर से नाला तक नाली निर्माण 5.75 लाख, वार्ड क्र. 06 अखलेश पटेल के घर से चौक तक नाली निर्माण 15.32 लाख, वार्ड क्र.14 भुजबल टंडन के घर से राजकुमार के घर तक सी.सी. रोड निर्माण 1.63 लाख, वार्ड क्र.07 किशन पेंटर के दुकान के सामने सी.सी.रोड निर्माण कार्य 1.07 लाख, वार्ड क्र. 07 ललीत ज्वेलर्स के पास सी.सी. रोड निर्माण कार्य 1.07 लाख, वार्ड क्र. 20 कलेक्टर बंगला से पिपरिया जलाशय आफिस तक नाली निर्माण कार्य 11.12 लाख, वार्ड क्र. 04 सामुदायिक भवन में बाउंड्रीवॉल निर्माण 7.36 लाख, वार्ड क्र. 11 मणीकंचन केन्द्र में बाउंड्रीवॉल निर्माण 8.70 लाख, वार्ड क्र 10 सांस्कृतिक मंच निर्माण कार्य 4.43 लाख, वार्ड क्र. 03 जांगडे पटवारी के घर से राजकुमारी मैडम के घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य 5 लाख, वार्ड क्र. 03 जागडे पटवारी के घर से योगेन्द्र जडेजा के घर तक आर. सी.सी. नाली निर्माण कार्य 5.00 लाख, वार्ड क्र. 03 भागवत शरण सिंह से गंजीपारा रोड तक आर.सी.सी. नाली निर्माण 5 लाख, वार्ड क्र. 06 केवरी रजक के घर से राधे देवांगन के घर तक सी.सी. रोड निर्माण 2.27 लाख,वार्ड क्र.09 सत्यम गारमेंट से नाला तक नाली निर्माण कार्य 1.61 लाख, वार्ड क्र.10 मेन रोड से गौशाला तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य 10 लाख, वार्ड क्र.11 विमल श्रीवास्तव के घर से पन्ना कोसरे के घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य 1.83 लाख, वार्ड क्र.12 राजीव चन्द्रांकर के घर से मुख्य नाला तक आर.सी.सी. नाली 3.02 लाख, वार्ड क्र. 13 देवारीभाट रोड से मेहतर दास के घर तक सी.सी. रोड निर्माण 5.90 लाख, वार्ड क्र.14 भूपेन्द्र गौकर के घर से कुमार भोण्डेकर के घर तक सी.सी. रोड 5.68 लाख, वार्ड क्र.14 भुजबल टंडन के घर से राजकुमार के घर तक सी.सी. रोड 1.83 लाख, वार्ड क्र. 14 नारद कोठले के घर से मनीकलाल कोसरे के घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य 4.10 लाख, वार्ड क्रमांक 14 में सरस्वती मंच से नदी तक सी.सी. रोड 4.26 लाख,वार्ड क्र.09 मंगल सारथी के घर से मुख्यमार्ग तक सी.सी. रोड 3.35 लाख, वार्ड क्र.03 से मिनी उद्यान निर्माण 5.00 लाख, वार्ड 01 कबीर कुटीर से अरुण वर्मा के घर तक नाली निर्माण 8.82 लाख की स्वीकृति शासन ने प्रदान किया है।

वार्ड क्र. 04 में हाई मास्क लाईट 6.37 लाख,वार्ड क्र.07 जयस्तंभ चौक में हाईमास्क लाईट 6.37 लाख,वार्ड क्र.09 ईतवारी बाजार में हाई मास्क लाईट 6.37 लाख की लागत से हाईमास्क लाइट लगाए जाएंगे। वार्ड क्र.19 टिकरापारा में सामुदायिक भवन निर्माण 10.00 लाख, वार्ड क्र.20 सिविल लाइन में सामुदायिक भवन निर्माण 10.00 लाख, वार्ड क्र. 17 में सामुदायिक भवन में अतिरिक्त कक्ष निर्माण 5 लाख खर्च किए जाएंग।

घरेलु गैस सिलेंडर के व्यवसायिक उपयोग करते पाए जाने पर 5 प्रतिष्ठानों पर कार्रवाई

खैरागढ़ (दावा)। कलेक्टर चन्द्रकांत वर्मा के निर्देशानुसार खाद्य विभाग द्वारा मंगलवार 15 और गुरूवार 16 अक्टूबर को जिले के विभिन्न होटल एवं ढाबों में द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस (प्रदाय एव वितरण विनियमन) आदेश 2000 के तहत उपयोग किये जाने वाले गैस सिलेंडरों की जाँच की गयी। जिनमें घरेलु गैस सिलेंडर के व्यवसायिक उपयोग करते पाए जाने पर 5 प्रतिष्ठानों से कुल 15 नग घरेलु गैस सिलेन्डर जब्त किया गया। जिसमें मेसर्स अशोक सिन्हा होटल नर्मदा से 5 नग, सीजी 33 बिरयानी सेंटर खैरागढ़ से 3 नग, सिटी ढाबा, लांजी रोड से 3 नग, माँ अन्नापूर्णा मेस एंड कैफे खैरागढ़ से 3 नग एवं अग्रवाल भोजनालय खैरागढ़ से 1 नग गैस सिलेन्डर का व्यावसायिक उपयोग किये जाने पर जब्ती की कार्यवाही की गयी। उक्त कार्यवाही में सहायक खाद्य अधिकारी संजय ठाकुर, खाद्य निरीक्षक विनोद सागर, मनीष ध्रुव, सुश्री गरिमा सोरी एवं सुश्री डालेश्वरी देवहारे शामिल रहे।

पहला कॉलम...

आसरा में विशाल भंडारा का हुआ आयोजन

डोंगरगांव (दावा)। शरद पूर्णिमा के शुभ अवसर पर शिव शक्ति शारदा उत्सव समिति गौठान चौक आसरा और जनसहयोग से बुधवार को विशाल भंडारा का आयोजन किया गया, दोपहर 3 बजे से प्रारंभ हुआ यह भंडारा देर रात तक निरंतर चलता रहा। शिव शक्ति शारदा उत्सव समिति के अध्यक्ष पुरुषोत्तम विश्वकर्मा ने बताया कि भंडारे में खीर, पूड़ी, दाल, चावल, सब्जी माता को भोग लगा कर श्रद्धालुओं को पड़ोसा गया और इस विशाल भंडारे में लगभग चार हजार श्रद्धालुओं प्रसाद ग्रहण किया।

घनाराम चंद्रवंशी ने बेलगांव सहकारी समिति का कार्यभार संभाला

डोंगरगढ़ (दावा)। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक डोंगरगढ़ के अंतर्गत आने वाले सेवा सहकारी समिति मर्या. बेलगांव का कार्यभार घनाराम चंद्रवंशी ने संभाला। विगत दिनों बेलगांव सोसायटी के प्रबंधक येतराम जंघेल के सेवानिवृत्त हो जाने से सोसायटी का कार्यभार प्रबंधक की नियुक्ति तक कंप्यूटर ऑपरेटर द्वारकादास मानिकपुरी संभाल रहे थे। आगामी धान खरीदी प्रारंभ होने के पूर्व समिति में कार्यरत लेखापाल/सहा. समिति प्रबंधक घनाराम चंद्रवंशी को सोसायटी बेलगांव का प्रबंधक नियुक्त कर दिया गया।

मिलनसार मृदुभाषी घनाराम चंद्रवंशी ने इसी समिति में विक्रेता पद पर समिति से कार्य प्रारंभ किया था। आदेश उपरांत घनाराम ने समिति प्रबंधक का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। श्री चंद्रवंशी के प्रबंधक पद पर कार्य ग्रहण करने पर बेलगांव के सरपंच छबिलराम साहू, धरमचंद वर्मा, संतोष गीर गोस्वामी, दिनेतु प्रकाश जांगड़े, नेतराम साहू सहकारी समिति के अंतर्गत आने वाले विभिन्न ग्रामों के किसानों ने बधाई दी है तथा कहा है कि इनकी सेवाओं का पूरा लाभ समिति के अंतर्गत आने वाले किसानों को लाभ मिलेगा। कुछ किसानों ने धनाराम चंद्रवंशी को प्रभार सौंपे जाने पर बैंक के मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रभात मिश्रा के प्रति भी आभार व धन्यवाद व्यक्त किया है।

ग्राम माडिंगपीडिंग में शासकीय भवन निर्माण के लिये आबंटित भूमि पर दावा आपत्ति आमंत्रित

मोहला (दावा)। महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत ग्राम माडिंगपीडिंग तहसील मोहला में स्थित शासकीय भूमि खसरा नंबर 360, रकबा 0.345 पर बालक कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड तथा शासकीय बाल देखरेख भवन निर्माण कार्य के लिए भूमि आबंटित किया गया है। उक्त संबंध में किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो वे 25 अक्टूबर तक तहसील मोहला में दावा आपत्ति कर सकते हैं। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

सेवा सहकारी समिति कलंगपुर में धान खरीदी की तैयारियों का कलेक्टर ने लिया जायजा

धान उपार्जन केन्द्र में सभी व्यवस्था सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

बालोद(दावा)। कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज गुण्डरदेही विकासखण्ड के ग्राम कलंगपुर में सेवा सहकारी समिति के धान उपार्जन केन्द्र का निरीक्षण कर जायजा लिया। उन्होंने वहाँ धान खरीदी हेतु की जा रही तैयारियों का अवलोकन किया। उन्होंने केन्द्र में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उपस्थित उप पंजीयक सहकारी संस्थाएं राजेन्द्र राठिया ने बताया कि धान उपार्जन केन्द्र कलंगपुर में आसपास के चार ग्रामों के किसान धान विक्रय हेतु आते है। जिसमें ग्राम कलंगपुर, चारभाठा, खल्लारी और मुंडेरा के 1391 किसान शामिल है। जिनके द्वारा 1519.9 हेक्टेयर में धान की खेती की गई है। उन्होंने बताया कि धान खरीदी केन्द्र में सभी आवश्यक मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध है। धान खरीदी हेतु बारदाने, किसानों के लिए बैठक, शौचालय, पेयजल आदि की पूरी व्यवस्था है। कलेक्टर चन्द्रवाल ने समिति प्रबंधक से कहा कि केन्द्र में सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें जिससे धान विक्रय हेतु आने वाले किसानों को किसी प्रकार की समस्या न हो। इस अवसर पर एसडीएम सुरेश साहू मौजूद थे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयंती पर विज्ञान संकाय ने मनाया विश्व विद्यार्थी दिवस

सभी प्राध्यापकों ने कलाम जी के जीवन से जुडे संघर्षों पर प्रकाश डाला

डोंगरगढ़ (दावा)। शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोंगरगढ़ में प्राचार्य डॉ. ई.व्ही रेवती के दिशा-निर्देशन में 15 अक्टूबर को विज्ञान संकाय द्वारा डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयंती के अवसर पर विश्व विद्यार्थी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. रेवती एवं प्राध्यापकों ने कलाम जी के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर किया। विद्यार्थियों ने डॉ. कलाम की जीवनी एमएससी वनस्पति विज्ञान से रामेश्वरी यादव एवं प्राणीशास्त्र से उमा पाल, एमएससी प्राणीशास्त्र से मोनिका देवांगन ने अपने विचार रखे। सभी प्राध्यापकों ने कलाम जी के जीवन से जुड़े संघर्षों पर प्रकाश डाला।

जिसमें भौतिक शास्त्र विभाग से रोशन ने उनके जीवन की एक मुख्य घटना जिसमें उन्होंने आत्महत्या करने का प्रयास किया था के विषय मे बताया। रसायनशास्त्र विभाग से ओ.पी. वर्मा ने कलाम जी के कैसे एक साधारण से एवं नीचे तबके से उठकर एक राष्ट्र के राष्ट्रपति बनने के संघर्ष से विद्यार्थियों को सीख लेने प्रेरित किया। वनस्पति शास्त्र विभाग से अविनाश सिंह ने कलाम जी के द्वारा लिखे पुस्तकों एवं उनके संघर्ष काल एवं उस संघर्ष में उनका साथ देने वाले व्यक्तियों के बारे मे अवगत कराया जिनकी साथ के बिना कलाम जी की संघर्ष यात्रा अधूरी होती। साथ ही अंग्रेजी विभाग से गुलशन सिन्हा ने भी कलाम जी के अनोखे व्यक्तित्व के विषय मे व्याख्यान दिया। संस्था की प्राचार्या श्रीमति ई.व्ही. रेवती जी ने विद्यार्थियो को कलाम जी की तरह आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया एवं कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की। साथ ही प्राणीशास्त्र विभाग से सुश्री ऋचा अग्रवाल एवं गोकुल साहू, रसायन शास्त्र विभाग से श्रीमती सोनाली लोया, गणित विभाग से निर्वेद शर्मा, भौतिक शास्त्र विभाग से सुश्री राजेश्वरी ठाकुर आदि भी उपस्थित थे। अंत में रसायनशास्त्र विभाग से गौरव तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन कर आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वनस्पति शास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रभात बैस ने किया।

माता देवालय दर्शन यात्रा का हुआ शुभारंभ, स्टेट हाइवे घंटों जाम

डोंगरगांव (दावा)। शहर के मंडी प्रांगण से कालेज रोड शीतला मंदिर होते हुए माता देवालय दर्शन यात्रा निकली गई. यात्रा के संयोजक व संरक्षक विधायक दलेश्वर साहू ने एक विज्ञप्ति में बताया कि लोक सभ्यता में पूजे जाने वाले माता देवालय के संदर्भ युवा पीढ़ी को परिचय कराने निकले गए इस धार्मिक यात्रा में पूरे छत्तीसगढ़ के देवी देवताओं का परिचय कराया गया है, जिसमें सहाड़ा देव, बघारन पाठ, भैंसासुर, कंकालीन माता सहित सभी देवी देवताओं की झाकियों को शामिल किया गया है। इस यात्रा का शुभारंभ डोंगरगांव से किया गया है, जो शीतला मंदिर, चंडी मंदिर, पुराना थाना रोड होते हुए शीतला मंदिर, बरगांव, गु.नवागांव, जामसरार होते हुए देर शाम ग्राम मनेरी पहुंची. मिली जानकारी के अनुसार आगामी दिनों में माता देवालय दर्शन यात्रा विभिन्न चरणों में आयोजित की जाएगी.

स्टेट हाइवे हुआ घंटों जाम

माता देवालय दर्शन यात्रा का काफिला कॉलेज रोड से होते हुए जैसे ही मुख्य सड़क पर पहुंचा तो स्टेट हाइवे में जाम की स्थिति बन गई. बता दें कि डोंगरगांव से होकर चौकी की ओर जाने वाली एक मात्र सड़क है, जिसमें डोंगरगांव शहर का हिस्सा वर्तमान में वर्षों से निर्माणाधीन है. वहीं डोंगरगांव शहर से बड़े वाहनों को बाहर निकलने के लिए कोई भी रिंग रोड या अन्य मार्ग अब तक नहीं है और कोई भी आयोजन में निकले गए यात्रा या जुलूस के चलते स्टेट हाइवे पर यातायात बाधित हो जाता है, जिससे शहरवासियों के साथ सभी वाहन चालकों को खासा परेशानी का सामना करना पड़ता है.

नगरीय निकाय आम निर्वाचन-2024 हेतु निर्वाचक नामावली का हुआ प्रकाशन

0 कलेक्टर ने प्रेसवार्ता कर छत्तीसगढ़ द्वारा जारी कार्यक्रम की दी जानकारी
0 नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2024—25 के लिए 16 अक्टूबर को हुआ प्रकाशन, दावा—आपत्ति 23 तक

खैरागढ़ (दावा)। जिला निर्वाचन अधिकारी (स्थानीय) एवं कलेक्टर चन्द्रकांत वर्मा ने आगामी त्रि–स्तरीय पंचायत एवं नगरपालिका के आम निर्वाचन 2024-25 हेतु द्वितीय चरण के तहत निर्वाचक नामावली पुनरीक्षण कार्यक्रम के संबंध में आज जिला कार्यालय सभाकक्ष में प्रेसवार्ता कर मीडिया को संबोधित किया। मीडिया से मुखातिब होते हुए उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा 10.09.2024 को नगरीय निकाय एवं त्रि-स्तरीय पंचायतों के आम निर्वाचन 2024-25 हेतु फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली बनाये जाने संबंधी 'समय अनुसूची' जारी किया गया है। जिसके तहत प्रथम चरण की कार्यवाही 18 सितंबर से 14 अक्टूबर तक पूर्ण कर लिया गया है। इसी कड़ी में द्वितीय चरण के कार्यक्रम के तहत नगरीय निकाय एवं त्रि-स्तरीय पंचायत के समय अनुसूची पृथक-पृथक है।

नगरीय निकाय के निर्वाचक नामावली का प्रारंभिक प्रकाशन बुधवार 16 अक्टूबर 2024 को अनुविभागीय अधिकारी, तहसील कार्यालय, नगर पंचायतों में किया गया है, दावा–आपत्ति प्राप्त करने की तिथि 16 अक्टूबर से 23 अक्टूबर दोपहर 03 बजे तक है, जिसकी दावा–आपत्ति प्राप्त करने के लिए छुईखदान और गंडई नगर पंचायत के 15-15 वार्डो में स्थान चयनित किया गया है। जिसमें परिवर्धन, संशोधन, विलोपन के प्रकरण, दावा-आपत्ति किये जाएंगे। जबकि दावा–आपत्ति निपटारे की अंतिम तिथि 29 अक्टूबर, प्रारूप क-1 में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी/सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को दावा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 04 नवंबर है। वही प्ररूप क-1 में प्राप्त दावा का निराकरण करने की अंतिम तिथि 08 नवंबर और दावे/आपत्तियों के निराकरण आदेश के विरूद्ध अपील करने की अंतिम तिथि निराकरण आदेश पारित होने के 05 दिवस के भीतर होगी। साथ ही परिवर्धन, संशोधन, विलोपन के प्रकरणों की प्रविष्टि सॉफ्टवेयर में 13 नवंबर तक किया जाएगा। वही चेकलिस्ट का निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा जाच करवाना तथा पीडीएफ मुद्रण हेतु जिला कार्यालय को 16 नवंबर तक सौंपा जाएगा। अनुपूरक सूची का मुद्रण कराना और अनुपूरक सूची को मूल सूची के साथ 19 नवंबर को सलग्न किया जाएगा और 22 नवंबर को निर्वाचक नामावली का अंतिम प्रकाशन होगा।

इसी तरह त्रि-स्तरीय पंचायतों के निर्वाचक नामावली का प्रारंभिक प्रकाशन 24 अक्टूबर को अनुविभागीय अधिकारी, तहसील कार्यालय, जनपद पंचायतों में किया जाएगा। वही दावा–आपत्ति प्राप्त करने की स्थिति 24 अक्टूबर से 29 अक्टूबर दोपहर 03 बजे तक तक है। दावा आपत्ति प्राप्त करने के लिए दोनों विकासखंडों के सभी 221 ग्राम पंचायतों के ग्राम पंचायत भवन में किया गया है, जिसमें परिवर्धन, संशोधन, विलोपन के प्रकरण, दावा-आपत्ति किये जाएंगे। जबकि दावा–आपत्ति निपटारे की अंतिम तिथि 04 नवंबर, प्रारूप क्र-1 में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी/सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को दावा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 08 नवंबर है। वहीं प्रारूप क्र-1 में प्राप्त दावा का निराकरण करने की अंतिम तिथि 14 नवंबर और दावे/आपत्तियों के निराकरण आदेश के विरूद्ध अपील करने की अंतिम तिथि निराकरण आदेश पारित होने के 05 दिवस के भीतर होगी। साथ ही परिवर्धन, सशोधन, विलोपन के प्रकरणों की प्रविष्टि सॉफ्टवेयर में 19 नवंबर तक किया जाएगा। वही चेकलिस्ट का निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा जांच करवाना तथा पीडीएफ मुद्रण हेतु जिला कार्यालय को 22 नवंबर तक सौंपा जाएगा। अनुपूरक सूची का मुद्रण कराना और अनुपूरक सूची को मूल सूची के साथ 25 नवंबर को संलग्न किया जाएगा और 29 नवंबर को निर्वाचक नामावली का अंतिम प्रकाशन होगा।

फटाका दुकानों के लिए भू-आबंटन 25 को

डोंगरगांव (दावा)। निकाय क्षेत्र के पटाखा व्यवसायियों को नगर पंचायत डोंगरगांव व्दारा भूखण्ड का आबंटन आगामी 25 अक्टूबर को लाटरी के माध्यम से किया जावेगा, उक्ताशय की विज्ञप्ति जारी करते हुए नगर पंचायत प्रशासन ने बताया कि लायसेंसी पटाखा व्यवसायियों व्दारा डोंगरगांव में दुकान लगाने हेतु वर्तमान नवीनीकृत लायसेंस की प्रतिलिपी 24 अक्टूबर तक निर्धारित शुल्क के साथ जमा कराया जावेगा, वहीं समयावधि पश्चात प्राप्त आवेदनों पर कोई विचार नहीं होगा। वहीं दुकानों का आबंटन लाटरी के माध्यम से 25 अक्टूबर को दोपहर 3 बजे नगर पंचायत कार्यालय में कराया जावेगा।

छात्र-छात्राओं को दिया गया साबुन, निरमा एवं फिनायल बनाने का प्रशिक्षण

डोंगरगढ़(दावा)। शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोंगरगढ़ में प्राचार्य डॉ. ई.व्ही. रेवती के मार्गदर्शन में महाविद्यालय के कैरियर गाईडेंस सेल एवं महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में एक दिवसीय व्याख्यान सह प्रशिक्षण आयोजित किया गया। व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में पद्मश्री श्रीमती फुलबासन बाई यादव एवं उनके सहयोगी श्रीमती जानिया बाई साहू एवं मुख्य प्रशिक्षक के रूप में पोषण सिन्हा उपस्थित थे।

कार्यकम का शुभारंभ समस्त अतिथियों को महाविद्यालय की प्राचार्य एवं प्राध्यापकों द्वारा पौधा भेंटकर स्वागत किया गया। पद्मश्री फूलबासन बाई यादव ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे आसपास उपलब्ध छोटी-मोटी वस्तुओं से ही दिनचर्या की जरूरतमंद समान बनाया जा सकता है। साथ ही साथ सहकारिता समिति द्वारा बनाये गये उत्पाद के लिए बाजार उपलब्ध कराना उसका विज्ञापन करना और ऑनलाइन कैसे सामान को बेचा जा सके इसके बारे में जानकारी प्रदान। मुख्य प्रशिक्षक पोषण ने छात्र-छात्राओ के सामने साबुन एवं निरमा पाउडर एवं फिनाईल बनाने की प्रक्रिया को विस्तार से प्रयोग कर दिखाया। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों को महाविद्यालय की ओर से स्मृतिचिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन गुलशन सिन्हा एवं आभार प्रदर्शन वेदप्रकाश साहु ने किया।

कलेक्टर ने की महिला बाल विकास विभाग के कामकाज की समीक्षा

पोषण ट्रैकर ऐप में डाटा एंट्री कार्य में कमी पर अप्रसन्नता व्यक्त किया

मोहला (दावा)। कलेक्टर एस.जयवर्धन ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में महिला एवं बाल विकास विभाग के कामकाज की समीक्षा की। उन्होंने परियोजना एवं सेक्टर वार आंगनबाड़ी केंद्रों के संचालन एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में अध्यनरत बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण की समीक्षा की। उन्होंने परियोजना अधिकारी एवं पर्यवेक्षकों को निर्देशित करते हुए कहा कि सतत रूप से आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण करें। हर एक बच्चा को लक्ष्य में रखकर बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर का मूल्यांकन करने कहा है। कुपोषित बच्चों को सुपोषण की श्रेणी में लाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया गया है कि सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण युक्त आहार का वितरण करें। बच्चों के वजन एवं उसकी ऊंचाई की नाप हर माह करें।

बैठक में समीक्षा के दौरान पाया गया कि कुछ आंगनबाड़ी केंद्रों के कार्यकर्ताओं के द्वारा पोषण ट्रैकर ऐप में डाटा एंट्री का कार्य को प्राथमिकता नहीं दिया जा रहा है, इससे कलेक्टर ने अप्रसन्नता जाहिर करते हुए संबंधित आंगनबाड़ी केंद्र के कार्यकर्ता पर नियमानुसार डाटा एंट्री कार्य को प्राथमिकता देने निर्देशित करने कहा है। डाटा एंट्री कार्य में प्राथमिकता नहीं दिए जाने की स्थिति में संबंधित कार्यकर्ता पर कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने बैठक में महिला बाल विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि गर्भवती माता, किशोरी बालिका एवं बच्चों के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए विभागीय योजनाओं का क्रियान्वयन करें। आंगनबाड़ी केंद्र के सभी बच्चों का आधार कार्ड बनाने के भी निर्देश दिए गए हैं। बैठक में महिला बाल विभाग के अधिकारी चन्द्रशेखर मिश्रा सहित ब्लाक स्तरीय परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पहला कॉलम...

हूतियों के खिलाफ अमेरिका ने भूमिगत बंकरों पर बी-2 बमवर्षक से बरसाए बम

दुबई। अमेरिका ने हूती विद्रोहियों के खिलाफ बड़ी सैन्य कार्रवाई की है। अमेरिका ने लंबी दूरी की मारक क्षमता वाले च्बी-2ज् बमवर्षक विमानों से यमन के हूती विद्रोहियों के भूमिगत बंकरों को निशाना बनाकर हवाई हमले किए हैं। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार तड़के इस बारे में जानकारी दी है। अधिकारियों ने बताया कि यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इस हमले से कितना नुकसान हुआ है। यमन के हूती विद्रोहियों को निशाना बनाने के लिए च्बी-2 स्पिरिटज् का इस्तेमाल करना आम बात नहीं है। च्बी-2 स्पिरिटज् ऐसा बमवर्षक है जिसमें दुश्मन की नजर में आए बिना हमला करने की क्षमता है। गाजा पट्टी में हमास के खिलाफ इजरायल के हमलों के विरोध में हूती विद्रोही लाल सागर में कई महीनों से पोतों को निशाना बना रहे हैं। हूतियों के 'अल-मसीरा' समाचार चैनल ने बताया कि यमन की राजधानी सना के आसपास हवाई हमले हुए हैं। साल 2014 से हूती विद्रोहियों ने सना पर कब्जा कर रखा है। इसमें बताया गया कि हूती विद्रोहियों के गढ़ सादा के आसपास भी हवाई हमले हुए हैं, हालांकि इसने नुकसान या हताहतों के बारे में तत्काल कोई जानकारी नहीं दी है।

पुलिस ने सरफराज-ताबिल का किया एनकाउंटर

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के बहराइच में प्रतिमा विर्सजन के दौरान दो समुदाय लोग आमने-सामने आ गए थे। पुलिस ने इस मामले के मुख्य आरोपी सरफराज और फहीम का एनकाउंटर कर दिया। ये दोनों आरोपी नेपाल भागने के चक्कर में थे। बहराइच हिंसा के बाद से पुलिस लगातार इन आरोपियों की तलाश कर रही थी। बताया जा रहा है कि बहराइच हिंसा में मारे गए रामगोपाल मिश्र की हत्या में सरफराज और फहीम का हाथ था। इन दोनों ने ही अपने दोस्तों के साथ मिलकर रामगोपाल पर फायरिंग की थी। पुलिस लगातार दोनों आरोपियों की लोकेशन ट्रैक कर रही थी। इस बीच पुलिस ने मुठभेड़ में दोनों आरोपियों का एनकाउंटर कर दिया। बहराइच हिंसा मामले में पुलिस ने अबतक 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस को देखकर सरफराज और फहीम भागने लगे। इस दौरान दोनों ओर से फायरिंग हुई। सरफराज और फहीम के पैर में पुलिस की गोली लगी, जिससे दोनों आरोपी गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने घायल दोनों आरोपियों को जिला अस्पताल में एडमिट कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है।

महंगा हुआ सोना-चांदी

नई दिल्ली। दिवाली से पहले करवा चौथ का त्योहार आ रहा है। 20 अक्टूबर 2024 को करवा चौथ का पर्व है। इस दिन सुहागिन

महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती हैं। इससे पहले ढेरों शॉपिंग भी करती हैं और उनकी शॉपिंग लिस्ट में सोने-चांदी के आभूषण भी शामिल होते हैं। हालांकि, त्योहार के आने तक सोना-चांदी अगर महंगा हो गया तो पतियों की जेब पर अच्छा वजन पड़ सकता है। पिछले दो दिनों में सोने और चांदी की कीमत में बढ़ोतरी हुई है। आइए आज के सोने-चांदी के ताजा भाव जानते हैं। आज दूसरे दिन सोने और चांदी की कीमत में बढ़ोतरी देखी गई है। 22 कैरेट सोना 200 रुपये बढ़कर 71,400 रुपये की जगह 71,600 रुपये प्रति 10 ग्राम और 24 कैरेट सोना 220 रुपये बढ़कर 77,890 रुपये की जगह 78,110 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया है। चांदी की कीमत में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं हुआ है। प्रति किलोग्राम चांदी की कीमत 97,000 रुपये है।

पंत से छीनी जाएगी दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी?

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 के मेगा ऑक्शन और रिटेंशन से पहले दिल्ली कैपिटल्स से जुड़ी कई तरह की खबरें सामने आ चुकी हैं। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन से पहले खबर है कि दिल्ली कैपिटल्स ऋषभ पंत को सबसे ज्यादा कीमत पर रिटेन तो कर सकती है, लेकिन उनसे कप्तानी छीन सकती है। आईपीएल 2024 में टीम के कप्तान ऋषभ पंत ही थे, लेकिन अगले सीजन में कोई और दिल्ली की टीम का कप्तान हो सकता है। दिल्ली कैपिटल्स के दो मालिक हैं और दोनों दो-दो साल टीम चलाते हैं। ऐसे में कुछ फैसले कई बार अधर में लटके रहते हैं। इस बार भी कुछ ऐसा ही दिखाई दे रहा है। काफी हद तक ऐसा हो सकता है कि ऋषभ पंत आगामी सीजन में दिल्ली की कप्तानी न करें। ऋषभ पंत को दिल्ली कैपिटल्स 18 करोड़ रुपये में रिटेन कर सकती है, लेकिन कप्तानी की जिम्मेदारी अक्षर पटेल को सौंपी जा सकती है।

दूसरे दिन का खेल समाप्त, न्यूजीलैंड का पहली पारी में स्कोर 180/3, 134 रनों की बढ़त

बेंगलुरू। भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन का खेल समाप्त हो गया है। पहली पारी में भारत को 46 रन पर समेटने के बाद न्यूजीलैंड ने अच्छी बल्लेबाजी की और स्टंप तक पहली पारी में तीन विकेट पर 180 रन बनाकर 134 रनों की बढ़त हासिल कर ली है। दिन के खेल की समाप्ति तक रचिन रवींद्र 22 रन और डेरिल मिचेल 14 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। भारत के लिए अब तक रविचंद्रन अश्विन, कुलदीप यादव और रवींद्र जडेजा को एक-एक विकेट मिले हैं।

भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहले दिन का खेल बारिश के कारण बिना टॉस हुए ही समाप्त करना पड़ा था। दूसरे दिन मैच 15 मिनट जल्दी शुरू किया गया और भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का यह निर्णय गलत रहा क्योंकि भारतीय बल्लेबाजी क्रम ताश के पत्तों की तरह बिखर गया और टीम के 11 खिलाड़ी मिलकर 50 रन भी नहीं बना सके। खराब बल्लेबाजी के बाद टीम इंडिया की गेंदबाजी भी अच्छी नहीं रही। कुल मिलाकर भारत के लिए यह दिन अच्छा नहीं रहा।

न्यूजीलैंड की ओर से कप्तान टॉम लाथम और डेवॉन कॉन्वे ने टीम को शानदार शुरुआत दिलाई और पहले विकेट के लिए 67 रन जोड़े। लाथम 15 रन बनाकर कुलदीप यादव का शिकार बने। इसके बाद कॉन्वे ने विल यंग के साथ मिलकर पारी को संभाला। यंग जडेजा की गेंद पर 33 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने शतक की ओर बढ़ रहे कॉन्वे को बोल्ड कर भारत को तीसरी सफलता दिलाई और कॉन्वे को शतक लगाने से रोका। कॉन्वे 105 गेंदों पर 11 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 91 रन बनाकर पवेलियन लौटे।

ऋषभ पंत चोटिल- दाएं घुटने में चोट, लंगड़ाते हुए बाहर गए

विकेटकीपर ऋषभ पंत चोटिल हुए हैं। उनके दाएं घुटने में चोट लगी है। उन्हें लंग?ाते हुए बाहर जाते देखा गया है। यह वही घुटना है, जिसका कार एक्सीडेंट के बाद ऑपरेशन हुआ था।

आखिरी सत्र में मिले भारत को दो विकेट

इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की टीम ने टॉम लैथम (15) के रूप में पहला विकेट गंवाया। कुलदीप यादव ने भारत को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद डेवोन कॉनवे और विल यांग ने पारी की जिम्मेदारी उठाई। दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 75 रन की साझेदारी हुई। डेवोन कॉनवे 91 रन और विल यांग 33 रन बनाकर आउट हुए। अश्विन और जडेजा ने भारत को आखिरी सत्र में दो विकेट दिलाए।

हसीना के खिलाफ जारी हुआ गिरफ्तारी वारंट

ढाका। बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने गुरुवार को देश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना और 45 अन्य लोगों के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। जिन लोगों के खिलाफ वारंट जारी किया गया है, उनमें आवामी लीग के कई शीर्ष नेता शामिल हैं। इन पर हाल ही में हुए छात्र आंदोलन के दौरान मानवता के खिलाफ कथित तौर पर अपराध का आरोप है।

जस्टिस मोहम्मद गोलम मुर्तजा मजूमदार की अध्यक्षता वाले न्यायाधिकरण ने अभियोजन पक्ष की ओर से आरोपियों के खिलाफ दायर गिरफ्तारी की मांग वाली दो याचिकाओं को लेकर यह आदेश जारी किया। मुख्य अभियोजक मोहम्मद ताजुल इस्लाम ने यह जानकारी दी। न्यायाधिकरण ने अफसरों को शेख हसीना समेत सभी 46 लोगों को 18 नवंबर तक गिरफ्तार करने और पेश करने का आदेश दिया। गौरतलब है कि बांग्लादेश में छात्र आंदोलन में जबरदस्त हिंसा हुई थी। शेख हसीना सरकार पर इस हिंसा के दौरान छात्र आंदोलन को दबाने की कोशिशों के आरोप लगे थे। इस आंदोलन में हिंसा के चलते सैकड़ों लोगों की जान भी गई थी। हालांकि, प्रदर्शनों के बढ़ने के बाद हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था और वे भारत रवाना हो गई थीं। मौजूदा समय में शेख हसीना भारत में ही हैं। शेख हसीना के भारत रवाना होने के बाद बांग्लादेश में नोबेल विजेता और अर्थशास्त्री मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन हुआ।

रूस ने यूक्रेन के ऊर्जा संयंत्रों पर ड्रोन और मिसाइल से किया हमला

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है और फिलहाल इसके थमने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। इस बीच रूस की तरफ से यूक्रेन पर ताबड़तोड़ हमले जारी है। रूसी सेना ने बुधवार रात यूक्रेन पर 56 से अधिक ड्रोन और मिसाइल हमले किए। रूस ने इस हमले में मायकोलाइव के दक्षिणी क्षेत्र में ऊर्जा संयंत्रों को निशाना बनाया है।

मायकोलाइव के क्षेत्रीय गवर्नर विटाली किम ने कहा कि हमले की वजह से कुछ इलाकों में बिजली सप्लाई बाधित हुई है। इस दौरान उन्होंने बताया कि रूस की तरफ से किए गए इन हमलों में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। यूक्रेन की वायुसेना ने भी फ्रंट लाइन के पास के क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटी पर पांच हमलों की सूचना दी है।

यूक्रेन की सेना का कहना है कि हमले के दौरान 22 ड्रोन को मार गिराया गया और 27 ड्रोन का पता नहीं चल पाया है। कीव के मेयर विटाली क्लिट्स्को ने कहा कि एक ड्रोन का मलबा राजधानी में किंडरगार्टन के पास गिरा। मेयर ने कीव और आसपास के क्षेत्रों में हताहतों या को कोई नुकसान नहीं होने की सूचना नहीं दी। इस बीच यहां यह भी बता दें कि, जंग के बीच अमेरिका एक बार फिर यूक्रेन की मदद के लिए आगे आया है। राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कीव के लिए 425 मिलियन डॉलर के हथियार पैकेज की घोषणा की है। पैकेज में वायु रक्षा प्रणालियां, बख्तरबंद वाहन समेत अन्य हथियार शामिल हैं।

लाहौर में भड़की हिंसा से एक सुरक्षाकर्मी की मौत

नई दिल्ली। पाकिस्तान के पंजाब के गुजरात जिले में एक सुरक्षा गार्ड की हत्या कर दी गई और संबंधित निजी कॉलेज के कई परिसरों में तोड़फोड़ की गई और आग लगा दी गई है। ये वारदात तब हुई है, जब लाहौर जिले में एक दुष्कर्म की घटना के बाद बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया जा रहा था।

पाकिस्तान के लाहौर में कथित दुष्कर्म की घटना के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया गया। इस दौरान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के कई शहरों में सार्वजनिक और निजी संस्थानों में हिंसा, तोड़फोड़ और आगजनी की कई घटनाएं सामने आईं। वहीं पाकिस्तान के पंजाब के गुजरात जिले में एक सुरक्षा गार्ड की हत्या कर दी गई और संबंधित निजी कॉलेज के कई परिसरों में तोड़फोड़ की गई और आग लगा दी गई। इस दौरान प्रदर्शनकारियों पर कानून प्रवर्तन एजेंटों के साथ झड़प और पंजाब ग्रुप ऑफ कॉलेज की संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगा है। जबकि गार्ड की मौत के बाद हत्या का मामला दर्ज किया गया। जानकारी के मुताबिक लाहौर में, छात्र पंजाब कॉलेज के कैंपस 11 में एकत्र हुए, इस दौरान उन्होंने पार्किंग क्षेत्र में आग लगाई, खिड़कियां तोड़ दीं और बड़े स्तर पर कॉलेज को नुकसान पहुंचाया।

भारत नहीं तो चैंपियंस ट्रॉफी नहीं वाले बयान से बढ़ी पाकिस्तान की टेंशन

नई दिल्ली। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आयोजन अगले साल फरवरी और मार्च महीने में होना है. कई महीनों से आईसीसी भी इस इंतजार में है कि कब टीम इंडिया के पाकिस्तान जाने को लेकर कोई अपडेट आए. भारत की ओर से स्पष्ट रुख सामने ना आने के कारण आईसीसी और टूर्नामेंट में भाग ले रहे अन्य देशों की चिंता भी बढ़ी हुई है. इस बीच इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर चिंता व्यक्त की है.

चैंपियंस ट्रॉफी पर श्वष्टक्च के चीफ रिचर्ड गूल्ड ने कहा, भारत के बिना टूर्नामेंट, मैं ऐसा सोचता भी नहीं. यदि आप भारत और पाकिस्तान के बिना चैंपियंस ट्रॉफी खेलते हैं तो ब्रॉडकास्टिंग राइट्स ही नहीं रहेंगे. यदि टूर्नामेंट में भारत नहीं रहेगा तो यह क्रिकेट के खेल के लिए अच्छी खबर नहीं होगी. हम सभी इंतजार कर रहे हैं कि भारत चैंपियंस ट्रॉफी खेलने के लिए पाकिस्तान जाएगा या नहीं.÷

रिचर्ड गूल्ड का मानना है कि भारत चैंपियंस ट्रॉफी खेलने के लिए पाकिस्तान जाता है या नहीं, इसमें ढ्ढष्टष्ट चेयरमैन चुने जा चुके जय शाह का भी बहुत ब?ा हाथ रहेगा. रिचर्ड ने विश्वास जताया है कि जय शाह जरूर कोई ना कोई रास्ता निकाल लेंगे और उन्हें क्रिकेट की बेहतरी के लिए रास्ता निकालना ही होगा. कुछ हफ्तों पहले BCCI के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने कहा था कि भारतीय टीम विदेश में क्रिकेट खेलने जाएगी या नहीं, यह फैसला पूर्णतः भारत सरकार के हाथों में है लेकिन सरकार द्वारा अभी तक कुछ स्पष्ट रुख सामने नहीं रखा गया है. चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के प्रस्तावित शेड्यूल अनुसार टीम इंडिया के सभी मैच लाहौर में खेले जाने हैं.

भारत का निर्यात वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही में 4.8 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली । भारत का निर्यात वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही यानी अप्रैल से सितंबर तक की अवधि में सालाना आधार पर 4.86 प्रतिशत बढ़कर 393.22 अरब डॉलर हो गया है। यह पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 375 अरब डॉलर था। सरकार द्वारा बुधवार को जारी किए गए डेटा में यह जानकारी सामने आई। चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीने में कुल माल निर्यात की संचयी वैल्यू 213.22 अरब डॉलर रही। वित्त वर्ष 2022-23 की अप्रैल-सितंबर अवधि के दौरान यह आंकड़ा 211.08 अरब डॉलर था। इसमें 1.02 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई है। अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान सर्विसेज के निर्यात में 9.81 प्रतिशत का उछाल दर्ज किया गया है। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के मुताबिक, भारत का निर्यात सितंबर में माल और सर्विसेज को मिलाकर 65.19 अरब डॉलर रहने की उम्मीद है। इसमें सालाना आधार पर 3.76 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि देखी गई है। बीते महीने भारत के निर्यात में इंजीनियरिंग गुड्स, जैविक और अजैविक रसायन, प्लास्टिक और लिनोलियम, दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स और सभी प्रकार के रेडीमेड गारमेंट्स (आरएमजी) आदि प्रमुख थे। सेक्टर के हिसाब से देखें तो सितंबर में इंजीनियरिंग गुड्स का निर्यात 10.55 प्रतिशत बढ़कर 8.89 अरब डॉलर से 9.82 अरब डॉलर हो गया।

रेलवे ने एडवांस टिकट बुकिंग की लिमिट घटाई

नई दिल्ली। भारतीय रेल ने यात्री ट्रेनों में एडवांस टिकट बुकिंग का समय 120 दिनों से घटाकर 60 दिन करने का फैसला किया है। रेलवे ने बताया कि टिकट बुकिंग के लिए नए समय का नियम 1 नवंबर, 2024 से लागू होगा।

रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर (पैसेंजर मार्केटिंग) संजय मनोचा ने बताया कि 1 नवंबर, 2024 से ट्रेनों में एडवांस रिजर्वेशन की मौजूदा लिमिट 120 दिनों से घटाकर 60 दिन (यात्रा की तारीख को छोड़कर) कर दी जाएगी और बुकिंग भी इस नए नियम के अनुसार ही की जाएगी। संजय मनोचा ने कहा, हालांकि, 120 दिनों के एआरपी (एडवांस रिजर्वेशन पीरियड) के तहत 31 अक्टूबर, 2024 तक की गई सभी बुकिंग बरकरार रहेंगी। लेकिन 60 दिनों के एआरपी से परे की गई बुकिंग को कैंसिल करने की अनुमति होगी।

ताज एक्सप्रेस, गोमती एक्सप्रेस आदि जैसी कुछ दिन के समय की एक्सप्रेस ट्रेनों के मामले में कोई बदलाव नहीं होगा, जहां पहले से ही एडवांस रिजर्वेशन के लिए कम लिमिट लागू है। विदेशी पर्यटकों के लिए 365 दिनों की लिमिट के मामले में भी कोई बदलाव नहीं होगा। बताते चलें कि लंबी दूरी या किसी खास काम जैसे- शादी, त्योहार, परीक्षा आदि के लिए ट्रेनों में सफर करने वाले लोग कन्फर्म सीट पाने के लिए 4 महीने पहले ही ट्रेनों में सीट बुक कर देते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं हो पाएगा। नए नियम के बाद रेल यात्री ज्यादा से ज्यादा 2 महीने की लिमिट में ही ट्रेनों में सीट बुक कर सकेंगे।

प्रथम पेज का शेष

'याह्या सिनवार मर चुका है..

चेतावनी दी कि वे दक्षिण गाजा में इस्राइल द्वारा तय क्षेत्र में चले जाएं। सिनवार को मारा गयाः इस्राइल प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू- टाइम्स ऑफ इस्राइल की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने पुष्टि की है कि हमास प्रमुख सिनवार मारा गया है। नेतन्याहू ने अपने सहयोगियो को निर्देश दिया है कि वे इस्राइल के बंधकों के परिजनों को हमास प्रमुख की मौत के बारे में सूचित करें।

कौन था याह्या सिनवार?- याह्या सिनवार गाजा पट्टी में हमास का शीर्ष नेता है। इस्राइल में 7 अक्तूबर को हुए हमास के हमले का मास्टरमाइंड भी याह्या सिनवार को माना जाता है। सिनवार को गाजा का सबसे ताकतवर नेता माना जाता है। वह इस्राइल की कैद में रह चुका है और करीब 24 साल जेल में बिता चुका है। इस्राइली सैनिक गिलाद शालित के बदले में इस्राइल की जेल से 1027 फलस्तीनी कैदी रिहा किए गए थे, उन्हीं कैदियों में याह्या सिनवार भी शामिल था। सिनवार ईरान का करीबी है और हमास के कट्टरपंथी समूह का नेतृत्व करता है। याह्या सिनवार इस्राइल की उस सूची में शीर्ष पर है, जिनका इस्राइल खात्मा चाहता है। सात अक्तूबर के हमले में मारे गए थे 1200 से ज्यादा इस्राइली- सात अक्तूबर को दक्षिण इस्राइल में हमास के हमले में 1200 से ज्यादा इस्राइली नागरिक मारे गए थे। जबकि करीब ढाई लोगों को बंधक बनाया गया था। वहीं, इस्राइली जवाबी कार्रवाई में फलस्तीन के अब तक 40 हजार से ज्यादा नागरिक मारे जा चुके हैं। गाजा से शुरू हुए युद्ध की लपटें अब लेबनान और ईरान तक पहुंच गई हैं।

लॉरेंस बिश्नोई गिरोह पर...

कि निज्जर की हत्या से भारत का संबंध जोड़ने वाली देश के पास सिर्फ खुफिया जानकारी है, कोई ठोस सुबूत नहीं। जायसवाल ने गुरुवार सुबह कहा, आज हमने जो सुना है, वह केवल उस बात की पुष्टि करता है जो हम लगातार कहते आ रहे हैं। जायसवाल ने कहा कि कनाडा ने भारत और भारतीय राजनयिकों के खिलाफ लगाए गंभीर आरोपों के समर्थन में हमें कोई भी सुबूत पेश नहीं किया है।

राईस मिलर्स पर एक्शन...

पड़ सकता है। जिससे आम जनता को असुविधा होगी। इसीलिए, समय पर चावल जमा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। कलेक्टर ने अधिकारियों को नियमित रूप से मॉनिटरिंग करने, भौतिक सत्यापन और प्रतिदिन की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

लक्ष्य से कम चावल किया गया जमा- जिला खाद्य अधिकारी - जिला खाद्य अधिकारी सचिन मरकाम ने बताया कि, जिले के राइस मिलर्स द्वारा 3 लाख 32 हजार 114 मी. टन धान का उठाव किया गया है। इसके अनुरूप राइस मिलर्स को 2 लाख 24 हजार 830 मी. टन चावल जमा करना था लेकिन अब तक राइस मिलर्स द्वारा 01 लाख 57 हजार 987 मी. टन चावल जमा किया गया है। कलेक्टर श्री वर्मा ने शेष 66 हजार 847 मी. टन चावल जमा करने के सख्त निर्देश दिए है। उन्होंने आगे कहा कि एफसीइआई में लक्ष्य के अनुरूप 01 लाख 17 हजार 13 मी. टन चावल जमा करना था, जिसमें 69 हजार 213 मी. टन चावल जमा किया गया है। 47 हजार 800 मी. टन चावल जमा करना शेष है। इसी प्रकार नान में लक्ष्य के अनुरूप 01 लाख 07 हजार 817 मी. टन चांवल जमा करना था, जिसमें 88 हजार 770 मी. टन चांवल जमा किया गया है। 19 हजार 47 मी. टन चांवल जमा करना शेष है।

निलंबित आईएएस रानू साहू...

लेकिन अब तक कोई जांच नही की गई। जब रानू साहू को कोल मामले में सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल गई है और लेकिन एसीबी के केस में कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा है। ऐसे में उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करने और सोची समझी साजिश के तहत ऐसा किया जा रहा है।

डीएमएफ घोटाले में पहली गिरफ्तारी..

आयुक्त के पद पर थीं। वह अभी मंत्रालय में उपायुक्त हैं। रिमांड अवधि में माया से घोटाले से संबंधित सवाल और इससे जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों के नाम पूछे जाएंगे। मंगलवार को ईडी की टीम ने माया वारियर को पूछताछ के लिए बुलाया था। वारियर पूर्व सीएम भूपेश बघेल और पूर्व कलेक्टर रहीं रानू साहू की करीबी मानी जाती रही है।

चीफ मिनिस्टर्स कॉन्क्लेव :...

वर्षगांठ जैसे अहम विषय भी चर्चा के मुख्य केंद्र में रहे। छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर राज्य की विकास योजनाओं, कृषि सुधार और औद्योगिक विकास पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने छत्तीसगढ़ में चल रहे विभिन्न परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए केंद्र सरकार के सहयोग की सराहना की और अन्य राज्यों के समकक्षों से भी अनुभव साझा किए।

समीक्षा बैठक : जनसंपर्क सचिव ...

राज्य सरकार के फ्लैगशिप योजनाओं और नवाचारी कार्यों के संबंध में समय-समय पर विशेष लेख नियमित रूप से जारी किया जाए।

शहरी योजनाएं शहरों में, ग्रामीण योजनाओं का गांवों में हो प्रचार- उन्होंने कहा कि, नगरीय योजनाओं से संबंधित होर्डिंग्स नगरीय क्षेत्रों में लगाए जाएं और इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित योजनाओं की होर्डिंग्स तहसील मुख्यालयों और जनपद पंचायतों के परिसर में लगाए जाएं। उन्होंने बैठक में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नेशनल मीडया और क्षेत्रीय स्तर पर प्रिंट मीडिया में प्रचार-प्रसार कार्यों की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश अधिकारियों को दिए। जिला कार्यालयों में सुविधाएं पहुंचाने के निर्देश- उन्होंने बैठक में जिला जनसंपर्क कार्यालयों में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए, जिससे शासन के कार्यों और फ्लैगशिप योजनाओं का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित हो सके। उन्होंने विभागीय सेट-अप की भी जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। सचिव श्री दयानंद ने छत्तीसगढ़ संवाद के विभिन्न शाखाओं का निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में संचालक जनसंपर्क अजय कुमार अग्रवाल, अपर संचालक जेएल दरियो, उमेश मिश्रा, संजीव तिवारी, आलोक देव, संतोष मौर्य, हर्षा पौराणिक सहित विभाग के अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

दुनिया को युद्ध में नहीं, बल्कि ...

उन्हीं प्रेरणाओं को जीते-जीते मुझे बुद्ध के धम्म और शिक्षाओं के प्रसार के इतने सारे अनुभव मिल रहे हैं। श्री मोदी ने कहा, पिछले 10 वर्षों में भारत के ऐतिहासिक बौद्ध तीर्थ-स्थानों से लेकर दुनिया के अलग-अलग देशों तक नेपाल में भगवान बुद्ध की जन्मस्थली के दर्शन, मंगोलिया में उनकी प्रतिमा के अनावरण से लेकर श्रीलंका में वैशाख समारोह तक....मुझे कितने ही पवित्र आयोजनों में शामिल होने का अवसर मिला है। मैं मानता हूँ, संघ और साधकों का ये संग, ये भगवान बुद्ध की कृपा का ही परिणाम है। मैं आज अभिधम्म दिवस के इस अवसर पर भी आप सभी को और भगवान बुद्ध के सभी अनुयायियों को अनेक-अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ। आज शरद पूर्णिमा का पवित्र पर्व भी है। आज ही, भारतीय चेतना के महान ऋषि वाल्मीकि जी की जन्म जयंती भी है। मैं समस्त देशवासियों को शरद पूर्णिमा और वाल्मीकि जयंती की भी बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष अभिधम्म दिवस के आयोजन के एक साथ, एक ऐतिहासिक उपलब्धि भी जुडी है। भगवान बुद्ध के अभिधम्म, उनकी वाणी, उनकी शिक्षाएँ, जिस पाली भाषा में ये विरासत विश्व को मिली हैं, इसी महीने भारत सरकार ने उसे क्लासिकल लैंग्वेज (शास्त्रीय भाषा) का दर्जा दिया है। इसलिए, आज ये अवसर और भी खास हो जाता है। पाली शास्त्रीय भाषा का ये दर्जा, पाली भाषा का ये सम्मान भगवान बुद्ध की महान विरासत का सम्मान है। श्री मोदी ने कहा, आप सभी जानते हैं, अभिधम्म धम्म के निहित है। धम्म को, उसके मूल भाव को समझने के लिए पाली भाषा का ज्ञान आवश्यक है। धम्म यानी, बुद्ध के संदेश, बुद्ध के सिद्धान्त...धम्म यानी, मानव के अस्तित्व से जुडे सवालों का समाधान...धम्म यानी, मानव मात्र के लिए शांति का मार्ग...धम्म यानी, बुद्ध की सर्वकालिक शिक्षाएँ.....और, धम्म यानी, समूची मानवता के कल्याण का अटल आश्वासन! पूरा विश्व भगवान बुद्ध के धम्म से प्रकाश लेता रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुर्भाग्य से पाली जैसी प्राचीन भाषा, जिसमें भगवान बुद्ध की मूल वाणी है, आज सामान्य प्रयोग में नहीं है। भाषा केवल संवाद का माध्यम भर नहीं होती। भाषा सभ्यता और संस्कृति की आत्मा होती है। हर भाषा से उसके मूल भाव जुड़े होते हैं। इसलिए, भगवान बुद्ध की वाणी को उसके मूल भाव के साथ जीवंत रखने के लिए पाली को जीवंत रखना, ये हम सबकी जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि हमारी सरकार ने बड़ी नम्रता पूर्वक ये जिम्मेदारी निभाई है। भगवान बुद्ध के करोडों अनुयायियों को, उनकी लाखों भिक्षुकों की अपेक्षा को पूरा करने का हमारा नम्र प्रयास है। मैं इस महत्वपूर्ण निर्णय के लिए भी आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। भाषा, साहित्य, कला, आध्यात्म...,किसी भी राष्ट्र की ये धरोहरें उसके अस्तित्व को परिभाषित करती हैं। इसीलिए, आप देखिए, दुनिया के किसी भी देश में कहीं कुछ सौ साल पुरानी चीज भी मिल जाती है, तो उसे पूरी दुनिया के सामने गर्व से प्रस्तुत करता है। श्री मोदी ने कहा, देश अब हीनभावना से मुक्त होकर आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मगौरव के साथ आगे बढ रहा है, देश इसकी बदौलत बडे फैसले कर रहा है। इसीलिए, आज एक ओर पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा, क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा मिलता है, तो साथ ही यही सम्मान मराठी भाषा को भी मिलता है। और देखिए कितना बड़ा सुभग संयोग है कि बाबा साहेब अंबेडकर से भी ये सुखद रूप से जुड़ जाता है। बौद्ध धर्म के महान अनुयायी हमारे बाबा साहब अंबेडकर की धम्म दीक्षा पाली में हुई थी और वह स्वयं उनकी मातृभाषा मराठी थी। इसी तरह, हमने बांग्ला, असमिया और प्राकृत भाषा को भी शास्त्रीय भाषा, क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा दिया है। उन्होंने कहा, भगवान बुद्ध से जुडी विरासत का संरक्षण इस अभियान की प्राथमिकता है। आप देखिए, हम भारत और नेपाल में भगवान बुद्ध से जुडे स्थानों को बुद्ध सर्किट के रूप में विकसित कर रहे हैं। कुशीनगर में इंटरनेशनल एयरपोर्ट भी शुरू किया गया है।

लुम्बिनी में भारत अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति एवं विरासत केंद्र का निर्माण हो रहा है। लुम्बिनी में ही बौद्ध विश्वविद्यालय में हमने डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर बौद्ध अध्ययन के लिए पीठ की स्थापना भी की है। बोधगया, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, सांची, सतना और रीवा जैसे कई स्थानों पर कितने ही विकास परियोजनाएं चल रही हैं। उन्होंने कहा कि तीन दिन बाद 20 अक्टूबर को मैं वाराणसी जा रहा हूं...जहां सारनाथ में हुए अनेक विकास कार्यों का लोकार्पण भी किया जाएगा। श्री मोदी ने कहा, हम नए निर्माण के साथ-साथ अपने अतीत को भी सुरक्षित कर रहे हैं। पिछले 10 वर्षों में हम 600 से ज्यादा प्राचीन धरोहरों, कलाकृतियों और अवशेषों को दुनिया के अलग-अलग देशों से वापस भारत लाए हैं, 600 से ज्यादा और इनमें से कई अवशेष बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। यानि बुद्ध की विरासत के पुनर्जागरण में, भारत अपनी संस्कृति और सभ्यता को नए सिरे से प्रस्तुत कर रहा है।

केन्द्र सरकार के नीति का पालन करें राज्य सरकार- फेडरेशन

मोदी की गारंटी कब होगी लागू : कर्मचारी हैरान

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक फेडरेशन के प्रांताध्यक्ष राजेश चटर्जी, प्रांतीय प्रमुख महामंत्री सतीश ब्यौहरे, जिला संरक्षक मुकुल साव, जिला अध्यक्ष पी.आर.झाड़े, पी.एल.साहू, जितेंद्र बघेल, बृजभान सिन्हा, वीरेंद्र रंगारी, शीरीष पांडे, हेमंत पांडे, पुष्पेंद्र साहू, उत्तम डड़सेना, द्रोण साहू, सीमा तरार, शिवानी दीवान, नीलू झाड़े, रमेश साहू, संजीव मिश्रा, संगीता ब्यौहरे, अभिषिक्ता फंदियाल, स्वाति वर्मा, सुधांशु सिंह, सोहन निषाद, अब्दुल कलाम खान, सी.एल.चंद्रवंशी, राजेंद्र देवांगन सी आर.वर्मा, हीरालाल गजभिए एवं अनिल साहू का कहना है कि अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (AICPIN) के आधार पर केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष के 1 जनवरी एवं 1 जुलाई के स्थिति में कर्मचारियों तथा पेंशनरों को महँगाई भत्ता (DA) तथा महँगाई राहत (DR) में वृद्धि किया जाता है। राज्य सरकार को भी इस नीति का पालन करना चाहिए। उन्होंने बताया कि 1 जुलाई 2019 से 1 जुलाई 2024 तक केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के समान, राज्य सरकार के कर्मचारियों एवं पेंशनरों को देय तिथि से महँगाई भत्ता (DA) तथा महँगाई राहत (DR) नहीं दिया जा रहा है। जोकि केन्द्र सरकार की नीति के अनुसार नहीं है। आखिर छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में प्रदेश के कर्मचारियों के लिए मोदी की गारंटी का कब क्रियान्वयन होगा? क्या राज्य सरकार ने मोदी की गारंटी को भुला दिया है? कर्मचारी जगत हैरान है।

उन्होंने कुछ आंकड़ों से बताया कि 1 जनवरी 23 को AICPIN 132.8 पर केन्द्र में DA/DR 42 प्रतिशत लेकिन राज्य में 33प्रतिशत ! 1 जुलाई 23 को AICPIN 139.7 पर केन्द्र में DA/DR 46 प्रतिशत लेकिन राज्य में 38 प्रतिशत! 1 जनवरी 24 को AICPIN 138.9 पर केन्द्र में DA/DR 50प्रतिशत लेकिन राज्य में 42प्रतिशत! 1जुलाई 24 को AICPIN 142.7 पर केन्द्र में DA/DR 53 प्रतिशत (अपेक्षित) लेकिन राज्य में 46प्रतिशत! जिसके कारण 1 जुलाई 2019 से 31 जुलाई 2024 तक कर्मचारियों को लाखों में आर्थिक नुकसान हुआ है। उन्होंने प्रारंभिक न्यूनतम वेतन पर हुए नुकसान का जानकारी दिया कि लेवल-1 (ग्रेड पे 1300) रू. 64740] लेवल-2 (ग्रेड पे 1400) रू. 66815] लेवल-3 (ग्रेड पे 1800) रू. 74700, लेवल-4 (ग्रेड पे 1900) रू. 80925, लेवल-5 (ग्रेड पे 2200) रू. 92960, लेवल-6 (ग्रेड पे 2400) रू. 104995, लेवल-7 (ग्रेड पे 2800) रू. 119105, लेवल-8 (ग्रेड पे 4200) रू. 146910, लेवल-9 (ग्रेड पे 4300) रू. 158115, लेवल-10 (ग्रेड पे 4400) रू. 179280, लेवल-11 (ग्रेड पे 4800) रू. 203765, लेवल-12 (ग्रेड पे 5400) अ 232815, लेवल-13 (ग्रेड पे 6600) रू. 279295, लेवल-14 (ग्रेड पे 7600) रू. 331585, लेवल-15 (ग्रेड पे 8700) रू. 491775, लेवल-16 (ग्रेड पे 8900) रू. 538255, लेवल-17 (ग्रेड पे 10000) रू. 588470 उन्होंने बताया कि राज्य सरकार द्वारा 1 अक्टूबर 2024 से DA में 4 त्न वृध्दि की घोषणा से DA 46प्रतिशत से 50 प्रतिशत हो गया है। जिसके कारण कर्मचारियों के वेतन में 4 प्रतिशत तथा HAR में 1 प्रतिशत का वृध्दि होगा।

HAR 9प्रतिशत अब 10 प्रतिशत तथा 6 प्रतिशत अब 7प्रतिशत देय होगा। DA में वृध्दि से चतुर्थ वर्ग कर्मचारी को वेतन में न्यूनतम 624 और अधिकतम 1976; तृतीय वर्ग को 780 और 2480; द्वितीय श्रेणी को 1728 और 5460 तथा प्रथम श्रेणी को 3196 और 8468 वृद्धि होगा। उन्होंने बताया कि वर्तमान मूलवेतन पर DA में 4 प्रतिशत तथा HAR में 1प्रतिशत कुल 5 प्रतिशत की वृध्दि कर्मचारियों के आंदोलन के वजह से हुआ है।

चौथना गांव में 33/11 केवी सब स्टेशन की स्वीकृति

डोंगरगढ़ (दावा)। डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले चौथना गांव में 33/11 केवी सब स्टेशन की स्वीकृति प्राप्त हुई है। जो कि लंबे समय से की गई मांग का परिणाम है। इस सब स्टेशन की मांग छत्तीसगढ़ लोधी समाज के प्रदेश कोषाध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता विष्णु लोधी द्वारा की गई थी।

श्री लोधी ने कहा, 'यह सब स्टेशन डोंगरगढ़ शहर एवं हमारे चौथना ग्रामीण क्षेत्र में हो रही बिजली कटौती एवं लो वोल्टेज की समस्या दूर करेगा। यह सब स्टेशन विकास के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इससे बिजली की उपलब्धता में सुधार होगा और क्षेत्र के निवासियों को निरंतर एवं निर्बाध बिजली

कांग्रेस नेता विष्णु लोधी का प्रयास रंग लाया, क्षेत्रवासियों को मिलेगी सुविधा

आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकेगी।

मुख्यमंत्री विद्युत अधोसंरचना विकास योजना के तहत स्वीकृति

यह परियोजना 2024-25 और 2025-26 के लिए मुख्यमंत्री विद्युत अधोसंरचना विकास योजना (एसटीआईएन) के अंतर्गत स्वीकृति की गई है। स्वीकृत आदेश पत्र क्रमांक 02-01/कार्य-दो/2602, दिनांक 10 अक्टूबर को स्वीकृत की गई है। इससे डोंगरगढ़ और आस-पास के क्षेत्रों में बिजली संकट का समाधान होगा और औद्योगिक एवं कृषि कार्यों में भी वृद्धि होगी। श्री लोधी ने छत्तीसगढ़ सरकार और छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह परियोजना क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। इस स्वीकृति के साथ चौथना गांव और इसके आस-पास के क्षेत्रों में विकास की नई संभावनाएँ उभरेंगी और आम जनता को इसका सीधा लाभ मिलेगा।

खैरागढ़ कालेज में अतिथि व्याख्यान एवं जे के वैष्णव का सम्मान

खैरागढ़ (दावा)। रानी रश्मिदेवी सिंह शासकीय महाविद्यालय खैरागढ़ एम. ए. हिन्दी विभाग में महर्षि वाल्मीकि जयंती पर भारतीय काव्यशास्त्र विषय पर अतिथि व्याख्यान आयोजित हुआ। सर्वप्रथम मां सरस्वती के तैल चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्ज्वलित कर अतिथियों का पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ. देवमाइत मिंज एसोसिएट प्रोफेसर इ क सं विश्वविद्यालय खैरागढ़ , छात्रसंघ प्रभारी जे के वैष्णव ,प्रो.यशपाल जंघेल, डॉ.मेधाविनी तुरे, डॉ.उमेंद चन्देल उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता डॉ. देवमाइत मिंज ने भारतीय काव्य शास्त्र पर रस सिद्धांत को सरलता से प्रस्तुत करते हुए विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विस्तार पूर्वक जानकारी दी। साथ ही कहा कि मनुष्य की चिंतन की प्रवृत्ति में रजो गुण तमो गुण सतो गुण के कारण ही कला एवं साहित्य के उद्भव होता है एवं काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के वर्णन को समझायी। प्रो. यशपाल जंघेल ने हिन्दी साहित्य के अध्ययन में भारतीय काव्यशास्त्र का महत्व को सर्वोपरि बताया। महाविद्यालय के वरिष्ठ ग्रंथपाल जे के वैष्णव के शहडोल जिले से स्थानांतरण पश्चात 34 वर्षों से खैरागढ़ कालेज में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान, सरल स्वभाव को रेखांकित किया।

वरिष्ठ ग्रंथपाल जे के वैष्णव ने सेवा अवधि में संगीत नगरी खैरागढ़ के संस्कारित छात्र छात्राओं का अनुशासनात्मक व्यवहार के प्रति आभार व्यक्त किया। अतिथि व्याख्यान में उपस्थित अतिथियों ने अक्टूबर 2024 में सेवानिवृत्त होने पर हिन्दी विभाग की ओर से वरिष्ठ ग्रंथपाल जे के वैष्णव को बैच लगाकर, , प्रतीक चिन्ह , पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. मेधाविनी तुरे सहित स्टाफ सदस्य एवं एम ए हिन्दी विभाग सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन डॉ उमेंद चंदेल ने आभार प्रदर्शन प्रो यशपाल जंघेल ने किया।

वेट लिफ्टिंग क्लस्टर प्रतियोगिता में अंजू सिंह ने सिल्वर मेडल किया हासिल

राजनांदगांव (दावा)। ऑल इंडिया पुलिस स्पोर्ट्स वेट लिफ्टिंग क्लस्टर 2024 का आयोजन इस वर्ष छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा 23 से 27 सितंबर तक भिलाई में आयोजित कराया गया। इस क्लस्टर में, वेटलिफ्टिंग पॉवरलिफ्टिंग एवं योगा की प्रतियोगिता में देश के 29 पुलिस टीमों ने भाग लिया।

पॉवरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ पुलिस जिला राजनांदगांव से महिला प्रधान आरक्षक अंजू सिंह ने 76किग्रा वेटग्रुप में कुल 380किग्रा वजन उठाकर सिल्वर मेडल हासिल किया। ज्ञात हो कि अंजू सिंह पिछले 3 सालों से लगातार मेडल लेकर आ रही हैं। अंजू सिंह ने अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने पति एवं छत्तीसगढ़ पुलिस पॉवरलिफ्टिंग कोच असिस्टेंट कमांडेंट राकेश सिंह को दिया जिन्होंने पारिवारिक दायित्वों के साथ साथ उन्हें इस खेल का प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन दिया,, साथ ही पुलिस महानिरीक्षक दीपक झा एवं पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के द्वारा भी उन्हें समय समय पर इस खेल हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान किया गया।

इस खेल में उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए राजनांदगांव रेंज के पुलिस महानिरीक्षक दीपक झा एवं पुलिस अधीक्षकमोहित गर्ग ने उन्हें अपने कार्यालय में सम्मानित किया गया । तथा उन्हें उनके उज्जवल भविष्य की और खेल में बेहतर प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं प्रदान की। इस अवसर पर जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुकेश ठाकुर, एवं सहायक सेनानी राकेश सिंह भी उपस्थित थे।

छ.मु.मो. मेघदास वैष्णव की जन्म दिवस पर बधाई

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के उपाध्यक्ष मेघदास वैष्णव की गृह ग्राम- वार्ड क्र. 20 पेन्ड्री में 15 अक्टूबर को भगवान की पूजा अर्चना कर, बच्चों के साथ केक काटकर धूम-धाम से जन्म दिवस मनाया गया, साथ ही बच्चों का मुँह मीठा किया गया। बधाई देने पुरनलाल हिरवानी, धमेन्द्र कुमार वैष्णव, शिवकुमार साहू, नंदकुमार नेताम, सोमनाथ साहू, जनमेजय यादव, मनोज कुमार, मनीष कुमार वैष्णव, मूलचंद खरे, अरूण गहने, पूजा यादव, प्रेमलता, अन्नपूर्णा वैष्णव, लिखिल, तनूज साहू, यशोदा वैष्णव, राहूल साहू, अंजना वैष्णव, रीमी साहू, सुष्मिता साहू, जनीता यादव, अशोक मारकण्डे, नरोत्तम साहू, तोहित खान, अशोक चितवरकर, जगदीश्वर साहू, रोहित साहू, शत्रोहन निषाद, चुरामण साहू, सुरेन्द्र साहू, अमरदास साहू, कृष्णा धनकर, दिनेश साहू, उमाशंकर धनकर, आजू राम साहू, अशोक साहू, पृथ्वी कुर्रे सहित ने छ.मु.मो. के उपाध्यक्ष मेघदास वैष्णव को जन्मदिन पर गाड़ा-गाड़ा बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

स्व. श्रीमती तेजबती साहू को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने पहुंचे कांग्रेस नेता

डोंगरगढ़(दावा)। ग्राम टेड़ेसरा में स्व. श्रीमती तेजबती साहू के दशगात्र एवं चौका आरती के अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में छत्तीसगढ़ लोधी समाज के प्रदेश कोषाध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता विष्णु लोधी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वे जिला कांग्रेस अध्यक्ष एवं साहू समाज के जिला अध्यक्ष भागवत साहू की माता थीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में सामाजिकगण एवं कांग्रेसजन उपस्थित रहे।

केशाल में नवीन धान खरीदी केन्द्र की मांग

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष से की मुलाकात

डोंगरगांव (दावा)। अंचल के ग्राम केशाल में किसानों की सुविधा को देखते हुए नवीन धान खरीदी केन्द्र खोलने की मांग की जा रही है. मिली जानकारी के अनुसार आ.जाति सेवा सहकारी समिति जोशीलमती के अंतर्गत तीन ग्राम पंचायतों की सहमति के आधार पर ग्राम केसाल, दैहान, गर्रापार को मिलाकर ग्राम केशाल में नवीन धान खरीदी केंद्र खोलने की मांग को लेकर जिला भाजपा उपाध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद डड़सेना के नेतृत्व में जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल मुलाकात की. इस दौरान प्रमुख रूप से सरपंच घनश्याम साहू, कीर्तन लाल, तिलोचन राम, उमाशंकर, रामदेव चंद्रवंशी, देवदास, विजय कुमार, भीषण दास आदि ग्रामीणजन उपस्थित रहे.

नवरात्रि पर लायंस के गरबा उत्सव ने बढ़ाया संस्कारधानी नगरी की शान

राजनांदगांव (दावा)। शारदीय नवरात्रि अवसर पर शहर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान गायत्री विद्यापीठ मैदान में नौ-दिनो तक लायंस इंटरनेशनल गरबा उत्सव-2024 की मनोहारी छटा बिखरी रही। शहर के इस गरिमामयी आयोजन में रोजाना अतिथियों का आगमन बना रहा। लायंस के गरबा उत्सव में क्षेत्र के विधायक व छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, सांसद संतोष पाण्डे, पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, नीलू शर्मा, भरत वर्मा व कलेक्टर एस पी, निगम आयुक्त से लेकर मीडिया जगत के वरिष्ठ पत्रकार/ साहित्यकार, उद्योगपति, समाजसेवी, नेता व जन प्रतिनिधियों, का प्यार स्नेह व संबल लायंस क्लब को प्राप्त हुआ, जिससे लायंस प्रतिनिधियों मे खासी प्रसन्नता रही और बड़े प्यार से लायंस के गरबा उत्सव में पधारे इन अतिथियों को मंत्र लिखित दुपट्टा व स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत -सम्मान किया गया। अपने स्वागत सम्मान से प्रसन्न अतिथियों ने सनातन संस्कृति व इसकी धार्मिक परंपराओं की अक्षुणता को बनाए रखने के लिए लायंस क्लब के शानदार गरबा उत्सव की जमकर तारीफ की और उन्हें ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

नवरात्रि के नौ-दिनों तक शहर में गरबा उत्सव की शान बने लायंस गरबा उत्सव का अंतिम दिनों तक जलवा बिखरा रहा। लायंस क्लब के इस रंगारंग गरबा उत्सव से न केवल शहर की गरिमा में वृद्धि हुई । संस्कार धानी नगरी के गरबा उत्सवी आयोजन की दूर-दूर तक भी चर्चा होती रही।

आगत अतिथियों ने की गरबा उत्सव की जमकर तारीफ, दी बधाई एवं शुभकामनाएं गरबा प्रतियोगियों के बेस्ट परफॉर्मर्स पर बांटे गए बंपर इनाम

गरबा उत्सव की रही धूम

शारदीय नवरात्र में मातारानी के नाम पर आयोजित लायंस गरबा उत्सव की धूम रही। लायंस के इस गरिमामय कार्यक्रम में आगत अतिथियों सहित लायंस क्लब के संरक्षक पद्मश्री डा.पुखराज बाफना, समाज सेवी लायन श्रीमती शारदा तिवारी, लायन अध्यक्ष तरणदीप सिंह अरोरा, ला. बृजकिशोर सुरजन, ला. राजा माखीजा ला. संतोष लोहिया एवं ला.राजकुमार शर्मा व श्रीमती कंचन शर्मा, समाजसेवी व अधिवक्ता- हलीम बख्श गाजी, श्रीमती सबीहा गाजी, चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष- शरद अग्रवाल, सचिव सूरज खंडेलवाल, ओमप्रकाश भूतड़ा, प्रशांत सोनी, पार्षद राजेश जैन राणू, सौरभ अग्रवाल आदि मातारानी की पूजा अर्चना में साथ रहे। इसके बाद रोजाना धूमधाम के साथ शुरू होते रहे गरबा उत्सव में बड़ी संख्या में गरबा नृत्य करने वालों की धूम रही। उनके द्वारा किए जा रहे मनोहारी अंग संचालन व आकर्षक वेशभूषा के साथ नृत्य के एक - एक स्टेप के प्रदर्शन ने लोगों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम में लगे चार चांद

लायंस क्लब के इस रंगारंग गरबा उत्सव में संचालन के लिए जहां सुरभि व नेहा की शानदार आवाज गूंजी वहीं इवेंट आर्गनाइजर तनय जैन के मैनेजमेंट में नौ दिनों तक शानदार गरबा उत्सव संपन्न हुआ। तनय जैन की अथक मेहनत व नौ दिनों तक की उपस्थिति ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिया इसके लिए लायंस पदाधिकारियों ने तनय की जमकर तारीफ की व धन्यवाद ज्ञापित किया। लायंस क्लब के गरबा उत्सव में भाग लिए गरबा प्रतियोगियो को जहां बड़ी मात्रा में गिफ्ट हेंपर पुरस्कार बांटे गए व सम्मानित किया गया वहीं लायंस पदाधिकारियों सहित गणमान्य जनों ने श्रेष्ठ गरबा के प्रदर्शनों से पुरस्कृत होने वाले गरबा प्रतियोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएं भी दी गई।

कवर्धा एवं पंडरिया विधानसभा क्षेत्र के विद्युत विकास कार्यो के लिए 52 करोड़ की स्वीकृति

कवर्धा/पंडरिया(दावा)। मुख्यमंत्री विद्युत अधोसंरचना विकास योजना के अन्तर्गत कबीरधाम जिलें में विद्युत विकास कार्यो के लिए 51 करोड़ 82 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई है। जिससे नगरीय एवं ग्रामीण अंचलों में नये विद्युत उपकेन्द्रों का निर्माण, नये 33 के.व्ही. एवं 11 के.व्ही. लाइनों का निर्माण, विद्यमान विद्युत उपकेन्द्रों की क्षमता आवर्धन तथा अतिरिक्त पॉवर ट्रांसफार्मरों के स्थापना के कार्यो को अतिशीघ्र पूर्ण कर सतत् विद्युत प्रदाय व्यवस्था को सुदृढ़ किया जायेगा। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी प्रबंधन द्वारा विद्युत विकास के लिए स्वीकृति इन कार्यो से लगभग 1.75 लाख किसानों एवं उपभोक्ताओं को इसका लाभ मिलेगा।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के राजनांदगांव क्षेत्र के मुख्य अभियंता शिरीश शैलेट ने बताया कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देशन एवं पॉवर कंपनी के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव के मार्गदर्शन में राजनांदगांव क्षेत्र के अन्तर्गत मुख्यमंत्री विद्युत अधोसंरचना विकास योजना के तहत कबीरधाम जिले के सेमो, दुभा, कोयलारीडीह, सरेखा, दलदली, पौनी एवं भुलवारपुर में नये 33/11 के.व्ही. विद्युत उपकेन्द्रों का निर्माण, पंडरिया, कोड़ापुरी, मोहगांव, महाराजपुर एवं राजानवागांव में विद्यमान उपकेन्द्रों में 5 एम.व्ही.ए. के अतिरिक्त पॉवर ट्रांसफार्मरों की स्थापना तथा दामापुर, कोलेगांव, कापादाह, कोदवागोदान, बोड़ला, मिनमिनिया, पांडातराई, पिपरिया, मरका, गुढ़ा, रामपुर, विरेन्द्रनगर, कवर्धा शहर, जोराताल, कोलयारी, बिरनपुर एवं सबराटोला में स्थित उपकेन्द्रों के पॉवर ट्रांसफामरों की क्षमता 3.15 एम.व्ही.ए. से 5 एम.व्ही.ए. में वृद्धि, 21 नग 33 के.व्ही. बे वीसीबी, 290 कि.मी. 33 के.व्ही. एवं 42 कि.मी. 11 के.व्ही. की नई लाईनों के कार्यो के लिए 51 करोड़ 82 लाख रूपये की स्वीकृति मिली है। विद्युत विकास के लिए स्वीकृति इन कार्यो के पूर्ण हो जाने से लगभग 1.75 लाख किसानों एवं उपभोक्ताओं एवं किसानों को निर्बाध रूप से उच्च गुणवत्ता की विद्युत आपूर्ति प्रदान की जा सकेगी।

कलेक्टर ने ली पुलिस अधिकारियों की बैठक

मोहला (दावा)। कलेक्टर एस.जयवर्धन ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में प्रशासन एवं पुलिस अधिकारियों की बैठक लेकर कानून व्यवस्था के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। दीपावली पर्व को ध्यान में रखकर सभी समाज एवं सभी वर्गों को शांतिपूर्व त्यौहार व उत्सव मनाने के लिए सभी शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने की अपील किया गया है।

सभी थाना प्रभारियों को शांति समिति की बैठक लेकर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने कहा गया है। कलेक्टर ने बैठक में अधिकारियों से कहा कि कोई भी संदिग्ध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखें। अपराधी गतिविधियों में संलिप्त व्यक्तियों पर नियमानुसार कड़ी कार्रवाई करें। उन्होंने स्पष्ट रूप से निर्देशित करते हुए कहा कि अपराधिक एवं गतिविधियों को किसी भी प्रकार का संरक्षण ना देवें। बैठक में कहा गया कि मेडिकल स्टोर्स में संयुक्त दल का गठन कर संदिग्ध दवाइयां के विक्रय पर कार्रवाई करें। नर्सिंग होम एक्ट के तहत अवैध रूप से क्लिनिक संचालन होने पर संबंधित चिकित्सक के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही करें। महाराष्ट्र सीमावर्ती जिले के सीमा क्षेत्र में सघन जांच करने के निर्देश दिए गए हैं। इस क्षेत्र में अवैध गतिविधियों के संचालन होने, नशीली दवाइयां एवं शराब के परिवहन होने पर कड़ी कार्रवाई करने की निर्देश दिए गए हैं। अवैध शराब परिवहन, गांजे सहित अन्य नशीली दवाइयां के व्यापार पर कड़ी कार्रवाई करने कहा गया है। सड़कों एवं मुख्य मार्गों पर आवारा पशुओं को हटाने के निर्देश दिए गए हैं। किसी भी घटना की गंभीरता को ध्यान में रखकर तत्काल संज्ञान में लेकर आवश्यक कार्रवाई करने निर्देशित किया गया है। त्योहारों के अवसर पर डीजे संचालक के लिए नियमानुसार अनुमति देने एवं निर्धारित ध्वनि से अधिक ध्वनि होने पर कार्रवाई करने निर्देशित किया गया है। बैठक में अपर कलेक्टर विजेंद्र सिंह पाटले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मयंक गुर्जर, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती प्रेमलता चंदेल, एसडीएम मोहला हेमेंद्र भुआर्य एसडीएम मानपुर अमित नाथ योगी, डिप्टी कलेक्टर अविनाश ठाकुर सहित पुलिस विभाग के थाना प्रभारी उपस्थित थे।

संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखें, आपराधिक व्यक्ति पर करें कड़ी कार्रवाई

दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने कलेक्ट्रेट का किया घेराव

ज्ञापन सौंप कर नियमितिकरण व लंबित वेतन भुगतान की मांग

राजनांदगांव (दावा)। अविभाजित राजनांदगांव जिले के लगभग 500 के करीब दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने अपने पूर्व तय योजना अनुसार कलेक्ट्रेट का घेराव कर लंबित वेतन सहित नियमितिकरण की मांग की।

बता दें कि आदिमजाति कल्याण विभाग में कार्यरत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने अपनी मांगों के संबंध में प्रेस वार्ता भी लिया था जिसमें अपनी मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट घेराव की बात भी कही थी। तदनुसार आदिमजाति कल्याण विभाग कर्मचारी संघ के बैनर तले दैवेभो कर्मचारियों ने दीपावली पूर्व कई माह से लंबित वेतन के भुगतान को लेकर कलेक्टर कार्यालय का घेराव किया और धरना प्रदर्शन कर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है।

छह माह से नहीं मिला वेतन

संघ के पदाधिकारी द्वारा कलेक्टर को सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि अविभाजित राजनांदगांव जिले के राजनांदगांव सहित छुरिया, डोंगरगढ़, डोंगरगांव , खैरागढ़, कवर्धा, मोहला मानपुर ब्लाक में संचालित विभाग के आश्रम छात्रावास में कार्यरत दैनिक वेतन भोगियों को पांच-छह माह से वेतन अप्राप्त है। वहीं श्रम सम्मान की राशि भी नहीं मिली है। इस संबंध में सहायक आयुक्त को पत्राचार भी किया जा चुका है। लेकिन उनकी मांगों पर कोई सुनवाई नहीं हो रही है। इसके कारण कर्मचारियों को आर्थिक संकट से गुजरना पड़ रहा है। जीवन यापन में कठिनाइयां आ रही है।

बताया गया कि आदिमजाति कल्याण विभाग मंत्रालय ने राज्य के सभी जिलों में दैनिक वेतन भोगियों के वेतन निर्धारण हेतु आवश्यक कार्रवाई कि निर्देश दिया था लेकिन राजनांदगांव जिले में अभी तक संबंधित फाइल को वित् विभाग को नहीं भेजा गया है। इससे दैवेभो कर्मचारियों को विगत कई माह से वेतन अप्राप्त है। जबकि अन्य सभी जिलों में वेतन निर्धारण की कार्रवाई संपादित की जा चुकी है। बताया गया कि मंत्रालय के आदेश के परिपालन में 21 दिसंबर 2022 को तत्कालीन सहायक आयुक्त और संघ के बीच बैठक हुई थी, जिसमें वेतन निर्धारण की फाइल पर सहमति बनी थी।

9 फरवरी 2023 में तत्कालीन जिलाधीश के समक्ष वेतन निर्धारण की फाइल को प्रस्तुत किया गया था जिसे वित्त मंत्रालय से होते हुए छानबीन समिति को प्रेषित किया जाना था। लेकिन वह आज तक नहीं हो पाया है जिससे दैवेभो कर्मचारियों का अब तक का वेतन रुका हुआ है। चूंकि सबसे बड़ा त्योहार दीपावली पर्व सामने है। ऐसे समय में दैवेभो कर्मचारियों के हाथों में तनख्वाह का नहीं होना विषम परिस्थितियों को दर्शाता है। गत दिनों ली गई प्रेस वार्ता में दैवेभो कर्मचारियों द्वारा उनकी मांगे पूरी नहीं होने पर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने की बात भी कही गई है। अब देखना यह है कि स्थानीय प्रशासन के सहयोग से कार्रवाई आगे बढ़ने पर दैवेभो के कर्मचारियों को लंबित वेतन प्राप्त होता है या नहीं।

कस्टम मिलिंग : चावल जमा नहीं कराया, राइस मिल में 1000 क्विंटल से ज्यादा धान और चावल जब्त

रायपुर (दावा)। रायपुर जिले में कस्टम मिलिंग का चावल समय पर नागरिक आपूर्ति निगम में जमा नहीं करने वाले मिलरों के विरुद्ध खाद्य विभाग ने कार्रवाई करनी शुरू कर दी है। इसके तहत बुधवार को विभाग ने आरंग क्षेत्र में कृष्णा फूड्स राइस मिल में दबिश देकर वहां से एक हजार क्विंटल से अधिक धान एवं 377 क्विंटल चावल को जब्ती बनाया है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि कलेक्टर गौरव सिंह ने कस्टम मिलिंग का समय पर चावल जमा नहीं करने वाले मिलरों के विरुद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इस निर्देश के परिपालन में समय पर चावल जमा नहीं करने वाले मिलरों पर कार्रवाई की जाएगी।

कस्टम मिलिंग का चावल जमा नहीं करने वाले मिलरों की सूची तैयार की गई है। इस सूची के अनुसार राइस मिलरों को समय सीमा में शत-प्रतिशत कस्टम मिलिंग का चावल जमा करने के निर्देश दिए गए हैं। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि कलेक्टर की मौजूदगी में राइस मिलरों की बैठक हुई। इस बैठक में राइस मिलरों को समय सीमा के भीतर चावल जमा करने के निर्देश दिए गए हैं। बैठक में गोयल हर्ष, कृष्णा फूड्स, रानूलाल गांधी राईस मिल, गुरुनानक राईस इंडस्ट्रीज सहित अन्य कई मिलरों के संचालक नहीं पहुंचे थे। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि कलेक्टर ने अनुपस्थित रहने वाले राइस मिलरों की जांच कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत आगामी दिनों में इन मिलरों की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

बसंतपुर पुलिस ने लूट के आरोपियों को दो दिन के अंदर धर दबोचा

राजनांदगांव (दावा)। बसंतपुर पुलिस ने अपने थाने क्षेत्र में हुई लूट की घटना के आरोपियों को दो दिन के भीतर धर दबोचा है। पुलिस ने इन आरोपियों के पास से लूट में उपयोग किए जाने वाले मोटर साइकल व नगदी रकम 5800 रुपए की बरामदगी की है।

आरोपियों से घटना में प्रयुक्त मोटर सायकल व लूटी गई रकम 5800 रूपये किया बरामद

आरोपियों के नाम चंद्रशेखर सिन्हा उर्फ शेखर पिता स्व0 चैतराम सिन्हा उम्र 30 वर्ष निवासी पेंड्री अटल आवास ब्लॉक नं0 20 थाना लालबाग, विक्की रिजोरिया पिता अल्बर्ट रिजोरिया उम्र 31 वर्ष निवासी पेंड्री अटल आवास ब्लॉक नं0 12 व रितेश यादव पिता स्व0 अखिलेश यादव उम्र 24 वर्ष निवासी अटल आवास, पेंड्री ब्लॉक नं0 55 थाना लालबाग बताया जाता है।

घटना के संबंध में जानकारी देते हुए बसंतपुर थाना प्रभारी सत्यनारायण देवांगन ने बताया कि प्रार्थी नितेश सोनी पिता दिनेश सोनी उम्र 27 साल निवासी कोठार पारा, वार्ड नं0 48, नंदई चौक,ने थाना उपस्थित होकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि 11 अक्टूबर को वह अपने साथी देवा सोनकर के साथ पेण्ड्री ढाबा से खाना खाकर रात्रि में मोटर सायकल से आ रहा था । रास्ते में देवा सोनकर की मोटर सायकल का पेट्रोल खत्म हो जाने से मोहारा भठठी के पास से वे गाडी को टोचन मारकर घर जा रहे थे मोहारा बायपास के नीचे पहुचे थे तभी करीबन रात्रि करीबन 12/40 बजे दो मोटर सायकल में चन्द्रशेखर सिन्हा, विक्की रिजोरिया एवं रितेश यादव आये एवं प्रार्थी को पकडकर जेब मे रखे नगदी रकम 5800 रू. को छिन लिए कि रिपोर्ट पर थाना बसंतपुर में आरोपियों के खिलाफ अपराध क्रमांक 461/2024 धारा 311 बीएनएस अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया । मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन एवं अति0 पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक के मार्गदर्शन में शहर में असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कार्यवाही हेतु टीम गठित की गई।

गठित टीम के द्वारा मुखबिर सूचना पर आरोपी चंद्रशेखर सिन्हा, विक्की रिजोरिया व रितेश यादव से पुछताछ कर मेमोरंडम कथन के आधार पर लुट में प्रयुक्त मोटर सायकल रायल इनबिल्ड के.एल 23-एन-6492 एवं एवं नगदी रकम 5800 रूपये को बरामद कर तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर ज्यु. रिमांड पर भेजा जा चुका है । उपरोक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी बसंतपुर श्री देवांगन सहित उप निरीक्षक प्रमोद श्रीवास्तव एवं समस्त थाना स्टाफ की भूमिका सराहनीय रही ।

आईजी, कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक ने कमला कालेज में बनाये गए साईबर लेन का किया अवलोकन

राजनांदगांव (दावा)। जिले में 5 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक साइबर जागरूकता पखवाड़ा नवा बिहान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में आईजी दीपक झा, कलेक्टर संजय अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग ने शासकीय कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव में बनाये गए साईबर लेन का अवलोकन किया एवं सेल्फी जोन में मैं हूं साईबर जागरूक राजनांदगांव पुलिस में सभी ने सेल्फी ली।

उल्लेखनीय है कि पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन में नवा बिहान साईबर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत मीडिया, साईबर क्राईम के नये तरीकों को जानने और उससे बचने के लिए उपाय बताये जा रहे हैं। इसके अंतर्गत सोशल मीडिया, फेसबुक, ट्विटर एक्स, इंस्टाग्राम के माध्यम से जनसामान्य को जागरूक किया जा रहा है। राजनांदगांव पुलिस द्वारा नारकोटिक्स, ड्रग्स, नसा के खिलाफ कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही जनसामान्य को साईबर फ्रॉड, ठगी एवं धोखाधड़ी से बचने के लिए लोगों को सजग किया जा रहा है। इसके लिए क्यूआर कोड के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी बताई जा रही है। साईबर वालिंटियर्स बच्चे नुक्कड़ नाटक के माध्यम से साईबर फ्रॉड से बचने के उपाय बता रहे हैं। साइबर जागरूकता पखवाड़ा नवा बिहान माध्यम से नागरिकों को साइबर अपराधों से बचाव के उपायों के संबंध में जानकारी दी जा रही है। रिंगटोन के माध्यम से शासकीय नंबरों से लोगों को सचेत किया जा रहा है एवं ओटीपी शेयर नहीं करने, सोशल मीडिया पर अनजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करने कहा जा रहा है। अभी तक 1 लाख लोगों को इस मुहिम में जोड़ा गया है। साथ ही

० सेल्फी जोन - मैं हूं साईबर जागरूक राजनांदगांव पुलिस में सेल्फी ले रहे नागरिक
० साईबर क्राईम के तरीकों को जानने और उससे बचाव के लिए चलाया जा रहा साइबर जागरूकता पखवाड़ा नवा बिहान

सोशल मीडिया पर निजी जानकारी साझा नहीं करने, प्राइवेसी सेटिंग को सुरक्षित रखने, अनजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करने और किसी भी संदिग्ध ऑफर से बचने कहा जा रहा है। साइबर अपराध का शिकार होने पर तुरंत पुलिस एवं हेल्पलाईन नंबर 1930 पर संपर्क करने कहा जा रहा है।

साईबर सेल टीआई जितेन्द्र वर्मा ने कहा कि राजनांदगांव पुलिस द्वारा बताया जा रहा है कि अनजान व्यक्ति के कहने पर किसी भी थर्ड पार्टी एप्लीकेशन को इंस्टाल ना करें। अनजान नम्बर से आए लिंक को कभी क्लिक ना करें, आपका फोन हैक हो सकता है। रजिस्ट्रेशन अथवा अकाउंट टेस्ट करने के नाम से 10 रूपए जैसी राशि के ट्रांसफर की लिंक के माध्यम से कोई लेन-देन ना करें। ओएलएक्स जैसी वेबसाईट पर आर्मी मैन बनकर सस्ते में सामान बेचने का झांसा देने वाले से सावधान रहें। ध्यान रखें क्यू कोड पर स्कैन केवल पेमेंट करने के लिए होता है, पमेंट मंगाने के लिए नहीं। यूपीआई से पेमेंट रिसीव करते वक्त पिन एंटर ना करें। गूगल में कस्टमर केयर का नंबर सर्च करते वक्त सावधानी बरतें। कस्टमर केयर नंबर के लिए हमेशा संबंधित कंपनी के बेबसाईट पर जाए। सोशल मीडिया एकाउंट्स पर टू स्टेप वेरिफिकेशन का उपयोग करें। अनावश्यक निजी जानकारी पब्लिक ना करें। प्राइवेसी सेटिंग का उपयोग कर प्रोफाइल लॉक रखें। सोशल मीडिया पर साम्प्रदायिक सोहार्द्र बिगाडने वाली खबरों से बचे व बिना जांचे फॉरवर्ड न करें। सोशल साईट में पार्ट टाईम नौकरी, घर बैठके काम, पैन्सील पैकिंग जैसे झांसे में ना आए। किसी भी व्हाट्सअप या टेलीग्राम ग्रुप से जुड़कर शेयर मार्केट में निवेश करने से बचे। किसी के कहने पर कॉल फॉरवर्ड, शॉर्ट कोड जैसे +401-912191 की अपने मोबाईल में डायल ना करें।

करवा चौथ को लेकर शहर का सजा बाजार

पूजा सामग्रियों व वस्त्राभूषणों की बढ़ी मांग, बाजार में चहल- पहल बढ़ने से बिखरी रौनक

राजनांदगांव (दावा)। नवरात्रि, शरद पूर्णिमा मनाने के बाद रविवार 20 अक्टूबर को सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा अपने पति की दीर्घायु हेतु मनाए जाने वाले करवा चौथ पर्व धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। इसके लिए महिलाओं द्वारा खासी तैयारियां की जा रही है। इधर करवा चौथ को लेकर बाजार भी पूरी तरह से गया है। जयस्तंभ चौक रोड कुम्हार पसरा से लेकर मुख्य मार्केट गोलबाजार, शनि मंदिर रोड व गुड़ाखू लाइन सहित अन्य जगहों पर करवा चौथ से संबंधित सामग्रियों की दुकानें सज गई हैं। इससे बाजार में चहल-पहल बढ़ गई है और महिलाएं अथवा उनके घर- परिवार वाले करवा चौथ से संबंधित पूजा सामग्रियों व अन्य चीजों की खरीदारी शुरू कर दी है। वहीं बाजार के चौक-चौराहों में सजी दुकानों से महिलाओं स्वयं भी खरीदारी करती नजर आ रही है।

पूजा सामग्रियों की मांग बढ़ी

बता दें कि करवा चौथ के पूजा सामग्रियों को लेकर जयस्तंभ चौक आसपास सजी दुकानों में महिलाओं की ज्यादा भीड़ नजर आ रही है। यहां जूनी हटरी तिराहे से लेकर कुम्हार पसरा, महावीर चौक तक पूजा सामग्रियों की सजी दुकानों में करवा चौथ पूजन के दौरान उपयोग में आने वाले मिट्टी के रंग- बिरंगी गड़ुए (करवा), धातु के बने आकर्षक छलनी आदि सहित महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन के सामान धड़ल्ले से बिक रहे हैं।

जयस्तंभ चौक पर पूजा सामग्रियों की दुकानें लगाए एक महिला व्यवसायी ने चटकदार लाल- पीले व भगवा रंग में आकर्षक ढंग से सजे मिट्टी के गड़ुए (करवा) की कीमत 70 रुपए नगद से लेकर 100 रुपए तक बताई। इसी तरह धातु से बने आकर्षक छलनियों की कीमत 100 रुपए से लेकर 120 रुपए तक व आकर्षक ढंग से सजी पूजा थालियां भी दो से ढाई सौ रुपए में बेचा जाना बताया। करीने से सजे इन दुकानों मे पूजा के दौरान उपयोग आने वाले कुशा, मौली धागा, सहित महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएं नेलपालिश, आलता, टिकुली, बिन्दी, मेहंदी, महावर, चूनरी, फुंदरी आदि धड़ल्ले से बिक रही हैं।

वस्त्राभूषणों की सजी दुकानें

बता दें कि करवा चौथ के अवसर पर अपने पति की दीर्घायु हेतु 24 घंटे की कठिन व निर्जला उपवास रहने वाली सुहागिन महिलाएं उपवास तोड़ने के वक्त सोलह श्रृंगार से युक्त होती है इससे उनका सौंदर्य और भी निखर उठता है। महिलाओं के इस साज-श्रृंगार के लिए बाजार में नए-नए वस्त्राभूषणों की मांग बढ़ गई है। कपड़ा दुकान से लेकर सर्राफा दुकान व सौंदर्य प्रसाधन की दुकानों में महिलाओं का तांता लग रहा है।

करवा चौथ पर्व को देखते हुए इस बार व्यापारियों ने भी महिलाओं को पसंद आने वाली अधिक से अधिक व्हेरायटियों में साड़ियां मंगाई है। जिसकी अधिक से अधिक खरीदारी हो रही है। बाजार में सोने-चांदी के आभूषणों के दाम में तेजी आने के बाद भी गहने अधिक से अधिक खरीदें जा रहे हैं। करवा चौथ के दिन महिलाएं श्रृंगार युक्त होकर रात्रि में चांद को छलनी से निहारने व अपने पति का मुखड़ा छलनी से देखें जाने तथा पति के हाथों से मिट्टी के बने गड़ुए (करवा) से पानी पिएं जाने के कारण बाजार में इन चीजों की मांग बढ़ी हुई है और सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएं सहित इन चीजों की जमकर खरीदी हो रही है इससे शहर का बाजार गुलजार बना हुआ है।

शंकरपुर में उदय सेवा समाज ने मनाई शरद पूर्णिमा

राजनांदगांव (दावा)। वार्ड नं 9 शंकरपुर में उदय सेवा समाज द्वारा शरद पूर्णिमा का पर्व धूमधाम के साथ मनाया गया। सेवा समाज के उस्ताद अशोक कोर्राम ने अपने शागिर्दों के साथ ज्ञान की देवी मां सरस्वती शारदे की पूजा की और वार्डवासियों के सुखद जीवन की कामना करते हुए खीर प्रसादी का वितरण किया गया।

उस्ताद कोर्राम ने बताया कि शरद पूर्णिमा को चंद्रमा के उजाले में बनाया गया खीर प्रसादी अमृत तुल्य होता है। जिसके सेवन से अनेक व्याधियों का नाश होता है। उन्होंने शरद पूर्णिमा की रात की महिमा की भी बात बताई। प्रसादी वितरण किया गया जिसमें प्रमुखतः गंगाराम पांडे, दिनेश देवांगन, नरोत्तम यादव, गणेश श्रीवास्तव, चुन्नी साहू, कपिल साहू, रेखा लाल वर्मा, नाथूराम देवांगन आदि शामिल थे।

मां पाताल भैरवी सिद्धपीठ में शरद पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने ग्रहण की जड़ी बुटीयुक्त खीर प्रसाद

लोक कलामंच स्वरधारा की मनमोहक प्रस्तुति से दर्शक मंत्रमुग्ध, रातभर माता के दरबार में लगा रहा श्रद्धालुओं का मेला

राजनांदगांव (दावा)। मानव सेवा व जनकल्याण के लिए अंचल सहित देशभर में पहचान बना चुकी बर्फानी सेवाश्रम समिति द्वारा अपने आशीर्वादक राष्ट्रीय संत श्री श्री 1011 योगाधिराज ब्रम्हर्षि बर्फानी दादा के आशीर्वाद से संस्था द्वारा संचालित गर्भगृह में विराजमान मां पाताल भैरवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी दश महाविद्या द्वादश ज्योर्तिलिंग शिव शक्ति सिद्धपीठ बर्फानी आश्रम परिसर में शरद पूर्णिमा 16 अक्टूबर बुधवार की रात्रि में हजारों स्वांस, दमा व अस्थमा पीड़ितों को जड़ी बुटीयुक्त खीर प्रसाद का निःशुल्क वितरण किया गया। जिसमें अंचल सहित देशभर से हजारों की संख्या में पीड़ित यहां पहुंचे थे। इसके अलावा लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने की दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध लोक कलामंच स्वरधारा ने अपनी प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया।

पौराणिक मान्यताओं का अनुशरण

संस्था के सचिव गणेश प्रसाद शर्मा 'गन्नू' ने बताया कि बर्फानी आश्रम स्थित मां पाताल भैरवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी दश महाविद्या द्वादश ज्योर्तिलिंग शिव शक्ति सिद्धपीठ में संस्था द्वारा जनकल्याण के तहत स्वांस, दमा व अस्थमा पीड़ितों को पिछले 28 वर्षों से दुर्लभ जड़ी बुटियां एकत्रित कर पौराणिक मान्यताओं अनुसार जड़ी बुटी युक्त खीर प्रसादी तैयार कर स्वांस, दमा व अस्थमा पीड़ितों को ब्रम्हमुहूर्त में वितरीत की जाती है। इस वर्ष भी संस्था द्वारा कल रात्रि 16 अक्टूबर बुधवार को अश्विन शुक्ल शरद पूर्णिमा पर खीर प्रसाद तैयार करवाया गया था। जिसे शरद पूर्णिमा की रात्रि 16 कलाओं से युक्त चन्द्रमा की चन्द्रकला से प्राप्त होने वाली अमृतरूपी बुंदों से प्रसाद तैयार कर श्रद्धालुओं को प्रातः ब्रम्हमुहुर्त पर मां पाताल भैरवी सहित परमपुज्य गुरुदेव बर्फानी दादा जी की पूजन आरती पश्चात निःशुल्क वितरित किया गया, जो सूर्योदय पश्चात तक चलता रहा।

अंचल सहित पड़ोसी राज्यों से भी आए थे पीड़ित

इस बार भी छत्तीसगढ़ सहित पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड सहित देश के अन्य हिस्सों से भी पीड़ितजन जड़ी बुटीयुक्त प्रसाद ग्रहण करने संध्या से ही पहुंचे थे। इसके लिए संस्था ने व्यापक पैमाने पर तैयारी की थी। जिससे पीड़ितों को प्रसाद वितरण में कठिनाईयों का सामना करना नहीं पड़ा और आयोजन व्यवस्थित रूप से संपन्न हो सके। संध्या से ही हलवाईयों द्वारा खीर प्रसाद तैयार करना प्रारंभ कर दिया गया था। जिसे मध्य रात्रि के पूर्व खुले आसमान के नीचे रखा गया और ब्रम्हमुहूर्त पर माता को प्रसाद अर्पित कर पीड़ितों को वितरीत करने का क्रम प्रारंभ हुआ। जो सूर्योदय पश्चात तक चलता रहा। संस्था द्वारा 30 हजार से भी अधिक स्वांस, दमा व अस्थमा पीड़ितों को जडी बुटी युक्त खीर प्रसाद का वितरण किया गया।

लोक कलामंच स्वरधारा ने बांधा समां

लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने की दृष्टिकोण से इस वर्ष भी मनोरंजन के भरपूर रहने वाली एवं कर्मा, ददरिया, सुआ, पंथी के साथ ही हास्य व्यंग्य के प्रहसन प्रस्तुत करने वाली छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोककला संस्था स्वरधारा द्वारा संचालक विष्णु कश्यप के निर्देशन में एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर रात भर दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते रहे। कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति के तहत छत्तीसगढ़ महतारी व राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत भारत माता के ऊपर शानदार प्रस्तुति से लोगों को अपने ओर आकर्षिक किया।

प्रशासन, पुलिस व निगम का भी मिला सहयोग

संस्था द्वारा सन 1997 से प्रारंभ किए गए मानव सेवा एवं जनकल्याण के तहत शरद पूर्णिमा पर आयोजित आयोजन में जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन व नगर निगम से भी सहयोग प्राप्त हुआ। पुलिस विभाग के द्वारा रात्रि भर सुरक्षा की दृष्टिकोण से विशेष दल लगाकर आयोजन स्थल व मार्ग पर विशेष निगरानी भी रखी गई थी।

आयोजन को इनका भी मिला सहयोग

इस बार आयोजित होने वाले शरद पूर्णिमा आयोजन को लेकर संस्था के अध्यक्ष राजेश मारु, उपाध्यक्ष दीपक जोशी, कोषाध्यक्ष नीलम जैन, महंत गोविंद दास, महेन्द्र लुनिया, कमलेश सिमनकर, संतोष खंडेलवाल, सूरज जोशी, आलोक जोशी, लीलाधर सिंह, बलविंदर सिंह भाटिया, कुलबीर छाबड़ा, संजय खंडेलवाल, योगेन्द्र पांडे, मनीष परमार, कुमार स्वामी, संतोष साहू, शुभम शर्मा, मौलेश तिवारी, विवेक रंजन सोनी, सत्यम शर्मा, दीपक यादव (महावीर हलवाई) का निरंतर सहयोग प्राप्त होते रहा। इसके अलावा आयोजन को श्रद्धालुओं व पीड़ितजनों ने भी स्वस्फूर्त सहयोग प्रदान करते हुए शांतिपूर्वक ढंग से सफल बनाया।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक कुमार बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देवबाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक कुमार बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631 e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com